मानवी

वर्ष 2 अंक 4

मानवी त्रैमासिक साहित्यिक ई पत्रिका

अक्टूबर - दिसम्बर 2022

मटर का कीड़ा

– कविता सिंह

ठंठ बहुत थी– इतनी
जितनी कि हो सकती थी दिसम्बर के अंत में
यहाँ तक कि मटर की फलियों में भी
ठंड की दहशत बढ़ती जा रही थी

ठंड के दिनों में
मटर भी हो सकता है
किसी का एक गरम घर

आज–
छीलते हुये छीमियाँ
मटर का एकमात्र देशज
छिटक कर अलगा गया अपनी दुनिया से

मैंने देखा वह
पृथ्वी जैसी गोल मटर के दाने से लिपटा
खोज रहा है अपनी खोह

उसे देखकर
जैसे-जैसे बढने लगती है दया
वैसे-वैसे छिलने लगती है मेरी आत्मा भी... ।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और [2][राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई0 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं** ।

---

[1] संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "**प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य**" के स्थान पर प्रतिस्थापित ।

[2] संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित ।

मानवी

प्रधान सम्पादक -कविता सिंह

सम्पादक -राजेश कुमार सिंह

****

परामर्शमण्डल -डॉ राधेश्याम तिवारी

****

आवरण -चित्र -तेजस सिंह

****

manvipatrika@gmail.com

http://www.manvipatrika.co.in/

****

संरक्षक

श्रीमती जानकी किशोरी देवी एवं

श्री राम चन्द्र सिंह

****

पता -कार्यकारी -बी -701 ,स्वाति फ्लोरेंस ,

निकट सोबो सेंटर ,साउथ बोपल ,अहमदाबाद

-380058

स्थायी - 274/x ,शक्ति णगर

कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

मोब -9833775798

मानवी पत्रिका में प्रकाशित लेख /काव्य आदि रचनकारों के अपने विचार है ,जिनसे प्रकाशक/ संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गोरखपुर रहेगा। रचना की मौलिकता का दायित्व रचनाकार का है

पत्रिका से जुड़े सभी पद अवैतनिक है।

पत्रिका आप सभी मित्रों से रचनात्मक सहयोग के अलावा अर्थ-सहयोग का भी निवेदन करती है, यह स्वैच्छिक है आप पेटिएम नं -9833775798 पर स्वेच्छा से यथासंभव धनराशि सहयोग के रुप में अंतरित कर सकते हैं।

वर्ष– 2 ,अंक– ४ (अक्तूबर- दिसम्बर , 2022)

त्रैमासिक ई -पत्रिका

इस अंक में....

5 - संपादक की कलम से

7 - काव्य धरोहर

लेख /आलेख /संस्मरण -

8- कृष्ण कुमार यादव
11- डॉ.जियाउर रहमान जाफ़री
14- डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
18- चंद्रमौलि चंद्रकांत
20- गोपेंद्र कु सिन्हा गौतम
22- गोवर्धन दास बिन्नाणी' राजा बाबू'
23- बलविन्दर बालम गुरदासपुर
25- सलिल सरोज
28- डा. रश्मि तिवारी

हास्य व्यंग्य -

30- ऊषा कुशवाहा

कहानी -

33-वाजिद हुसैन सिद्दीक़ी
35- दीपक कुमार
37- संजय मृदुल
39- एम निर्मला कुमारी

लघुकथा -

24- सुनीता मिश्रा
32- मनोज कुमार मिश्रा
38- सपना चन्द्रा
41- दिवा शंकर सारस्वत' प्रशांत '
42- भगवती सक्सेना गौड़
42- रमेश कुमार संतोष
43- डॉ० अशोक
43- वीरेन्द्र बहादुर सिंह
44- नीना सिन्हा
45- सरोज बाला
62- सुनीता मिश्रा

काव्य /हाइकु /ग़ज़ल

२-कविता सिंह
10- बी.एल.माली 'अशांत'
13- गिरेन्द्रसिंह भदौरिया" प्राण"
17- मनोज शाह' मानस'
17- अमरेन्द्र
19- विजय कनौजिया
27- बृज राज किशोर" राहगीर"
31- मोहन कुमार
32- मनोज कुमार मिश्रा
36- नलिन खोईवाल
40- श्रीवास्तव श्याम सुन्दर 'कोमल'
41- कवि पृथ्वीसिंह बैनीवाल
46- मनोज जैन मधुर
47- डॉo लक्ष्मीकांत शर्मा
47- डॉ०कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
47- बंसल विनय
48- मईनुदीन कोहरी" नाचीज़ बीकानेरी"
48- रमेश मनोहरा
49- रंजना लता
49- सुधा गोयल
49- कुमकुम कुमारी" काव्याकृति"
50- नवीन माथुर पंचोली
51- प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे
51- बिनोद बेगाना
52- मनीष पाठक
52- कनक किशोर
52- राजपाल सिंह गुलिया
53- निरुपमा सिंह
53- दलजीत कौर
54- आध्या रेनू
54- प्रियदर्शिनी अनुराधा
54- सुमति श्रीवास्तव
55- विज्ञान व्रत
55- नेतलाल यादव
56- डॉ राजीव गुप्ता
56- सोनिया सैनी
57- डॉ उमेश चंद्र शुक्ल
66- वाई.वेद प्रकाश

पुस्तक समीक्षा -

58- विजय कुमार तिवारी
63-राजेश सिंह

बाल– कहानी/कविता

67-प्रिया देवांगन" प्रियू"
68-डॉ० कुसुम रानी नैथानी
70-तेजसी सिंह

71-चिठी-पत्री

कुछ मेरी भी....

"जहां न पहुचें रवि , वहाँ पहुचे रवि" कवि की कल्पनाएँ असीमित हैं जहां तक आमजन सोच नहीं पते कवि उससे भी आगे की दुनिया रच डालते है। लेकिन कवि की कलपनों को हम-आप सिर्फ कल्पना में ही देख पाते है । इधर कुछ वर्षों से टेक्नॉलजी एक नई दिशा की तरफ अग्रसर है। जिसे काल्पनिक दुनिया के बजाय आभासी दुनिया कहा जा रह है ,जहां कल्पना में नहीं बल्कि हकीकत में चीजें है इसका आभास होगा। आप अपने मित्र से ऐसे ही बात करेंगे जैसे आप एक दूसरे के सामने हो, परंतु हकीकत में आपका मित्र आपसे बहुत दूर किसी और जगह पर बैठ आपसे बातें कर रहा होगा, और यह दुनिया होगी **मेटावर्स** की दुनिया।

"जहां न पहुचे कवि , वहाँ पहुचें टेक्नॉलजी"

टेक्नॉलजी बहुत तेजी से परिवर्तित हो रही है, और उतनी ही तेजी से हमारी रहने सोचने के तौर तरीके में भी परिवर्तन हो रहा है। पहले तार वाला टेलीफोन आया फिर बेतार वाला सेलफोन आ गया। फोन में भी प्रतिदिन नए नए फीचर्स आ रहें हैं। फेसबुक ने सोशल मीडिया की अवधारणा को जन्म दिया और हमारे दैनिक और सामाजिक दुनिया में अपनी पैठ बनाने में सफल रहा । इस सोशल मीडिया ने समाज में एक नई संभावनाओं एवं एक नई बहस को जन्म दिया है । जहां इस आभासी दुनिया से लोगों ने अपनी अकेलेपन को दूर किया है , वहीं इससे होने वाले खतरों से भी आगाह किया है। और अब एक पायदान आगे इसके परिवर्धित एवं मूल्यावर्धित आगामी संस्करण मेटावर्स की आभासी दुनिया की ओर संकेत दिया है।

मेटावर्स एक ऐसी दुनिया है जिसका कोई अंत नहीं है. यानि यह अंतहीन, सीमाओं से परे आभासी दुनिया होगी जो हम इंसानों को असल दुनिया के जैसा जीवन वर्चुएल दुनिया में जीने का मौका देगी. वर्चुएल रियलिटी, ऑग्मेंटेड रियलिटी, मशीन लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सोशल मीडिया, गेमिंग, सोशल लाइफ, दैनिक जीवन का एक मिश्रण है मेटावर्स।

- मेटावर्स शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हैMeta+Verse, यहाँ Meta शब्द का तात्पर्य' **परे**) 'Beyond) से है और Verse शब्द Universe से लिया गया है. जिसका तात्पर्य' **ब्रह्मांड**) 'Universe) .से है। इस तरह से मेटावर्स का हिंदी में अर्थ हुआ' **ब्रह्मांड से परे** '(Beyond Universe).

एक अमेरिकी साइंस फिक्शन उपन्यासकार नील स्टीफनसन ने अपने उपन्यास **"स्नो क्रैश"** में मेटावर्स शब्द का पहली बार उपयोग किया था, जो 1992 में प्रकाशित हुआ था , इस उपन्यास में उन्होंने दर्शाया था कि कैसे लोग अपनी असल दुनिया से वर्चुअल दुनिया में प्रवेश करते है,इसके साथ ही इस उपन्यास में साइंस के अलावा क्रिप्टोकरेंसी शब्द का भी जिक्र किया गया है,

विश्व की सबसे बड़ी सोशल मीडिया फेसबुक कंपनी के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग, एक ऐसा प्लेटफार्म विकसित कर रहें है, जो कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को एडवांस लेवल में इस्तेमाल करने का अवसर प्रदान करेगा, जहां पर कोई वस्तु नहीं होगी और ना ही हकीकत जैसी कोई चीज होगी लेकिन वो सभी चीजें रियल जैसी होंगी हम सब उसे ऐसा महसूस करेंगे जैसे कि हम अपनी असल जिंदगी में महसूस करते हैं।

मेटावर्स के जरिए हम वर्चुअल(आभासी) दुनिया में भी ठीक वैसी ही जिंदगी जी पाएंगे जिसको हम-आप असली दुनिया में जी रहें हैं. मेटावर्स एक तरह का आभासी समूह होगा जैसा की फेस्बूक है , इंस्टाग्राम है व्हाट्सप्प है , जिसके जरिए हम विश्व भर में लोगों से मिल सकते है, साथ साथ खेल सकते है, और एक साथ काम कर सकते है, समारोह आयोजित कर सकते है। सम्मेलन का आयोजन भी कर सकते हैं। मेटावर्स एक प्रकार की मूल्यावर्धित उच्चतर तकनीक है जो आभासी दुनिया और असल दुनिया के बीच का फर्क बहुत कम कर देगी। हम सभी ने हलीवूड की मूवी "अवतार" जरूर देखी होगी। हालीवुड मूवी "अवतार" की तरह मेटावर्स प्लेटफॉर्म पर हमारा खुद का एक अवतार होगा , जो बिल्कुल हमारे ट्रू कॉपी जैसा ही होगा । जिसकी सहायता से हम दूसरें लोगों द्वारा बनाए गए अवतार से बातचीत कर सकेंगे ,अपने विचारों का सम्प्रेषण कर सकेंगे।इसका अनुभव ऐसा ही होगा कि जैसे हम एक दुसरें के सन्मुख ही बैठें हो। मेटावर्स का रूप तो वर्चुअल होगा लेकिन ऐसा प्रतीत होगा जैसे मानो हम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर नहीं असल दुनिया में एक साथ एक जगह पर बैठकर गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं।

सम्मान समारोह हो या पुस्तक का विमोचन सभी कुछ मेटावर्स पर ही होगा। सभी सबंधित लोग अपने कान पर एक हेड्फोननुमा चीज पहनेंगे और पहुँच जाएंगे आभासी मंच पर, जहां सबकुछ ठीक वैसे ही होंगे जैसे की सच में घटित होता है। दशक भी ठीक सामने बैठकर वैसे ही प्रश्न करेंगे जैसे आजकल करते है और जबाब भी वैसे ही जैसे सामने बैठकर दिया जाता है। अर्थात किसी को कहीं आने जाने की जरूरत नहीं होगी। सब मेटावर्स की आभासी दुनिया में मिलकर हो जाएगा। इस नई उनत्त टेक्नॉलजी से कवि सम्मेलन भी आभासी दुनिया अर्थात मेटावर्स में ही सम्पन्न होगा।जहां एक तरफ आभासी मंच पर कविगन विराजमान होंगे और वही दूसरी तरफ दशक दीर्घा में श्रोतागण।

क्या मेटावर्स से कोई खतरा भी हो सकता है,मेटावर्स की आभासी दुनिया में सबसे बड़ा खतरा होगा निजता का खतरा, निजी एवं व्यक्तिगत जानकारियों के लीक होने का खतरा। जिस प्रकार से आज सोशल मीडिया हमारें आंतरिक जीवन में सेंध लगा रहा है ,हमारें व्यक्तिगत जीवन में ताक-झांक कर रहा है। उसको लेकर लोगों का चिंतित होना स्वाभाविक है। हर व्यक्ति अपनी प्राइवेसी को लेकर चिंतित रहता है, और अपनी निजता को सुरक्षित रखना चाहता है कोई भी व्यक्ति नहीं चाहेगा की कोई दूसरा व्यक्ति उसकी निजता में दखलंदाजी करें।

मेटावर्स अब सिर्फ अवधारणा तक ही सीमित नहीं बल्कि अनलाइन खेलों में इसका प्रयोग दिखने भी लगा है। अब कब तक यह अपनी पूर्ण अवस्था में आएगा ,इसका असली स्वरूप कैसा होगा ,हमारे जीवन को कैसे और किस हद्द तक प्रभावित करेगा। कुल-मिलाजुला-कर आने वाला भविष्य कैसा होंगे यह तो भविष्य ही बताएगा।

आइए हम सब संविधान दिवस यानि 26 नवंबर को याद करते हुए प्रतिज्ञा लेते है की संविधान का पालन करते हुए देश को विकास के पथ पर ले जाने एवं सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक समानता और न्याय की अवधारणा का पालन करेंगें।

शुभ कामनाओं सहित
आपका

गोपाल दास " नीरज"

धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ

दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ!

बहुत बार आई-गई यह दिवाली
मगर तम जहां था वहीं पर खड़ा है,
बहुत बार लौ जल-बुझी पर अभी तक
कफन रात का हर चमन पर पड़ा है,
न फिर सूर्य रूठे, न फिर स्वप्न टूटे
उषा को जगाओ, निशा को सुलाओ!
दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ!

सृजन शान्ति के वास्ते है जरूरी
कि हर द्वार पर रोशनी गीत गाये
तभी मुक्ति का यज्ञ यह पूर्ण होगा,
कि जब प्यार तलावार से जीत जाये,
घृणा बढ रही है, अमा चढ़ रही है
मनुज को जिलाओ, दनुज को मिटाओ!
दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ!

बड़े वेगमय पंख हैं रोशनी के
न वह बंद रहती किसी के भवन में,
किया क़ैद जिसने उसे शक्ति छल से
स्वयं उड़ गया वह धुंआ बन पवन में,
न मेरा-तुम्हारा सभी का प्रहर यह
इसे भी बुलाओ, उसे भी बुलाओ!
दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ!

मगर चाहते तुम कि सारा उजाला
रहे दास बनकर सदा को तुम्हारा,
नहीं जानते फूस के गेह में पर
बुलाता सुबह किस तरह से अंगारा,
न फिर अग्नि कोई रचे रास इससे
सभी रो रहे आँसुओं को हंसाओ!
दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ

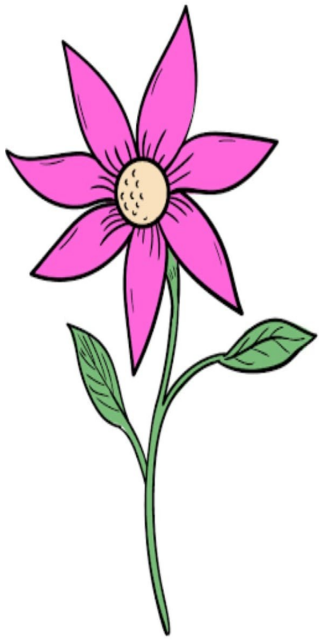

मैथिलीशरण गुप्त

निराश करो मन को

कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को।

संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को।

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोंत्तर गुंजित गान रहे
सब जाय अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को।

किस गौरव के तुम योग्य नहीं
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जन हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घर के
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को
नर हो, न निराश करो मन को।

करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को

लेख

भारतीय संस्कृति में दशहरा के विभिन्न रूप

भारतीय संस्कृति में उत्सवों और त्यौहारों का आदि काल से ही महत्व रहा है। सामान्यतः त्यौहारों का सम्बन्ध किसी न किसी मिथक, धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं और ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा होता है। अपने देश भारत में तो कृषि एवम् मौसम के साथ त्यौहारों का अटूट सम्बन्ध देखा जा सकता है। रबी और खरीफ फसलों की कटाई के साथ ही साल के दो सबसे सुखद मौसमों वसंत और शरद में तो मानों उत्सवों की बहार आ जाती है। शारदीय नवरात्र में माँ के जगराता के बीच दुर्गा पूजा पंडालों के मनोरंजक कार्यक्रम और रामलीला के साथ-साथ गरबा और डांडिया के बहाने दूर-दराज के मित्रों और रिश्तेदारों से भी मुलाकातें हो जाती हैं। घर की चहरदीवारियों में कैद महिलाएं भी इस अवसर पर बाहर निकलकर त्यौहारों व उत्सवों का पूरा लुफ्त उठाती हैं। त्यौहारों को केवल फसल की धूम रहती है। चूँकि इस दौरान खेतों में कटाई हो चुकी होती है अतः दूर-दराज के अंचलों से लोग सपरिवार सज-धजकर बाजारों एवं मेलो में आते हैं और लजीज व्यजंनों का लुफ्त उठाते हुए खूब खरीददारी करते हैं। इसी समय मेलों एवं ऋतुओं से ही नहीं वरन् दैवी घटनाओं से जोड़कर धार्मिक व पवित्र भी बनाया गया है। यही कारण है कि भारतीय पर्व और त्यौहारों में धार्मिक देवी-देवताओं, सामाजिक घटनाओं व विश्वासों का अद्भुत संयोग प्रदर्शित होता है।

दशहरा पर्व भारतीय संस्कृति में सबसे ज्यादा बेसब्री के साथ इंतजार किये जाने वाला त्यौहार है। दशहरा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शब्द संयोजन 'दश' व 'हरा' से हुयी है, जिसका अर्थ भगवान राम द्वारा रावण के दस सिरों को काटने व तत्पश्चात रावण की मृत्यु रूप में राक्षस राज के आंतक की समाप्ति से है। यही कारण है कि इस दिन को विजयदशमी अर्थात अन्याय पर न्याय की विजय के रूप में भी मनाया जाता है। दशहरे से पूर्व हर वर्ष शारदीय नवरात्र के समय मातृरूपिणी देवी नवधान्य सहित पृथ्वी पर अवतरित होती हैं- क्रमशः शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व सिद्धिदात्री रूप में मां दुर्गा की लगातार नौ दिनों तक पूजा होती है। ऐसी मान्यता है कि नवरात्र के अंतिम दिन भगवान राम ने चंडी पूजा के रूप में माँ दुर्गा की उपासना की थी और मां ने उन्हें युद्ध में विजय का आशीर्वाद दिया था। इसके अगले ही दिन दशमी को भगवान राम ने रावण का अंत कर उस पर विजय पायी, तभी से शारदीय नवरात्र के बाद दशमी को विजयदशमी के रूप में मनाया जाता है और आज भी प्रतीकात्मक रूप में रावण-पुतला का दहन कर अन्याय पर न्याय के विजय की उद्घोशणा की जाती हे। सर्वप्रथम राम चरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान राम के जीवन व शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने के निमित्त बनारस में हर साल रामलीला खेलने की परिपाटी आरम्भ की। एक लम्बे समय तक बनारस के रामनगर की रामलीला जग-प्रसिद्ध रही, कालांतर में उत्तर भारत के अन्य शहरों में भी इसका प्रचलन तेजी से बढ़ा और आज तो रामलीला के बिना दशहरा ही अधूरा माना जाता है। यहाँ तक कि विदेशों मे बसे भारतीयों ने भी वहाँ पर रामलीला अभिनय को प्रोत्साहन दिया और कालांतर में वहाँ के स्थानीय देवताओं से भगवान राम का साम्यकरण करके इंडोनेशिया, कम्बोडिया, लाओस इत्यादि देशों में भी रामलीला का भव्य मंचन होने लगा, जो कि संस्कृति की तारतम्यता को दर्शाता है।

कृष्ण कुमार यादव

पोस्टमास्टर जनरल,
वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी-221002

भारत सरकार में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी। प्रशासन के साथ -साथ साहित्य, लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी चर्चित नाम। विभिन्न विधाओं में अब तक कुल 7 पुस्तकें प्रकाशित- 'अभिलाषा' (काव्य-संग्रह, 2005), 'अभिव्यक्तियों के बहाने' व 'अनुभूतियाँ और विमर्श' (निबंध-संग्रह, 2006 व 2007), 'India Post : 150 Glorious Years' (2006), 'क्रांति-यज्ञ : 1857-1947 की गाथा', 'जंगल में क्रिकेट' (बाल-गीत संग्रह, 2012) व '16 आने 16 लोग' (निबंध-संग्रह, 2014)।

भारत विविधताओं का देश है, अतः उत्सवों और त्यौहारों को मनाने में भी इस विविधता के दर्शन होते हैं। हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा काफी लोकप्रिय है। एक हफ्ते तक चलने वाले इस पर्व पर आसपास के बने पहाड़ी मंदिरों से भगवान रघुनाथ जी की मूर्तियाँ एक जुलूस के रूप में लाकर कुल्लू के मैदान में रखी जाती हैं और श्रद्धालु नृत्य-संगीत के द्वारा अपना उल्लास प्रकट करते हैं। मैसूर (कर्नाटक) का दशहरा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित है। वाड्यार राजाओं के काल में आरंभ इस दशहरे को अभी भी शाही अंदाज में मनाया जाता है और लगातार दस दिन तक चलने वाले इस उत्सव में राजाओं का स्वर्ण - सिंहासन प्रदर्शित किया जाता है। सुसज्जित तेरह हाथियों

का शाही काफिला इस दशहरे की शान है। आंध्र प्रदेश के तिरूपति (बालाजी मंदिर) में शारदीय नवरात्र को ब्रह्मोत्सवम् के रूप में मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इन नौ दिनों के दौरान सात पर्वतों के राजा पृथक-पृथक बारह वाहनों की सवारी करते हैं तथा हर दिन एक नया अवतार लेते हैं। इस दृश्य के मंचन और साथ ही 'चक्रस्नान' (भगवान के सुदर्शन चक्र की पुश्करणी में डुबकी) के साथ आंध्र में दशहरा सम्पन्न होता है। केरल में दशहरे की धूम दुर्गा अष्टमी से पूजा वैपू के साथ आरंभ होती है। इसमें कमरे के मध्य में सरस्वती माँ की प्रतिमा सुसज्जित कर आसपास पवित्र पुस्तकें रखी जाती हैं और कमरे को अस्त्रों से सजाया जाता है। उत्सव का अंत विजयदशमी के दिन 'पूजा इदप्पु' के साथ होता है। महाराज स्वाथिथिरूनाल द्वारा आरंभ शास्त्रीय संगीत गायन की परंपरा यहाँ आज भी जीवित है। तमिलनाडु में मुरगन मंदिर में होने वाली नवरात्र की गतिविधियाँ प्रसिद्ध हैं। गुजरात में दशहरा के दौरान गरबा व डांडिया-रास की झूम रहती है। मिट्टी के घड़े में दीयों की रोशनी से प्रज्वलित 'गरबो' के इर्द-गिर्द गरबा करती महिलायें इस नृत्य के माध्यम से देवी का आह्वान करती हैं। गरबा के बाद डांडिया-रास का खेल खेला जाता है। ऐसी मान्यता है कि माँ दुर्गा व राक्षस महिषासुर के मध्य हुए युद्ध में माँ ने डांडिया की डंडियों के जरिए महिषासुर का सामना किया था। डांडिया-रास के माध्यम से इस युद्ध को प्रतीकात्मक रूप मे दर्शाया जाता है।

दशहरे की बात हो और बंगाल की दुर्गा-पूजा की चर्चा न हो तो अधूरा ही लगता है। वस्तुतः दुर्गापूजा के बिना एक बंगाली के लिए जीवन की कल्पना भी व्यर्थ है। मान्यताओं के अनुसार नौवीं सदी में बंगाल में जन्मे बालक व दीपक नामक स्मृतिकारों ने शक्ति उपासना की इस परिपाटी की शुरूआत की। तत्पश्चात दशप्रहारधारिणी के रूप में शक्ति उपासना के शास्त्रीय पृष्ठाधार को रघुनंदन भट्टाचार्य नामक विद्वान ने सम्पुष्ट किया। बंगाल में प्रथम सार्वजनिक दुर्गा पूजा कुल्लक भट्ट नामक धर्मगुरू के निर्देशन में ताहिरपुर के एक जमींदार नारायण ने की पर यह समारोह पूर्णतया पारिवारिक था। बंगाल के पाल और सेनवशियों ने दूर्गा-पूजा को काफी बढ़ावा दिया। प्लासी के युद्ध (1757) में विजय पश्चात लार्ड क्लाइव ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु अपने हिमायती राजा नव नवकृष्ण की सलाह पर कलकत्ते के शोभा बाजार की विशाल पुरातन बाड़ी में भव्य स्तर पर दुर्गा-पूजा की। इसमें कृष्णानगर के महान चित्रकारों और मूर्तिकारों द्वारा निर्मित भव्य मूर्तियाँ बनावाई गईं एवं वर्मा और श्रीलंका से नृत्यांगनाएं बुलवाई गईं। लार्ड क्लाइव ने हाथी पर बैठकर इस समारोह का आनंद लिया। राजा नवकृष्ण देव द्वारा की गई दुर्गा-पूजा की भव्यता से लोग काफी प्रभावित हुए व अन्य राजाओं, सामंतों व जमींदारों ने भी इसी शैली में पूजा आरम्भ की। सन् 1790 में प्रथम बार राजाओं, सामंतो व जमींदारों से परे सामान्य जन रूप में बारह ब्राह्मणों ने नदिया जनपद के गुप्ती पाढ़ा नामक स्थान पर सामूहिक रूप से दुर्गा-पूजा का आयोजन किया, तब से यह धीरे-धीरे सामान्य जनजीवन में भी लोकप्रिय होता गया। बंगाल के साथ-साथ बनारस की दुर्गा पूजा भी जग प्रसिद्ध है। इसका उद्भव प्लासी के युद्ध (1757) पश्चात बंगाल छोड़कर बनारस में बसे पुलिस अधिकारी गोविंदराम मित्र (डी.एस.पी.) के पौत्र आनंद मोहन ने 1773 में बनारस के बंगाल ड्यौड़ी में किया। प्रारम्भ में यह पूजा पारिवारिक थी पर बाद में इसने जनसामान्य में व्यापक स्थान पा लिया।

दशहरे की परम्परा भगवान राम द्वारा त्रेतायुग में रावण के वध से भले ही आरम्भ हुई हो, पर द्वापरयुग में महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध भी इसी दिन आरम्भ हुआ था। विजयदशमी सिर्फ इस बात का प्रतीक नहीं है कि अन्याय पर न्याय अथवा बुराई पर अच्छाई की विजय हुई थी वरन् यह बुराई में भी अच्छाई ढूंढने का दिन होता है। स्वयं रावण-वध के बाद भगवान राम ने अनुज लक्ष्मण को रावण के पास शिक्षा लेने के लिए भेजा था। रावण भगवान शिव का भक्त होने के साथ-साथ महापराक्रमी भी था। इसी तथ्य के मद्देनजर आज भी कानपुर के शिवाला स्थित कैलाश मंदिर में विजयदशमी के दिन दशानन रावण की महाआरती की जाती है। सन् 1865 में श्रृंगेरी के शंकराचार्य की मौजूदगी में महाराज गुरू प्रसाद द्वारा स्थापित इस मंदिर में शिव के साथ उनके प्रमुख भक्तों की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। कालांतर में सन् 1900 में महाराज शिवशंकर लाल ने कैलाश मंदिर परिसर में शिव भक्त रावण का मंदिर बनवाया और देवी के तेइस रूपों की मूर्ति भी स्थापित की। तभी से रावण की महाआरती की परम्परा यहाँ पर कायम है। कानपुर से सटे उन्नाव जिले के मौरावां कस्बे में भी राजा चन्दन लाल द्वारा सन् 1804 में स्थापित रावण की मूर्ति की पूजा की जाती है। यहाँ दशहरे के दिन रामलीला मैदान में 7-8 फुट ऊँचे सिंहासन पर बैठे रावण की विशालकाय पत्थर की मूर्ति की लोग पूजा करते हैं, जबकि एक अन्य पुतला बनाकर रावण दहन करते हैं। इसी प्रकार मध्य प्रदेश के मंदसौर में नामदेव वैश्य समाज के लोगों के अनुसार रावण की पत्नी मंदोदरी मंदसौर की थी। अतः रावण को जमाई मानकर उसकी खतिरदारी यहाँ पर भव्य रूप में की जाती है। यहाँ पर रावण के समक्ष मनौती मानने और पूरी होने के बाद रावण की वंदना करने व भोग लगाने की परंपरा रही है। यहाँ रावण की पैतीस फुट उंची बैठी हुई अवस्था में कंक्रीट मूर्ति स्थापित की गई है। इसी प्रकार जोधपुर के लोगों के अनुसार रावण की पत्नी मंदोदरी यहाँ की पूर्व राजधानी मंडोर की रहने वाली थीं और रावण व मंदोदरी के विवाह स्थल पर आज भी रावण की चवरी नामक एक छतरी मौजूद है। यहाँ किला रोड स्थित अमरनाथ महादेव मंदिर प्रांगण में रावण मंदिर है। जोधपुर में श्रीमाली ब्राह्मण समाज के दवे गोधा गोत्र परिवार के लोग रावण दहन पर शोक मनाते हैं। ऐसी मान्यता है कि रावण दवे गोधा गोत्र से था इसलिए रावण

दहन के समय आज भी इनके गोत्र से जुड़े परिवार रावण दहन नहीं देखते और रावण दहन के बाद स्नान कर यज्ञोपवीत धारण करते हैं। मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में स्थित रावणगाँव में रावण को महात्मा या बाबा के रूप में पूजा जाता है। यहाँ रावण बाबा की करीब आठ फीट लंबी पाशाण प्रतिमा लेटी हुयी मुद्रा में है और प्रति वर्ष दशहरे पर इसका विधिवत श्रृंगार करके अक्षत, रोली, हल्दी व फूलों से पूजा करने की परंपरा है। चूंकि रावण की जान उसकी नाभि में बसती थी, अतः यहाँ पर रावण की नाभि पर तेल लगाने की परंपरा है अन्यथा पूजा अधूरी मानी जाती है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में ग्रेटर नोएडा के मध्य स्थित बिसरख गाँव को रावण का पैतृक गाँव माना जाता है। बताते हैं कि रावण के पिता विश्रवामुनि इस गाँव के जंगल में शिव भक्ति करते थे एवं रावण सहित उनके तीनों बेटे यहीं पर पैदा हुए। विजयदशमी के दिन जब चारों तरफ रावण का पुतला फूका जाता है, तो बिसरख गाँव के लोग उस दिन शोक मनाते हैं। इस गाँव में दशहरा का त्यौहार नहीं मनाया जाता है। गाँववासियों को मलाल है कि रावण को पापी रूप में प्रचारित किया जाता है जबकि वह बहुत तेजस्वी, बुद्विमान, शिवभक्त, प्रकाण्ड पण्डित एवं क्षत्रिय गुणों से युक्त था।

आधुनिक युग में जब अमीरी-गरीबी की खाई बढ़ रही है, पर्यावरण समस्या जटिल होती जा रही है तो निश्चिततः हमारा उद्देश्य उत्सवों व त्यौहारों की मूल भावनाओं की तरफ लौटने की ओर होना चाहिए न कि अपनी हरकतों द्वारा इन भावनाओं का मजाक उड़ाने की। त्यौहार सामाजिक सदाशयता के परिचायक हैं न कि हैसियत दर्शाने के। त्यौहार हमें जीवन के राग-द्वेश से ऊपर उठाकर एक आदर्श समाज की स्थापना में मदद करते हैं। समाज के हर वर्ग के लोगों को एक साथ मेल-जोल और भाईचारे के साथ बिठाने हेतु ही त्यौहारों का आरम्भ हुआ। यह एक अलग तथ्य है कि हर त्यौहार के पीछे कुछ न कुछ धार्मिक मान्यताएं, मिथक, परम्पराएं और ऐतिहासिक घटनाएं होती हैं पर अंततः इनका उद्देश्य मानव-कल्याण ही होता है। आज जरुरत है कि इन त्यौहारों की आडम्बरता की बजाय इनके पीछे छुपे हुए संस्कारों और जीवन मूल्यों को अहमियत दी जाए तभी व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र सभी का कल्याण सम्भव होगा।

काव्य

1.

जगपति
आप अल्ल्लाह से अलग हो
पूछ लो आदमी से!
जब मंदिर में आप हो तो
बोलो!
सारा रगड़ा आपके न बोलने से है!
आप बोलते नहीं, आदमी समझता नहीं।

2.

जगपति!
आदमी ने आदमी के साथ
बहोत-बहोत बड़ी-बड़ी कीं है
आपका नाम ले-ले!
लिख दिए आपके फरमान स्वयं ने
और बता दिए आपके लिखे!
खुद बन गये आपके दूत
पैगम्बर, मोहम्मद,नबी!
फुड़ा दिए आदमी के सिर,
कर डाली मार-काट!
आज कौन-सा रूका है!
आगे कौन-सा रूकेगा!!
आदमी आपके बस में नहीं है, जगपति!

वह उत्पात मारमूर मचा रहा
क्या हो गया आपके?
बताओ जगपति!
मैं आदमी नहीं हूं
मैं धरती का पसीना हूं।

3.

जगपति!
तुम आदमी को समझें नहीं।
इसके चेहरे पर दाढ़ी है, और
पेट में भी।
तुम अल्ल्लाह नहीं हो,,गॉड आदि भी नहीं।
आदमी सबकुछ है
आदमी के सिवा।

बी.एल.माली 'अशांत'
3/343, मालवीय नगर, जयपुर, राजस्थान 30 2017

लेख

प्रसाद की छायावादी ग़ज़ल

हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग के बाद छायावाद का समय आता है. मोटे तौर पर 1918 से लेकर 1935 तक के बीच की रचना जिसमें लाक्षणिकता, स्वच्छंदता प्रकृति प्रेम और रहस्यात्मकता दिखलाई पड़ती है छायावाद के अंतर्गत माना जाता है.

छायावाद को आधुनिक काल का स्वर्ण युग भी कहा गया है. हिंदी में कामायनी, राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास, आंसू गीतिका, वीना, ग्रंथि, पल्लव गुंजन, यामा आदि प्रसिद्ध पुस्तकें छायावाद के अंतर्गत लिखी गईं. हिंदी में छायावाद का नाम मुकुटधर पांडेय ने दिया और मुकुटधर पांडेय की कविता कुर्री के प्रति छायावाद की प्रथम कविता मानी जाती है. छायावाद में मुख्यतः जिन चार कवियों का जिक्र होता है उसमें प्रसाद की प्रतिभा सबसे अधिक थी. एक कवि ही नहीं कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार और निबंध लेखक के तौर पर भी उनका नाम अमर है.वो एक युग प्रवर्तक लेखक थे.भारतेन्दु के बाद हिंदी में सबसे बड़े नाटककार हुए तो उनकी रचित कामायनी को दूसरा बाइबल की संज्ञा दी जाती है. 1918 में प्रकाशित उनकी कृति झरना को प्रथम छायावादी काव्य ग्रंथ माना जाता है. जिसमें कुल चौबीस छायावादी प्रवृत्तियों की कविताएं शामिल हैं .यह अलग बात है कि उसके बाद के संस्करणों में उनकी और भी कविताएं जोड़ दी गईं . उनका कहानी पक्ष भी कम मजबूत नहीं है. विजय मोहन सिंह ने लिखा है कि प्रसाद ने सर्वाधिक प्रयोगात्मकता कहानी के क्षेत्र में ही प्रयुक्त किये हैं. प्रसाद की लिखी गई ग्राम कहानी हिंदी कि वह पहली कहानी है, जिसे वास्तव में आधुनिक कहानी होने की संज्ञा दी जा सकती है.अपनी कहानी ग्राम में जहां वह महाजनी सभ्यता के अमानवीय पक्ष का उद्घाटन करते हैं, वहीं ममता कहानी में यह स्पष्ट कर देते हैं कि अब सामंतवाद का अंत बहुत जल्द होने वाला है. अपने उपन्यास कंकाल, तितली और इरावती मैं धर्म के नाम पर होने वाला अनाचार और दुराचार को दिखाया गया है. इस कहानी के माध्यम से वो तीर्थ स्थलों की सच्चाई से भी वाकिफ करवाते हैं. मधुरेश के मानें तो इस उपन्यास में समाज की सारी नग्नता और विद्रूपता साफ-साफ दिखलाई पड़ती है.जहां तक नाटक की बात है प्रसाद ने ऐतिहासिक और पौराणिक दोनों प्रकार के नाटकों की रचना अधिक की है. उन्होंने अपने नाटकों में मौर्य काल से लेकर हर्ष के समय तक का इति वृत्त प्रस्तुत किया है. स्कंदगुप्त में प्रसाद ने दिखाया है कि हूणों के आक्रमण से बिखरी हुई जनता स्कंदगुप्त के साथ साम्राज्य प्राप्त कर लेती है. असल में प्रसाद दिखाना चाहते हैं कि ब्रिटिश शासक को भी ऐसे ही उखाड़ फेक सकते हैं. डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र ने कहीं लिखा भी है स्कंद गुप्त एक राष्ट्रीय संग्राम है जो साहित्य के द्वारा लड़ा गया था. एक घूंट और ध्रुवस्वामिनी नामक एकांकी मंच के दृष्टिकोण से भी काफी सफल और सहज है.

प्रसाद ने जहां हिन्दी साहित्य की लगभग तमाम लोकप्रियत विधाओं को अपनाया. यहां तक कि उन्होंने गजल वाली शैली भी अपनाई. यह अलग बात है कि हिंदी गजल के इतिहास में प्रसाद का खास महत्व रेखांकित नहीं किया जाता रहा. है. निराला ने बेला में बाज़ाब्ता ग़ज़लें लिखीं. जयशंकर प्रसाद ने भी अपने कुछ नाटकों और कविता संग्रह में हिंदी गजल वाली शैली अपनाई है. सरदार मुजावर लिखते हैं कि छायावादी

डॉ.जियाउर रहमान जाफ़री

सहायक प्रोफेसर

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

मिर्जा गालिब कॉलेज गया, बिहार823001

गजलकरों ने हिंदी कविता के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

गजल अपने आरंभिक रूप में प्रेम काव्य ही रही है. इसके विषय वस्तु में परिवर्तन दुष्यंत के साथ हुआ जब यह प्रेम और दरबार से निकलकर घरबार की तरफ मुखातिब हो गई. जयशंकर प्रसाद की ग़ज़लों में प्रेम और भक्ति दोनों रूपों के दर्शन होते हैं .यह अलग बात है कि उनकी गजलों में शृंगारिकता अधिक दिखलाई देती है. उदाहरण के तौर पर इनके एक -दो शेर देखे जा सकते हैं-

अस्ताचल पर युवती संध्या की खुली अलक घुंघराली है
लो माणिक मदिरा की धारा बहने लगी निराली है

(ध्रुवस्वामिनी, पृष्ठ35)

प्रसाद उसको न भूलो तुम तुम्हारा जो के प्रेमी हो
न सज्जन छोड़ते उसको जिसे स्वीकार करते हैं

(इंदु कला, पृष्ठ 498)

प्रसाद ने इस गजल में अपने तखल्लुस का भी इस्तेमाल किया है. जो उर्दू ग़ज़ल की परंपरा से आई है.

छायावादी कवि निराला भी इसी प्रणय भाव का विस्तार देते हैं बेला में उनकी एक प्रसिद्ध ग़ज़ल का शेर है

उनके बाग में बहार देखता चला गया
कैसा फूलों का उभार देखता चला गया

प्रेम का विकास वह आंखें चार हो गई
पड़ा रश्मियों का हार देखता चला गया

मैंने उनको दिल दिया उनका दिल मिला मुझे
दोनों दिलों का सिंगार देखता चला गया

यह भी सच है कि हिंदी ग़ज़ल ने प्रसाद तक आते-आते कोई बड़ी यात्रा नहीं की थी. प्रयोग के तौर पर अमीर खुसरो कबीर, रंग और शमशेर की कुछ ग़ज़लें मिलती हैं लेकिन गजल ने अपनी लोकप्रियता प्रसाद के बाद दुष्यंत के शेरों से पाई.उनकी हिन्दी ग़ज़लों ने इमरजेंसी के समय में एक इंकलाब बरपा कर दिया. गजल में पहली बार विद्रोह को जगह मिली.जयशंकर प्रसाद ने भी अपनी ग़ज़लों में प्रेम के अतिरिक्त भक्ति और विद्रोह का स्वरूप दिखलाया है. इस संदर्भ में प्रसाद की एक ग़ज़ल देखने योग्य है-

अपने सुप्रेम रस का प्याला पिला दे मोहन
तेरे में अपनों को हम जिस में भुला दे मोहन

निजी रूप माधुरी की चस्की लगाई मुझको
मुंह से कभी न छूटे ऐसी छका दे मोहन

सौंदर्य विश्व भर में फैला हुआ तो तेरा
एकत्र करके उसमें मन में दिखा दे मोहन

डालकर नहीं करते जो रूप की नीरवता से
हमको पतंग अपना ऐसा बना दे मोहन

तेरा हृदय गगन भी तब राग में रंगा तो
ऐसी उषा की लाली अब तो दिखा दे मोहन
(कानन कुसुम पृष्ठ 412)

वास्तव में इस ग़ज़ल के माध्यम से अपने आराध्य से बेहतर करने की मांग की गई है. उस दौर की शायरी में जहां हुस्न और उसकी खूबसूरती का जिक्र भर होता था वहां प्रसाद ने मोहन से खूबसूरत दुनिया की फरमाइश की है. हिंदी गजल में विषय वस्तु के दृष्टिकोण से यह बदलाव की पहली रचना है.यह अलग बात है कि प्रसाद ने ग़ज़ल शीर्षक से ग़ज़लें नहीं लिखीं. फिर भी उनकी ग़ज़लें हिंदी गजल को विस्तार देती हुई दिखलाई पड़ती है. प्रसाद की एक ऐसी ही महत्वपूर्ण ग़ज़ल है जिसमें देश के चिंता साफ-साफ दिखलाई पड़ती है.यह रचना प्रसाद की सबसे लोकप्रिय ग़ज़ल भी है, जिसे अधिकतर ग़ज़ल समीक्षकों ने बार -बार कोड किया है. आप भी देखें -

देश की दुर्दशा निहारोगे
डूबते को कभी उबारोगे

कुछ करोगे कि बस सदा रोकर
दीन हो देव को पुकारोगे

सो रहे तुम ना भाग्य सोता है
आप बिगड़ी हम संवारोगे

दीन जीवन बिता रहे अब तक
क्या हुए जा रहे विचारोगे

समय के अनुसार प्रसाद ने जहां प्रेम प्रधान ग़ज़लें लिखी हैं वहां भी उन्होंने सिर्फ नायिका के रूप श्रृंगार का वर्णन नहीं किया है उसमें भी महबूब से बावफाई की सीख ही दी गई है, और यह बताया गया है कि सच्चा प्रेमी अंत तक संबंधों का निर्वाह करता है. जयशंकर प्रसाद की एक गजल के कुछ शेर इस संबंध में देखने योग्य हैं -

सरासर भूल करते हैं उन्हें जो प्यार करते हैं
बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं

उन्हें अवकाश ही कहां रहता मुझसे मिलने का
किसी से पूछ लेते हैं यही उपकार करते हैं

जो ऊंचे चढ़ के चलते हैं वह नीचे देखते हरदम
प्रफुल्लित वृक्ष की यह भूमि कुसुम गार करते हैं

ना इतना फूलिये तरुवर सुफल कोरी कली लेकर
बिना मकरंद के मधुकर नहीं गुंजार करते हैं

प्रसाद उनको न भूलो तुम तुम्हारा जो कि प्रेमी हो
न सज्जन छोड़ते उसको जिसे स्वीकार करते हैं
(इंदु कला, पृष्ठ498)

आज हिंदी ग़ज़ल का एक बड़ा तबका यह मानकर चल रहा है कि हिंदी गजल हिंदी कविता परंपरा में लिखी जा रही है. इसलिए इसमें समकालीन कविता की दृष्टि भाव भूमि और भाषागत प्रयोग होना चाहिए. इसे जहां तक मुमकिन हो असहज अरबी- फारसी संस्कृत शब्दों से बचाया जाए. यह अलग मुद्दा है कि इस प्रकार की धारणा से हिंदी गजल का फायदा अथवा नुकसान हुआ है. देखने की बात यह है कि जयशंकर प्रसाद अपनी गजलों में जिस भाषा का इस्तेमाल करते हैं, वो भी संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से संपृक्त है. शुद्ध हिंदी शब्दों का प्रयोग पर उन्होंने भी बल दिया है. पर ऐसा करते हुए उन्होंने ग़ज़ल की की लयात्मकता,स्वाभाविकता, लचक और छांदसिकता का भी पूरा पूरा निर्वाह किया है. उदाहरण के लिए उनकी ग़ज़ल का यह शेर देखा जा सकती है

जीने का अधिकार तुझे क्या क्यों इसमें सुख पाता है
मानव तूने कुछ सोचा है क्यों आता है क्यों जाता है

बहर के दृष्टिकोण से अगर मूल्यांकन करें तो यह शेर बहरे मुतदारिक है. वहीं' सरासर भूल करते हैं उन्हें जो प्यार करते हैं/ बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं- मफाईलुन छंद पर है. प्रसाद के ऐसे अन्य शेर भी देखे जा सकते हैं जिसमें उन्होंने अपनी नजरों में शब्द चयन,नाद सौंदर्य, उपमा, मुहावरा, शैली और शब्द शक्तियों का उम्दा निर्वाह किया है-

वसुधा मदमाती हुई उधर आकाश लगा देखो झुकने
सब झूम रहे अपने सुख में तूने क्यों बाधा डाली है
(ध्रुवस्वामिनी, पृष्ठ 35)

निवास जल में ही है तुम्हारा तथापि मिश्रित कभी ना होते
मनुष्य निर्लिप्त होवे कैसे सुपाठ तुमसे ये मिल रहा है.

यदि तुलनात्मक दृष्टिकोण से भी विचार करें तो छायावाद काल के प्रसाद और निराला की ग़ज़लों में एक बड़ा अंतर यह भी है कि निराला उर्दू शैली वाली अगले लिखते हैं लेकिन प्रसाद हिंदी शैली वाली हिंदी गजल की रचना करते हैं. निराला और प्रसाद की गजल के एक-दो शेर से इसे और अधिक आसानी से देखा जा सकता है-

गिराया है जमी होकर छुपाया आसमां होकर
निकाला दुश्मने जां और बुलाया मेहरबां होकर

चमकती धूप जैसे हाथ वाला दबदबा आया
जलाया गर्मियां होकर खिलाया गुलसितां होकर

उजाड़ा है कसर होकर बसाया है असर होकर
उजाड़ा है रवा होकर लगाया बागबां होकर
(सूर्यकांत त्रिपाठी निराला)

पर जब इसी ग़ज़ल विधा को प्रसाद आजमाते हैं तो उनका कहन बदल जाता है और वह हिन्दी तेवर की ग़ज़लें रखते हैं. उनकी एक गजल के कुछ शेर मुलाहिजा हों -

भर ली पहाड़ियों ने अपने झीलों की रत्न मई प्याली है
झुक चली चूमने वल्लरियों से लिपटी तरु की डाली है

भार उठी प्यालियां सुमनों ने सौरभ मकरंद मिलाया है
कामिनियों ने अनुराग भरे अधरों से उन्हें लगा ली है

वसुधा मदमाती हुई अंधकार लगा देखो झुकने
सब झूम रहे अपने दुख में तुमने क्यों बाधा डाली है

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद की ग़ज़लों में प्रयुक्त सारे शब्द संस्कृतनिष्ठ पदावली के परिचायक हैं. प्रसाद ने अपनी तमाम गजलों में गजल के आधारभूत तत्व काफिया, रदीफ बहर आदि का पूरे अधिकार के साथ इस्तेमाल किया है. यह अलग बात है कि उन्होंने अपनी इस रचना को ग़ज़ल की संज्ञा नहीं दी, यद्यपि उन्हें पता था कि वह जो लिख रहे हैं यह ग़ज़ल ही है. इसलिए उनकी ग़ज़लें छंदों पर भी खड़ी उतरती हैं और आज हिंदी गजल जहां तक पहुंची है उस ग़ज़ल की परंपरा में प्रसाद का स्थान भी है. पर देखने की बात यह है कि प्रसाद की ग़ज़लों को लेकर अभी तक कोई स्वतंत्र काम नहीं हुआ है. बस जहां - तहां उनका ज़िक्र भर कर देने से हम उनकी ग़ज़लों के प्रति ईमानदार नहीं हो सकते. आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रसाद ही एक ऐसे लेखक हैं जिन्होंने भारतेन्दु हरिश्चंद्र के बाद हिंदी गद्य- पद्य की तमाम विधाओं में अपना मौलिक सृजन किया है. ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्रों के माध्यम से उन्होंने देश भक्ति के रास्ते दिखलाएं हैं और बताया कि ऐसी परिस्थितियों मैं हमारे पूर्वजों ने किस प्रकार का काम किया था.

आज हिंदी गजल कविता की सबसे लोकप्रिय विधा है दुष्यंत और उसके बाद के शायरों -जहीर कुरैशी, हरेराम समीप, विनय मिश्र, चंद्रसेन विराट, उर्मिलेश, अनिरुद्ध सिन्हा, डॉ भावना, बालस्वरूप राही, कुंवर बेचैन आदि ने जिस तरह से हिंदी ग़ज़ल को सजाया और संवारा है और जिसके रास्ते खुसरो, कबीर, रंग, शमशेर निराला और प्रसाद होते हुए इस मंजिल तक पहुंचते हैं, वो ग़ज़ल आज इनकी बदौलत हिन्दी कविता की सबसे लोकप्रिय विधा बन चुकी है .

ग़ज़ल

आग पी तो गया अब पचा कर बता।
और फिर जिन्दगी को बचा कर बता।।

दी सभी को अगर नौकरी तो सुनो ,
मैं कहाँ का हुआ यार चाकर बता।।

हाथ मेंहदी से रचना करिश्मा नहीं,
नीम की पत्तियों से रचाकर बता।।

पेड़ - पौधे झुकाना अलग बात है ,
पत्थरों की अकड़ को लचाकर बता।।

उँगलियों पर नचाता रहा देश को,
एक पुतली खुले में नचा कर बता।।

दूसरों को कुदाता रहा आग में ,
आज तू ये करिश्मा चचा कर बता।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"
"वृत्तायन" 957, स्कीम नं. 51
इन्दौर पिन- 452006 म.प्र.

लेख

भूमण्डलीकरण के दौर में परम्परागत भारतीय शिक्षा की प्रासंगिकता

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के आलोक में शिक्षा के भारतीयकरण के विविध पक्षों को उद्घाटित करना शिक्षा, व्यक्ति और समाज से संबंधित विकास के लिए आवश्यक है। अपने औपचारिक और अनौपचारिक रूप में शिक्षा विकास की एक सतत् प्रक्रिया है, जो व्यक्ति, समाज और संस्थानों को स्वरूप प्रदान करती है। अनौपचारिक शिक्षा का निश्चित स्वरूप नहीं होता है, वह सांस्थानिक ढाँचे से मुक्त होती है पर अनौपचारिक शिक्षा का अपना एक सांस्थानिक स्वरुप होता है। अपने दोनों ही रुपों में शिक्षा समाज से प्रभावित होती है, और समाज को प्रभावित भी करती है। शिक्षा की शक्ति अद्भुत है। वह बदलाव का साधन है और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की प्रेरणा भी है। यदि शिक्षा बदलाव का माध्यम नहीं बनेगी तथा समाज में विकास की विवेचनात्मक सोच और दृष्टि विकसित नहीं करेगी तो वह अपनी सामाजिक उपयोगिता खो देगी। साथ ही यदि शिक्षा ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत और धरोहरों को एक पीढी से दूसरी पीढी तक नहीं पहुंचायेगी तो समाज अपनी जडों से कट जायेगा तथा उसकी इतिहास समझ और सभ्यता बोध समाप्त हो जायेगी। जब शिक्षा सांस्कृतिक परम्पराओं और धरोहरों को एक पीढी से दूसरी पीढी तक पहुंचाती है, तब वह देश की संस्कृति, जीवन और समाज से जुड़ती है। यदि वह इस कार्य को करने में असफल रहती है, तब देश में सांस्कृतिक और वैचारिक भ्रम पैदा होता है। इस तथ्य को डेलोर्स रिपोर्ट 1996 में स्वीकार किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ' ' किसी देश की शिक्षा की जड़ें उस देश की संस्कृति में तथा उसकी प्रतिबद्धता प्रगति के लिए होनी चाहिए।' ' डेलोर्स रिपोर्ट ने विश्व के देशों में तीन प्रकार के संकटों की चर्चा की है- आर्थिक संकट, प्रगति की अवधारणा संबंधी संकट और नैतिक संकट। दुनिया के देशों में इन संकटों की गंभीरता बहुत है। प्रत्येक समाज इन संकटों का धरातलीय और व्यवहारपरक समाधान अपने देश की शिक्षा में तलाश करता है।

भारत में शिक्षा कई अन्तर्विरोधों से ग्रस्त है। शिक्षा युवाओं में अपनी संस्कृति और परंपरा के प्रति अलगाव पैदा कर रही है। उससे स्व की कोई अनुभूति नहीं हो रही है। हम शिक्षा में भारतीयता की तलाश कर रहे हैं, पर वह नहीं मिल पा रही है। विचार परम्परा का प्रारम्भ ग्रीक दार्शनिक चिन्तन से माना जाता है। ग्रीक चिन्तन में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू का महत्वपूर्ण स्थान है। पश्चिम के शैक्षिक और बौद्धिक चिन्तन पर उनके विचारों की छाया देखी जा सकती है। सुकरात ने व्यक्ति के स्वतंत्र चिन्तन पर जोर दिया। वह परम्परागत मान्यताओं तथा पूर्वाग्रहयुक्त विचारों का समर्थक नहीं था। सुकरात ने व्यक्ति और समाज के बीच आदर्श संबंधों की स्पष्ट परिभाषा नहीं दी। प्लेटो ने आदर्श राज्य की स्थापना की पहल की, पर उसका आदर्श राज्य सभी व्यक्तियों के व्यक्तित्व के विकास का आधार नहीं बन सका। प्लेटो ने ज्ञान का उपयोग न्याय प्राप्ति के लिए किया, पर प्लेटो का ज्ञान शासक वर्ग तक सीमित रहा। प्लेटो मनुष्यों की असमानता में विश्वास करता था। अरस्तू ने भी समाज को दो वर्गों में देखा। उसके मत में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो समाज और राज्य के कार्यों में सहभागी होते हैं। जो बुद्धिमान होते हैं, वे ही नेतृत्व कर

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

प्रवक्ता, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी, जिला- सवाई माधोपुर (राज.) 322201

सकते हैं। अरस्तू ने भी दासता का समर्थन किया। पाश्चात्य जगत में शिक्षा संबंधी कुछ अन्य विचार प्रतिमान हैं, जिन्होंने किसी न किसी सीमा तक शिक्षा को प्रभावित किया है जैसे प्रकृतिवादी चिन्तन जिसके प्रमुख विचारक रूसो को माना जाता है। रूसो का विचार था कि बालक का विकास उसके भीतर की प्राकृतिक प्रक्रिया के अनुरूप होना चाहिए। रूसो ने अध्यापक केंद्रित शिक्षा की तुलना में बाल केंद्रित शिक्षा का समर्थन किया। प्रयोजनवादी (प्रेग्मेटिज्म) चिन्तन जिसके प्रमुख विचारक विलियम जेम्स माने जाते हैं, उनका विचार है कि मनुष्य अपने आदर्श की स्वयं सृष्टि करता है। कोई विचार शाश्वत नहीं होता। यदि किसी विचार का परिणाम हमारे लिए लाभप्रद है, तब वह हमारे लिए लाभप्रद होगा, अन्यथा नहीं। जीवन के लक्ष्य देश-काल, परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। व्यक्ति के परिवेश को समझना चाहिए और उससे समन्वय स्थापित करना चाहिए। पश्चिम में यथार्थवादी सोच भी विकसित हुई, जिसकी मान्यता थी कि इन्द्रियों द्वारा जो हम देखते और अनुभव करते हैं, वह सत्य है। इस विचार के लिए भौतिक जड़-जगत ही सत्य है। विजित देशों की शिक्षा पर इन प्रतिमानों का प्रभाव रहा।

यह आदर्श की बात है कि जिन रूपों में मानव एकता, मानव समानता और विश्व-बन्धुत्व का भाव है तथा जो प्रारम्भ से ही मनुष्य, समाज और ज्ञान के संबंधों को महत्वपूर्ण मानते हैं तथा व्यक्ति समष्टि और परमेष्टि में

संतुलन, तालमेल तथा एकत्वभाव देखते हैं, उस शिक्षा दर्शन को नगण्य और विचारों के बीच भारतीय शिक्षा के मूल तत्वों को समझना केवल अकादमिक अपरिहार्यता ही नहीं है, अपितु मानव समाज में शिक्षा की व्यापक और उदार भूमिका को समझने के लिए आवश्यक भी है। भारतीय शिक्षा, भारतीय दार्शनिक चिन्तन से अनुप्राणित है, जो मूलतः आध्यात्मिक है। भारतीय दार्शनिक चिन्तन की मान्यता है कि व्यक्ति का स्थूल और भौतिक रूप नश्वर और जड़ है। उसका वास्तविक रूप चित् आत्मा स्वरूप है। आत्मतत्व अखण्ड तथा दिग्काल से अविच्छिन्न और व्यापक है। इसलिए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एकात्मकता का भाव है, सब अभेद और एक रस हैं।

प्राचीन समय में इस तत्वज्ञान की प्राप्ति के केन्द्र गुरुकुल थे, जहाँ गुरु के साथ शिष्य रहकर शिक्षा अध्ययन करते थे। शिष्य के लिए गुरु सर्वोपरि था, सभी के साथ समानता का व्यवहार था। शिक्षा का धन से कोई संबंध नहीं था। शिक्षा खरीदी नहीं जाती थी। शिष्य में समर्पण, त्याग और सेवा भाव रहता था। गुरु का व्यवहार निस्प्रद और ममत्व से पूर्ण हुआ करता था। श्रवण, मनन, निदिध्यासन शिक्षा प्राप्ति की प्रक्रियाएं थीं। ब्रह्मचर्य और नित्यकर्म का पालन इसके अनुशासन थे। राज्य अथवा राजा के हस्तक्षेप से मुक्त गुरुकुल, गुरु की इच्छा के अनुसार चलते थे। प्राचीन काल में तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय भी थे, जहाँ अध्ययनरत शिष्यों की संख्या हजारों में थी। विश्वविद्यालय आकार में गुरुकुलों से विशाल थे। विश्व के अन्य देशों के छात्र भी वहाँ अध्ययन के लिए आते थे। वहाँ के आचार्यों का सम्मान विश्वव्यापी था। इस व्यवस्था में शिक्षा का धन से कोई संबंध नहीं था। अनुशासन और ज्ञान के प्रति समर्पण ही वहाँ शुल्क का रूप था। राज्य का हस्तक्षेप भी नहीं था। राजा इस बात से गौरवान्वित होता था कि उसके राज्य में विश्वविद्यालय हैं, श्रेष्ठ गुरु और आचार्य हैं। भारतीय शिक्षा सदैव राज्य के दबाव और हस्तक्षेप से मुक्त रही।

भारतीय शिक्षा मूल्यपरक है। यहाँ मूल्यपरक शिक्षा केन्द्रित मर्म है। मूल्य व्यक्ति और उसके सामाजिक जीवन से उद्भुत विचार और व्यवहार के मापक आधार हैं। जिनका निर्धारण समाज की सांस्कृतिक मान्यताओं और दार्शनिक विचारों से होता हैं मूल्य ऐसा आधार प्रस्तुत करते हैं, जिनके द्वारा हम उचित अनुचित का बोध करते हैं। कालान्तर में ये मूल्य समाज और व्यक्ति के स्वरूप को निर्मित करते हैं तथा उसकी पहचान बनाते हैं। संस्कृति स्वयं मूल्य पर आधारित धारणा है और उनका संवर्धन करने की भूमि तैयार की जाती है। आज शिक्षा में सबसे बड़ा संकट मूल्यों का है। पिछले पांच-छः दशकों में प्रौद्योगिकी, संचार और तकनीकी प्रगति के साथ ही उदारीकरण और भूमंडलीकरण का युग प्रारम्भ हुआ है, जिसके कारण विश्व में एक नया वर्ग तथा उसकी नई सोच और जीवन शैली विकसित हुई है। यह जीवन शैली इस वर्ग को अपने देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा, परम्परा, आचार-विचार पंचाँग और इतिहास से काट रही है। यह भी डर है कि कहीं आगे चलकर यह वर्ग अपनी पहचान ही न खो दे। ऑल्विन टाफलर ने अपनी पुस्तक 'फ्यूचर शॉक' में इस संभावना की चर्चा विस्तार से की है। इसी प्रकार थियोडोर रोजेक ने अपनी पुस्तक 'द मेकिंग आफ ए काउन्टर कल्चर' में कहा है कि 'वेबसाइट, जेट और अश्लील फिल्मों के व्यापक प्रसार ने मानव समाज की चूलें हिला दी हैं। तंत्रशाही ने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दे डाला है जिसका संबंध मात्र दैहिक समागम हो गया है।" भारतीय शिक्षा मूल्य-परक ही नहीं संस्कार युक्त भी है। शिक्षा, संस्कार और व्यक्ति के व्यक्तित्व की संकल्पना के साथ जुड़ी है। संस्कारों के साथ शिक्षा का जुड़ाव भारतीय शिक्षा प्रणाली को अन्य शिक्षा प्रणालियों से अलग करता है। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली संस्कारों पर जोर नहीं देती वह इसके प्रति तटस्थ है। उसकी शिक्षा में संस्कारों की वह अवधारणा नहीं है जो भारत में है। संस्कार व्यक्ति के सांस्कृतिक उन्नयन के साथ जुड़े रहते हैं। प्रायः आम भारतीय संस्कारित व्यक्ति को शिक्षित व्यक्ति से अधिक श्रेष्ठ मानता है। संस्कार की तात्विक और मनोवैज्ञानिक विवेचना न करते हुए सामान्य व्यवहार में यह कहा जा सकता है कि संस्कार व्यक्ति के स्वभाव, व्यवहार, पसन्दगी, नापसन्दगी तथा परिस्थितिजन्य अवसरों पर व्यक्ति की प्रतिक्रिया के तौर तरीकों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इस रूप में संस्कार का अर्थ है मानव के जीवन के उन्नयन के लिए निर्धरित मूल्यों के अनुसार जीवन को ढालने की विधि का क्रियान्वयन। शिक्षा व्यक्ति को संस्कारित करने की प्रक्रिया है। छात्र में नैतिक मूल्यो के प्रति सम्मान भाव, चारित्रिक पवित्रता और आचरण की शुद्धता को विकसित करने के लिए व्यक्ति की मानसिक और व्यावहारिक तैयारी में संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके लिए संस्कारयुक्त आचार्यों के महत्व को भी स्वीकार किया गया है।

वर्तमान समय में शिक्षा संस्थाओं में जो परिवेश विकसित हो रहा है, उसमें नैतिक वर्जनाएं और व्यवहार ध्वस्त हो रहे हैं, जो सर्वेक्षण किये जा रहे हैं तथा जो उनके परिणाम आ रहे हैं, वे भारतीय संदर्भ में ही नहीं बल्कि वैश्विक संदर्भ में भी भयावह हैं। वह हिंसक, आक्रामक और अनैतिक वातावरण को विकसित कर रहे हैं। कुछ समय पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका में एक सर्वे प्रकाशित हुआ था- जिसका शीर्षक 'पानी गलत और सही में अंतर क्यों कर पाता।' उस सर्वे से जो परिणाम प्रकाशित हुए, उसमें कहा गया है कि शिक्षण संस्थानों में जो परिवेश विकसित हो रहा है, वह किसी भी रूप में स्वस्थ नहीं है। छात्र अपने साथ हथियार लेकर आते हैं। आज स्थिति यह है कि छात्रों में पाश्चात्य संस्कृति विकसित हो रही है और किट्टी पार्टियों का फैलाव हो रहा है। सही शिक्षा के अभाव में समाज के हिंसक होने और आधारभूत सामाजिक संस्थाओं जैसे- परिवार, विवाह आदि टूटने का डर बढ रहा है। नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। ऐसे समय में विश्व का भारत की ओर देखना स्वाभाविक है। भारत के पास जीवन को देखने की एक नैतिक दृष्टि है जो शिक्षा और संस्कृति में

परिलक्षित होती है।

वर्तमान शिक्षा की आलोचना का बहुत बड़ा कारण यह है कि वह व्यक्तिगत होती जा रही है। शिक्षा अच्छे कैरियर के लिए छात्र को योग्य बना रही है, प्रतियोगी भावना विकसित कर रही है, पर छात्र में सामाजिक दृष्टि, सामाजिक सोच और समाज के प्रति कर्त्तव्यों को विकसित नहीं कर पा रही है। यह शिक्षा का अधूरापन है। प्रतिबद्धता और समाजोन्मुखी जीवन भारतीय शिक्षा की पहचान है। जब हम समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को जानेंगे तभी अपनी सीमित सोच और जीवन के छोटे से दायरे से बाहर निकल सकेंगे। शिक्षा की ग्राह्यता व्यक्तिगत है, पर उसके कारण विकसित गुण, शक्ति और सामर्थ्य का प्रयोग समाजपरक है। यदि ऐसे नहीं होता है और व्यक्ति शिक्षा द्वारा प्राप्त शक्ति और सामर्थ्य का प्रयोग स्वयं अपने लिए करता है, तब वह व्यक्ति स्वार्थी, स्वकेन्द्रित और समाज के लिए भार बन जाता है। शिक्षा मुक्ति का मार्ग है, लोक कल्याण हेतु मानव मात्र के हित के लिए ज्ञान के विस्तार का विचार भारतीयों के संस्कार में है। ज्ञान ही भय, दुःख, शोक, दरिद्रता और अभाव से मुक्ति दिलाता है। इसलिए ज्ञान को मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति माना गया है। ज्ञान मनुष्य के अन्दर ही है। भारतीय आत्मा को ब्रह्म का अंश मानते हैं और ब्रह्म का स्वरूप चैतन्य है। अतः आत्मा का स्वरूप भी चेतना है सब ज्ञान इसी में है। शिक्षा, इस चेतना पर जो अज्ञान का आवरण छा गया है, उसे अलग करने का कार्य करती है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो ज्ञान की ओर ले जाये। इसीलिए कहा गया है कि ' ' सा विद्या या विमुक्तये' ' । अर्थात विद्या वह है, जो मुक्ति दिलाए। शिक्षा जब व्यक्ति से जुड़ती है तो वह स्वभाविक रूप से उसके व्यक्तित्व से भी जुड़ती है, भारतीय शिक्षा व्यक्तित्व को गढती है। सामान्यतः व्यक्तित्व को व्यक्ति के स्वभाव, मनोदैहिक गुण, धर्मों, विशेषताओं, न्यूनताओं आदि का समुच्चय माना जाता है। आधुनिक पाश्चात्य विचार के संदर्भ में व्यक्ति शक्ति की आन्तरिक और बाह्य शक्तियों का घनीभूत रूप है। पर व्यक्तित्व के संदर्भ में भारतीय संकल्पना व्यापक है। भारतीय चिंतन में व्यक्तित्व को जीवात्मा का रूप माना गया है। व्यक्ति का व्यक्तित्व पंचकोष का संश्लिष्ट रूप है, ये पाँच कोष हैं- (1) अन्नमय कोष (2) प्राणमय कोष (3) मनोमय कोष (4) विज्ञानमय कोष (5) आनन्दमय कोष। कोष को आवरण या भंडार भी कह सकते हैं। शिक्षा की भूमिका इस पाँच आवरणों को ज्ञान द्वारा समझाते हुए क्रमशः हटाने की अनुभूति है, यही विराट का साक्षात्कार है और इसकी अनुभूति ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की पूर्णता है। भारतीय शैक्षिक चिंतन की विडंबना है कि मनुष्य, प्रकृति, ज्ञान संबंधी कोई प्रतिरूप आदर्श विकसित नहीं कर सके हैं, जो शिक्षा सिद्धांतों को प्रभावित कर सके। हम भारतीय शिक्षा का कोई मॉडल विकसित नहीं कर सके हैं। वर्तमान समय में शिक्षा क्षेत्र में वैश्वीकरण तकनीकी और दूरसंचार क्रांति के कारण जो नये संदर्भ और समीकरण विकसित हो रहे हैं उनके परिणामस्वरूप शिक्षाविदों और विचारकों सहित जनसाधारण को भी इस बात पर विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है कि भारत को अपनी शिक्षा के मूलतत्वों के संबंध में गहन विचार करना होगा तथा उससे अनुप्राणित होकर शिक्षा के प्रतिमान स्थापित करने होंगे। भारत का एकात्मवादी शाश्वत चिंतन, संस्कृति से जुड़ी मूल्याधारित, संस्कारयुक्त शिक्षा समानोन्मुखी दृष्टि से युक्त भारतीय प्रतिरूप आदर्श शिक्षा के आधार हैं। इसके लिए प्रचलित अध्यापन पद्धति को ध्वस्त करके दूसरी कोई पद्धति विकसित करने की आवश्यकता नहीं है। पर गुरुकुल भावना को समझने और उसे शिक्षा के साथ जोड़ने की आवश्यकता है, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रतिबद्धता को विकसित करे और स्वाभिमान और आत्मविश्वास को जागृत कर सके तथा अपनी संस्कृति, सभ्यता, मिट्टी और मूल्यों के प्रति जुड़ाव पैदा कर सके। इस दिशा में कई संस्थाओं ने पहल की है, कई प्रयोग देश में चल रहे हैं, विद्या भारती के विद्यालय व्यापक स्तर पर इस दिशा में सक्रिय हैं। यह अनुभव में आ रहा है कि छोटे-छोटे प्रयोग, परिवेश और मानस को बदलते हैं और प्रतिमान को बनाते हैं। गीत, प्रार्थना, पारस्परिक संबोधन, भवन, परिसर, कक्ष आदि के नामकरण, चित्र रंगमंचीय कार्यक्रमों की प्रस्तुति, अनुशासन और सामूहिक कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास, छात्रों के परस्पर संबंध पर सब मिलाकर एक मॉडल विकसित होता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति जहाँ प्रतिस्पर्धा, तनाव और समाज के प्रति तटस्थ भाव विकसित करती है, वहाँ आवश्यकता है ऐसे विद्यालयों की जो आत्मविश्वास, पारस्परिक सहयोग, सेवाभाव और प्रतिबद्धता को विकसित कर सके। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि भारतीय शिक्षा के मूल तत्वों की प्रासंगिकता और उपादेयता की महत्ता स्वयं सिद्ध है। आज विश्व बहुत बदल गया है। ज्ञान के क्षेत्र में भी बहुत विकास हो चुका है। हम अपनी वैशिष्टताओं के गुणगानों के सहारे ही नहीं रह सकते। समय का भी एक दबाव होता है तथा एक प्रवाह होता है। अतः हमें उसकी तीव्रता को समझना पड़ेगा। यहाँ केवल एक विचारणीय प्रश्न की ओर ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है। भारत ने ज्ञान को व्यापार से जोड़ने में कभी विश्वास नहीं किया। परिणामतः हम इस ओर उदासीन भी रहे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचन्द बसु ने मार्कोनी (इटली) से पहले वायरलेस का आविष्कार किया, पर आज यदि इन्हीं विचारों हम जिएंगे तो घाटे में रहेंगे। आज का युग ज्ञान का युग है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक रघुनाथ मासेलकर के अनुसार, ' ' ज्ञान नामक नये तापनाभिकीय हथियारों से ज्ञान बाजार में भविष्य का युद्ध लड़ा जाएगा।' ' स्पष्ट है कि ज्ञान ही पूँजी है और ज्ञान ही शक्ति है। हमें इस ओर तीव्रता से सोचना होगा। हमारे देशी ज्ञान को विश्व के कई लोग चतुराई से हमें अंधेरे में रखकर पेटेंट करा रहे हैं। हम हल्दी के पेटेंट की लड़ाई जीत चुके हैं। अब हाल ही में अमेरिका के एक नागरिक अलवर्ट क्ले ने अमेरिका में वैदिक गणित की एक गणितीय गणना के लिए

अमेरिकी पेटेंट की माँग की है। यदि यह पेटेंट होता है तो इसका दूरगामी परिणाम अगले कुछ वर्षों में हम पर पड़ेगा, जो आर्थिक और ज्ञानात्मक दोनों प्रकार का होगा। अतः अपनी बौद्धिक संपदा की रक्षा के लिए पेटेंट संबंधी जानकारी और सजगता की आवश्यकता है हमें इस पक्ष को भी महत्व देना होगा। आज भारतीय शिक्षा को अपनी अन्तर्निहित विशेषताओं के रक्षण और विकास के लिए वर्तमान की समसामयिक शैक्षिक धाराओं के साथ संवाद और उसके प्रभावों को आत्मसात करते हुए अपनी पहचान को बनाये रखने की क्षमता विकसित करनी होगी, ताकि हम अपनी बौद्धिक संपदा की रक्षा कर सके।

मनोज शाह 'मानस'
बी-557, सुदर्शन पार्क,
नई दिल्ली-110015

काव्य

अमरेन्द्र
पचरुखिया,फतुहा,पटना,बिहार।

"देख लेना तुम दर्पण..."

दुनिया उसकी ही दुख में आंसू बहायेगा।
जो चोट खाकर भी सदा मुस्कुराएगा।।

मेरी प्यार की गहराई को समझ सको तो,
देख लेना तुम दर्पण तुम्हें वही बताएगा।

मेरी गलतियां इकट्ठा कर हिसाब देने वाले,
कंपकपा जाएगी होंठ जब जवाब आएगा।

ख्वाहिशों के संग सपनों की आयु घट रही,
मुझे दर्द देने वाले खुदा खुशियां बरसाएगा।

परदेसी हुआ तो मत भूल जाना बेदर्दी को,
दिल ए चमन यादों की गुलदस्ता सजाएगा।

मुझे भूल जाओ ऐसा कभी तुमसे ना होगा,
कहता हूं, मेरी यादें तुम्हें कितना सताएगा।

प्यार किया, दिया, प्यार लिया, प्यार पाया,
ये ऐसा ऋण है जो जिंदगी चुका न पाएगा।

बिना किये फिर क्या होगा

तुम कहते हो ये करने से, भला आज क्या होगा,
तुम्हीं कहो बिना किये फिर, आगे और क्या होगा?
बिन बनाये चाय न बनता, बैठे-बैठे क्या होगा,
रख हाथ पर हाथ बैठा रहो, रोने से फिर क्या होगा?

जीवन को तुम खेल न समझो, करने से ही सब होगा,
आज किये तो जल्दी होगा, कल किये तो विलंब होगा।
अजी आज लगायेंगे पौधा, तभी तो कल वो फल देगा,
आज को केवल देखोगे तो, बोलो कल फिर क्या होगा?

जो संघर्ष राह पर आये बिना, हारोगे तो क्या होगा,
दुश्मन की गर्जन से काँप गए, बोलो फिर क्या होगा?
ये जीवन एक लड़ाई है, न समझोगे फिर क्या होगा,
नैनों से नीर बहाने से, घर बैठकर बोलो क्या होगा?

चारो ओर अंधेरा है तो, किसी को सूरज तो बनना होगा,
भटक रहे हैं दुनिया वाले तो, सही राह दिखाना ही होगा।
जन्म लिए इस धरती पर तो, फर्ज अदा करना होगा,
इस धरती पर भेदभाव का, अन्त हमें करना ही होगा।

जीवन है लड़ना होगा, चुनौती स्वीकार करना होगा,
सबकी खुशियाली खातिर, आज हमें सोचना होगा।
तुम कहते हो ये करने से, भला आज क्या होगा,
तुम्हीं कहो बिना किये फिर, आगे और क्या होगा?

लेख

एक खांटी कवि-आलोचक शैलेन्द्र चौहान

चंद्रमौलि चंद्रकांत

शैलेन्द्र चौहान, 68 वर्ष पार कर चुके हैं। (जन्म : 8 फरवरी 1954) यह बेहद सामान्य सूचना हो सकती है उनके लिए जो शैलेन्द्र जी से आत्मीय नहीं हैं। बहुत से लोग उन्हें बहुत नापसंद भी करते हैं उनके लिए भी यह कोई महत्त्व की बात नहीं। पर जो लोग एक बार शैलेन्द्र चौहान के संपर्क में बिना छल छद्म के प्रविष्ट हो गए वे इस अतिसंवेदनशील व्यक्ति के अनन्य रहे आये। यूँ शैलेन्द्र जी पेशे से इंजीनियर हैं लेकिन मन और आत्मा से एक संवेदनशील साहित्यकार। व्यक्ति के तौर पर भी वह अनूठे हैं सचाई की बारीक़ परतों में प्रवेश कर वस्तुगत यथार्थ को समझने के लिए सतत प्रयत्नशील। सच को सच कहना उनकी आदत है स्वभाव है। साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता विनीता शर्मा कहती हैं 'शैलेन्द्र चौहान की रचनाओं और व्यक्तित्व में ऐसा बहुत कुछ है जो साहित्यकारों को आसानी से हजम नहीं होता। उनकी रचनाएँ सदैव जनसंघर्ष के प्रति उद्देश्यपरक मित्रता का सम्बन्ध रखती हैं। वे भावात्मक न होकर विश्लेष्णात्मक होती हैं। वहां नारेबाजी नहीं होती और वे छद्म व पाखण्ड से कोसों दूर होती हैं। शैलेन्द्र की रचनाएँ और भाषा उलझने वाली न होकर सहज होती है व उनकी रचनाओं में सघन व्यंजना होती है। उपमाएं, प्रतीक और बिम्ब शैलेन्द्र के यहाँ जादू न होकर वस्तु जगत के अनुरूप ही आते हैं। उनका अतिरिक्त आग्रह वहां नहीं होता। दूसरी ओर सत्ता सहयोग की ध्वनियाँ वहां कतई मौजूद नहीं होती। शैलेन्द्र एक खांटी ईमानदार कवि -आलोचक हैं। न वे गलत स्थितियों से समझौता करते हैं न दबाव में ही आते हैं। आज के कवि - लेखक जहाँ छपने के लिए, चर्चा के लिए, सम्मान पुरस्कार पाने के लिए जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाने में लगे रहते हैं वहीँ शैलेन्द्र किसी ऐसे अनैतिक उपक्रम में अपनी ऊर्जा नष्ट नहीं करते। उनकी समझ एकदम साफ़ है कि यह सब महज एक अतृप्त कामना का खेल है उन्हें इसमें नहीं फंसना है। वह व्यवस्था के नचाये नहीं नाचते बल्कि उससे आवश्यकतानुसार सीधी मुठभेड़ करते हैं जबकि अन्य लोग इन स्थितियों से कतराते हैं और समझौते का रास्ता अपनाते हैं। इसीलिए संपादक, प्रकाशक, मीडिया, व्यवस्था, इनमें से शैलेन्द्र किसी के प्रिय नहीं हैं। उनसे सर्वाधिक दुखी उनके समकालीन रचनाकार तो रहते ही हैं आश्चर्य यह कि नामवर जी जैसे स्वनामधन्य आलोचक तक उनसे दुखी रहते थे जिन्होंने अपने गढ़ और मठ बना रखे थे।' शैलेन्द्र चौहान इनके बीच में अकेले दिखते हैं पर वह कभी अकेले नहीं होते। सामाजिक प्रतिबद्धता उन्हें सदैव जन सामान्य के

करीब रखती है और जन सामान्य को उनके करीब। वह मुंह देखकर बातें नहीं करते बल्कि मूल्यों और आदर्शों से सम्पृक्त होकर बतियाते है। फिर चाहे भला लगे या बुरा। इसके पीछे न कोई दुर्भावना होती है न काइंयाँपन जो अन्य अनेकों व्यक्तियों में अक्सर मिलता है। जो अगर आपकी प्रशंसा करेंगे तो उसका ध्वन्यार्थ अलग होगा असल अर्थ अलग। लेकिन शैलेन्द्र जी ऐसे तीर नहीं साधते। उनकी रचनात्मकता भी कुछ ऐसी ही है। (भडास4मीडिया) समीक्षक सूरज पालीवाल उनकी कविता पुस्तक 'ईश्वर की चौखट पर' की समीक्षा में कहते हैं- "ढेरों कविताओं के इस दौर में , ढेरों कवियों की इस जमात में किसी भी कवि के लिये पहचान बना पाना कठिन है लेकिन शैलेंद्र चौहान अपनी पहचान बना पाये हैं क्योंकि उनकी कविता प्रचलित मानदंडों के विरोध में खड़ी हैं। मैं मानकर चलता हूं कि किसी की नकल करके कोई बड़ा नहीं बनता बड़ा बनता है अपने अनुभवों और जीवन संघर्षों को अपनी तरह से रूपायित करके। शैलेंद्र चौहान ने अपनी कविताओं में यही किया है फिर उनकी कविता क्यों नहीं बड़ी बनेगी । 'ईश्वर की चौखट पर ' मैं यही कहना चाहता हूं लेकिन प्रार्थना के स्वर में नहीं।" अब यह अलग बात है कि लोग जानबूझ कर इस तथ्य को न स्वीकार करें। वैसे भी शैलेन्द्र जी इन बातों की चिंता ही कब करते हैं। वह मित्रों के आत्मीय सुझाव सहजता से स्वीकारते हैं। अपनी आलोचना को बरदास्त करने का उनमें गजब का धैर्य है। वह आलोचना का कतई बुरा नहीं मानते बल्कि मुस्कराते रहते हैं। यह बात विरल है। कवि-कथाकार अभिज्ञात कहते हैं - "शैलेन्द्र का होना मनुष्य समाज व दुनिया की बेहतरी के बारे में सोचते व्यक्ति का होना है। मुझे कई बार यह लगता है कि बेहतर सोचने वाले दुनिया के लिए उतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं जितने की बेहतरी के बारे में सोचने वाले। बेहतर सोचने में किसी व्यक्ति का अपना बहुत बड़ा योगदान मुझे नहीं लगता क्योंकि वह प्रारब्ध स्थिति है लेकिन बेहतरी के बारे में सोचना अर्जित है। बहुत से प्रलोभन आड़े आते हैं बेहतरी के बारे में सोचते हुए जिनसे किनारा करना पड़ता है। शैलेन्द्र जी की कुछेक कविता संग्रहों की समीक्षा मैंने की है ।

और यह महसूस किया है कि उनकी कविताओं में एक खास तरह की सादगी है जो उनके अपने व्यक्तित्त्व का भी हिस्सा है और दूसरी चीज़ यह कि उनके कथ्य में खरापन अधिक है जो उनकी कलात्मकता को भी कई बार

कमतर करता चलता है। सच कहूं तो मुझे यह अपनी ओर अधिक आकृष्ट करता है। जीवन मूल्य और कला मूल्य की मुठभेड़ में जीवन मूल्य की जीत जाना मुझे अधिक आश्वस्तकारी लगता है।" (क्मशः-2009, शैलेन्द्र चौहान विशेषांक) परिवेश सम्मान-2007 की घोषणा करते समय सुप्रसिद्ध आलोचक मूलचंद गौतम कहते हैं - "शैलेंद्र चौहान को कविता विरासत के बजाय आत्मान्वेषण और आत्मभिव्यक्ति के संघर्ष के दौरान मिली है। निरन्तर सजग होते आत्मबोध ने उनकी रचनाशीलता को प्रखरता और सोद्देश्यता से संपन्न किया है। इसी कारण कविता उनके लिए संपूर्ण सामाजिकता और दायित्व की तलाश है। विचार, विवेक और बोध उनकी कविता के अतिरिक्त गुण हैं। जब कविता और कला आधुनिकता की होड़ में निरन्तर अमूर्त होती जा रही हो, ऐसे में शैलेंद्र चौहान समाज के हाशिए पर पड़े लोगों के दु:ख तकलीफों को, उनके चेहरों पर पढ़ने की कोशिश करते हैं।" शैलेन्द्र जी के तीन कविता संग्रह आये हैं। पहला संग्रह सन 1983 में 'नौ रुपये बीस पैसे के लिए' परिमल प्रकाशन इलाहबाद से आया था। इस संग्रह की कविताएं उनकी शुरूआती दौर की कविताएं हैं लेकिन यह देखकर आश्चर्य होता है कि इनमें एक सहज परिपक्वता और प्रौढ़ता मौजूद है जो कवि शैलेन्द्र को अन्य कवियों से अलगाती है। उनका दूसरा कविता संग्रह 'श्वेतपत्र' लगभग दो दशकों के बाद 2002 में संघमित्रा प्रकाशन, विदिशा से प्रकाशित हुआ। 2004 में 'ईश्वर की चौखट पर' नाम से तीसरा संग्रह छपा। इसके बाद अब तक उनका नया संग्रह नहीं आया है यद्पि वह लगातार कविताएं लिख रहे हैं। तभी आलोचक सूरज पालीपाल कहते हैं कि 'शैलेन्द्र जी को हर वर्ष कैलेंडर छापने की आवश्यकता नहीं होती।' उन्होंने महज कविताएं ही नहीं लिखी बल्कि कहानियां, व्यंग्य और सार्थक साहित्यिक टिप्पणियां भी लिखीं। उनका एक कहानी संग्रह शारदा सदन प्रकाशन से 1996 में प्रकाशित हुआ था 2010 में उनका बेहद रुचिकर कथा रिपोर्ताज आया था 'पाँव जमीन पर' जिसके बारे में सुप्रसिद्ध कथाकार उदय प्रकाश कहते हैं- 'शैलेंद्र के लिए लोकजीवन किसी सेमिनार या किताब के जरिये सीखा गया शब्द नहीं है। लोकधर्मिता अपने बचपन के साथ उसकी शिराओं में बहने वाली एक अदृश्य नदी का नाम है। ऐसा बचपन जिसमें चॉकलेट और मल्टीप्लेक्स नहीं हैं, वीडियोगेम्स, मोबाइल्स और साइबर कैफे नहीं हैं, टाई, जूते, रंगीन बैग, टिफिन और स्कूल बसेज़ नहीं हैं। वहाँ एक प्रायमरी पाठशाला है, कच्ची-पक्की पहली कक्षा है, जिसमें एक चकित-सा बेहद संवेदनशील बच्चा है, जो अपनी काठ की पट्टी को घोंटना और चमकाना सीख गया है, जो बरू से वर्णमाला लिखना सीख रहा है। घर के ओसार या स्कूल के आसपास किसी पेड़ के नीचे सबसे अलग बैठा हुआ ब्लेड से कलम की नोक छील रहा है। जितनी अच्छी कलम की नोक होगी, अक्षर और शब्द उतने ही सुंदर बनेंगे।' आलोचना के क्षेत्र में तो उनकी प्रतिभा का लोहा सुप्रसिद्ध आलोचक नामवर जी भी मानते रहे। हाल ही में काव्यालोचना पर उनकी महत्वपूर्ण पुस्तक 'कविता का जनपक्ष' आई है। जो एक गंभीर विज्ञानसम्मत विश्लेषण है कविता आलोचना का। एक और महत्वपूर्ण पक्ष है शैलेन्द्र चौहान की रचनात्मकता का वह है उनका संपादन कौशल। 'धरती' नामक लघुपत्रिका एक गंभीर प्रयास है वैचारिक साहित्य की प्रस्तुति का। पिछले दिनों मीडिया पर एक महत्त्वपूर्ण गंभीर अंक निकला था 'धरती' का। हाल ही में 'वैज्ञानिक चेतना और भारतीय समाज' विषय केंद्रित एक समृद्ध अंक आया है जो विचारशील पाठकों के लिए बहुत उपयोगी है और चर्चा में है। पत्रकारिता से तो शैलेन्द्र जी का अभिन्न रिश्ता है। जब भी अवसर मिलता है वह समाचार पत्रों के लिए लिखते है बल्कि इन दिनों तो नियमित ही लिख रहे हैं। इस सबके बावजूद वह न अपने कामों की चर्चा करते है, न ही किसी अन्य से इसकी अपेक्षा करते हैं। ऐसी बहुमुखी प्रतिभा के धनी शैलेन्द्र चौहान को अड़सठ वर्ष का होने पर अनेकशः शुभकामनाएं। यह अत्यंत प्रसन्नतादायक है। हम उनके शतायु होने की कामना करते हैं ताकि हिंदी साहित्य संसार को वह और समृद्ध कर सकें।

विजय कनौजिया
ग्राम व पत्रालय-काही
जनपद-अम्बेडकर नगर

गीत

वक़्त के संग चलना होता है

वक़्त कभी अपना होता है
वक़्त कभी सपना होता है
साथ नहीं सीखा यदि चलना
फिर सब कुछ सहना होता है..।।

वक़्त सदा गतिमान रहा है
औरों से बलवान रहा है
नहीं किया गर कद्र वक़्त का
फिर एक दिन झुकना होता है..।।

जितनी चाहे दौड़ लगा लो
आसमान को चूम भले लो
अगर वक़्त का हुआ अनादर
फिर एक दिन रुकना होता है..।।

फ़क्र करो यदि सफल हुए हो
मगर ग़ुरूर कभी मत करना
जीत-हार और हार-जीत में
दोनों में लड़ना होता है..।।

साहस और धैर्य से ही तो
मिलती विजय सदा कछुए को
सफल जीवन के मूलमंत्र में
वक़्त के संग चलना होता है..।।

लेख

अंधविश्वास के खिलाफ आजीवन संघर्ष करने वाले महामानव थे - पेरियार

पेरियार इरोड वेंकट रामास्वामी का जन्म- 17 सितम्बर 1879 तमिलनाडु के इरोड नामक कस्बा में हुआ था। उनके पिता वेंकट नायकर (एक धनी व्यापारी) थे। उनकी माता चिन्ना थयम्मल थी।

आत्मसम्मान आंदोलन से मिला राष्ट्रव्यापी पहचान:-

पेरियार सिर्फ तमिलनाडु ही नहीं पुरे भारतवर्ष की सभ्यता, संस्कृति और राजनीति को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले महापुरूषों में सबसे अग्रणी हैं । वे नास्तिक, बुद्धिवादी, तर्कज्ञानी और मानवतावादी विचारक एवं मानव वैज्ञानिक थे । वे धर्म के घोर विरोधी थे । वे सामाजिक न्याय के पक्ष आजीवन खड़े रहे | वे गरीबों, पिछड़ों, दलितों और महिलाओं के अधिकारों के लिए हमेशा संघर्षरत रहे । उन्होंने द्रविड़ सभ्यता और संस्कृति को मज़बूत करने, जाति-पाति, छुआछूत,अंधविश्वास जैसे पाखंडवाद का उन्मूलन करने, जनता की सामाजिक और राजनीतिक चेतना को उन्नत करने के लिए राज्यव्यापी आत्म-सम्मान आन्दोलन चलाया ।जिसका लक्ष्य था-धार्मिक उन्माद का उन्मूलन, पाखंडवाद का उन्मूलन, छुआछूत का उन्मूलन।

गलत का हमेशा खुलकर करते थे विरोध:-

पेरियार ने वर्ण- व्यवस्था और जाति-व्यवस्था के विरूद्ध अपना अभियान जारी रखा। सार्वजनिक रूप से मूर्तियों को तोड़ने का अभियान चलाया और पुतलों को जलाने का कार्य किया। वर्ण-व्यवस्था को धार्मिक मान्यता प्रदान करने वाले मनुस्मृति जैसे तथाकथित ग्रंथों की प्रतियों को सार्वजनिक रूप से जलाया ।

1970 में यूनेस्को (UNESCO) ने उन्हें "नये युग का पैगम्बर, दक्षिण-पूर्व एशिया का सुकरात, समाज सुधार आन्दोलन का पिता, अज्ञानता, अन्धविश्वास और बेकार की रीति-रिवाज का दुश्मन" कहा |

प्रगतिशील विचारधारा में रखते थे विस्वास:-

सामाजिक अन्याय,धर्म के नाम पर पाखंड और अंधविश्वास के प्रचार-प्रसार कर लोगों को मूर्ख बना अपनी मनमानी की रोटी सेंकने वालों,बहुसंख्यक लोगों को वैज्ञानिक सोच विचार से दूर कर उनपर अपनी प्रभुत्व थोपने वालों एवं प्रगतिशील विचारधारा के रास्ते में बाधा उत्पन्न करने वाले तमाम लोगों के खिलाफ ई.वी.रामास्वामी नायकर 'पेरियार' की दहाड़ दुनिया में आज भी गूंजती है।वे कोई साधारण इंसान नहीं समाज सुधार के राष्ट्र नायक थे।

वे हिन्दुत्व को धोखा मानते थे:-

उन्होंने मूलनिवासियों के आत्मसम्मान के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया था। वे बहुत ही धीर गंभीर और निर्भीक एवं जीवट प्रवृत्ति वाले इंसान थे।वे कभी किसी के सामने झुकना नहीं जानते थे।अपनी बातें दृढ़ता से कहने के लिए और उसे धरातल पर उतारने के लिए जाने जाते हैं।वे कहते थे..

'मैं कहता हूँ कि हिंदुत्व एक बड़ा धोखा है, हम मूर्खों की तरह हिंदुत्व के साथ अब नहीं रह

गोपेंद्र कु सिन्हा गौतम
सामाजिक और राजनीतिक चिंतक
औरंगाबाद बिहार

सकते। यह पहले ही हमारा काफ़ी नुक़सान कर चुका है।इसने हमारी मेधा को नष्ट कर दिया है। इसने हमारे मर्म को खा लिया है।इसने हमारी संभावनाओं को गड़बड़ा दिया है। इसने हमें हज़ारों वर्गों में बाँट दिया है। क्या धर्म की आवश्यकता ऊँच-नीच पैदा करने के लिए होती है ? हमें ऐसा धर्म नहीं चाहिए जो हमारे बीच शत्रुता, बुराई और घृणा पैदा करे।'

औपचारिक शिक्षा के बावजूद तर्कशीलता ने दिलाई पहचान:-

कहा जाता है पेरियार को केवल चौथी कक्षा तक औपचारिक शिक्षा प्राप्त हुई थी।10 साल की उम्र में पढ़ाई छोड़कर पिता के व्यापार में लग गए। यद्यपि रामास्वामी नायकर शुरू से ही तार्कशील और चिंतन प्रवृत्ति के थे परन्तु उनका परिवार कट्टर धार्मिक और रूढ़िवादी था।पिता से वाद-विवाद के कारण उन्होंने धर्म और ईश्वर की सत्ता को जाँचने के लिए अपना घर छोड़ दिया। ज्ञान की तलाश में वे काशी पहुंचे जहां उन्होंने ने संन्यासी जीवन का वरण किया।लेकिन बहुत ही जल्दी उन्हें ईश्वर के मिथ और संन्यास के पाखंड का बोध हो गया।वे वापस घर लौट आए।

स्वाधीनता आंदोलन में की थी सक्रिय भागीदारी:-

उन्होंने देश में चल रहे स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया।फिर भारत में कांग्रेस द्वारा चलाए जा रहे स्वराज आंदोलन और उसके कार्यक्रमों से प्रभावित हो

1919 में कांग्रेस से जुड़ गए।असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। अपने सांगठनिक क्षमता और सक्रियता के बदौलत 1922 में रामास्वामी मद्रास प्रांत कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

सामाजिक सुधार के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहे:-

शराबबंदी, अदालतों के बहिष्कार से लेकर 'वायकोम सत्याग्रह' में उन्होंने अपनी सक्रिय भागीदारी की। त्रावणकोर (केरल) के वायकोम मंदिर की सड़क से दलितों को गुजरने के अधिकार के लिए 1924-25 में हुए इस सत्याग्रह का नेतृत्व खुद महात्मा गांधी ने किया। फलस्वरूप त्रावणकोर की महारानी और गांधी के बीच हुए समझौते से दलितों को अधिकार प्राप्त हुआ। लेकिन कांग्रेस में ब्राह्मणों के वर्चस्व और ब्राह्मणवादी नीतियों के कारण जल्दी ही पेरियार का इससे मोहभंग होने लगा।

मद्रास प्रांत के गुरुकुलों में ग़ैर-ब्राह्मण बच्चों के साथ भेदभाव होता था। कांग्रेस द्वारा वित्त-पोषित इन गुरुकुलों में ब्राह्मण और ग़ैर-ब्राह्मण बच्चों के बैठने से लेकर भोजन में होने वाले भेदभाव को दूर करने के लिए पेरियार ने आवाज़ उठाई। कांग्रेस नेतृत्व ने पेरियार की मांग पर ध्यान नहीं दिया। दूसरी ओर जब 1925 में उन्होंने मद्रास-कांग्रेस के सामने संगठन में ग़ैर-ब्राह्मणों को अधिक भागीदारी देने का प्रस्ताव रखा उसे भी खारिज कर दिया गया। जिसके बाद पेरियार ने 1925 में कांग्रेस को छोड़कर 'आत्म सम्मान' आंदोलन की शुरुआत की।

समतावादी समाज के पैरोकार थे:-

उनके अनुसार मद्रास प्रांत में उस समय ब्राह्मणों का शासन-प्रशासन में वर्चस्व था। केवल 3 फ़ीसदी आबादी वाले ब्राह्मणों का समाज, राजनीति और धर्म के सभी पायदानों पर कब्जा था। शूद्रों और अति शुद्रों (दलित) की स्थिति बहुत नाजुक थी। जाति, वर्ण, धर्म और ईश्वर के नाम पर शूद्र और दलितों का अपमान और शोषण होता था। जिसके प्रतिउत्तर में समता पर आधारित समाज के स्थापना के लिए शुरू किया गया 'आत्मसम्मान आंदोलन' ने ब्राह्मणों के वर्चस्व को चुनौती दी। जाति, धर्म और ईश्वर की अवधारणा को खारिज करते हुए पेरियार ने समानता पर आधारित समाज बनाने की अवधारणा प्रस्तुत किया।

सम्राज्यवाद से मुक्ति से पहले सामाजिक मुक्ति को जरूरी मानते थे:-

शाहूजी महाराज, ज्योतिबा फुले और डॉक्टर बाबा साहब भीमराव आंबेडकर की तरह पेरियार ने भी साम्राज्यवाद से मुक्ति के पहले सामाजिक मुक्ति की मांग की। पेरियार का कहना था, हमें स्वराज नहीं बल्कि स्वाभिमान (आत्मसम्मान) का राज चाहिए।वे कहते थे 'आत्मसम्मान हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। हमें यह मानना होगा कि स्वराज तभी संभव है जब पर्याप्त आत्मसम्मान हो।

मूलनिवासियों के हक में लड़ते रहे:-

ज्योतिबा फुले की तरह पेरियार भी शूद्रों और अछूतों को भारत का मूल निवासी मानते हैं। विदेशी-ब्राह्मण-आर्यों ने शूद्रों- अछूतों को ग़ुलाम बनाया। इस ग़ुलामी को अनवरत जारी रखने के लिए जाति और वर्ण व्यवस्था उन पर थोपी गई। धर्म और ईश्वरवाद के नाम पर मूलनिवासियों, शूद्रों-दलितों और स्त्रियों का शोषण किया गया। धर्म के पाखंड का पेरियार ने मुखर होकर विरोध किया। ईश्वरवाद की तार्किक आलोचना करते हुए उन्होंने कहा, 'मनुष्य के अतिरिक्त पृथ्वी के किसी प्राणी के लिए ईश्वर का कोई औचित्य नहीं है।

पेरियार ने 'सच्ची रामायण' लिखकर राम के चरित्र को प्रश्नांकित किया है।

आत्मसम्मान आंदोलन के 1930 के वार्षिक जलसे में स्त्रियों और उत्पीड़ित वर्गों के लिए समान अधिकारों की माँग की गई। पेरियार ने स्त्री की पराधीनता को स्पष्ट करते हुए लिखा,

'पुरुष स्त्री को अपनी संपत्ति मानता है और यह नहीं मानता कि उसके ही समान स्त्री की भी भावनाएँ हो सकती हैं।'

धर्म की बेड़ियों में जकड़ी स्त्री-पराधीनता को बेपर्दा करते हुए पेरियार पूछते हैं,

'हिंदू- धर्म में ज्ञान की और धन की देवियों को पूजा जाता है। फिर ये देवियाँ महिलाओं को शिक्षा तथा संपत्ति का अधिकार प्रदान क्यों नहीं करतीं?

महिलाओं को समान अधिकार के लिए संघर्षरत रहे:-

महिलाओं को तर्कसंगत ज्ञान और वैश्विक मामलों से संबंधित पर्याप्त शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्हें ऐसे साहित्य, इतिहास या कहानियों से दूर रखा जाना चाहिए जो अंधविश्वास और भय को जन्म देती हैं। महिलाओं की पराधीनता के कई कारणों में से प्रमुख कारण यह है कि उन्हें संपत्ति का अधिकार नहीं है।'

यूरोपीय देशों का दौरा कर किया वहां के व्यवस्था का अवलोकन:-

1931 में उन्होंने रूस, जर्मनी, इंग्लैण्ड, स्पेन, फ्रांस तथा मध्यपूर्व के अन्य देशों का भ्रमण किया। उन्होंने रूस के कल-कारखाने, कृषि-फार्म, स्कूल, अस्पताल, मजदूर संगठन, वैज्ञानिक शोध केन्द्र, उत्तम कला केन्द्र संस्थाओं का अवलोकन किया जिससे बहुत प्रभावित हुए।

मूलनिवासियों,शूद्रों, अछूतों और स्त्रियों के अधिकारों के लिए समर्पित, ब्राह्मणवाद और हिंदुत्व के विरोधी रामास्वामी नायकर को उनके अनुयायियों ने 'थंथाई' (पिता) 'पेरियार' (महान) की उपाधियों से विभूषित किया।

95 वर्ष की उम्र में 24 दिसम्बर 1973 को तमिलनाडु के वेल्लोर क्रिश्चन हॉस्पीटल में उनका निधन हो गया । दूसरे दिन उनके शव को चेन्नई के पेरियार थाइडल में एक सादे समारोह में लकड़ी के ताबूत में उन्हें दफना दिया गया। पर उनका विचार,सिद्धांत आज भी दुनिया में वैज्ञानिक मानवतावाद को बल प्रदान कर रहा। जब कभी भी देश और समाज में अंधकार घर बनाने लगता है तब तब पेरियार द्वारा दी गई रोशनी देश और समाज को दिशा दिखाने का काम करता है।

लेख

समयकाल के चलते मुहावरों में शब्दों के बदलते स्वरूप

जैसा हम सभी जानते हैं कि विशेष अर्थ प्रकट करने वाले वाक्यांश को ही हम सभी 'मुहावरा' कहते हैं। हालाँकि 'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा से लिया गया है लेकिन 'मुहावरे' का पूर्ण पर्यायवाची प्रचलन में है ही नहीं। यह सर्वविदित है की भाषा को सुदृढ़, गतिशील और रुचिकर बनाने में मुहावरा एक सशक्त माध्यम है। लेकिन महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि 'मुहावरा' अपने आप में पूर्ण वाक्य नहीं होता, इसीलिए हम इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं कर पाते हैं।जबकि मुहावरे का ठीक अर्थ समझ, सही प्रयोग रचना को न केवल सजीव बल्कि प्रवाहपूर्ण एवं आकर्षक बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

किसी घटना विशेष के सारांश को एक वाक्य में इस तरह प्रकट कर देना जिससे सुनने वाले को या पढ़ने वाले को उस वाक्यांश से अर्थ समझ में आ जाय यही मुहावरे की विशेषता होती है। लेकिन मुहावरे के शब्दों में परिवर्तन या उलटफेर अनुभव-तत्व को नष्ट कर देता है। इसी तथ्य पर आपका ध्यान आकर्षित कर यह बताना चाहता हूँ कि हम आज जो मुहावरे प्रयोग में पाते हैं उनमें से कुछ मुहावरे अपने असली रूप में नहीं हैं बल्कि समयकाल के चलते ये अपभ्रंश यानी बिगड़ते बिगड़ते बिगड़े रूप में ही प्रचलन में हैं। इसी तथ्य को स्पष्ट करने हेतु यहाँ कुछ उदाहरण आपके समक्ष रख रहा हूँ

एक मुहावरा सुनने में आता है - **"अल्लाह मेहरबान तो गधा पहलवान"**। अब सवाल उठता है कि पहलवानी से गधा का क्या वास्ता। खोजने पर पता चला कि दरअसल, मूल मुहावरे में गधा नहीं गदा शब्द था। चूँकि फारसी में गदा का अर्थ होता है भिखारी जबकि हिन्दी में हम गदा एक अस्त्र के लिये प्रयोग करते हैं। चूँकि आमलोग फारसी के गदा शब्द से परिचित नहीं थे इसलिये कालांतर में गदा शब्द के बदले गधा शब्द प्रचलन में आ गया। मूल मुहवारे का अर्थानुसार अल्लाह की मेहरबानी हो तो भिखारी भी ताकतवर हो जाता है।

इसी तरह आपने यह भी सुना होगा - **'किस्मत मेहरबान तो गधा पहलवान'**। यहाँ भी फारसी के गदा शब्द से परिचित नहीं होने के चलते कालांतर में गदा शब्द के बदले गधा शब्द प्रचलन में आया। यहाँ भी मूल मुहवारे का अर्थानुसार किस्मत मेहरबान हो तो भिखारी भी पहलवान हो जाता है। इसी क्रम में एक दूसरा मुहावरा लेते है - **"अक्ल बड़ी या भैंस"**। अब यहाँ भी यही सवाल उठता है कि अक्ल से भैंस का क्या रिश्ता। खोजने पर पता चला कि दरअसल, मूल मुहावरे में भैंस नहीं वयस शब्द था अर्थात मूल मुहावरा था "अक्ल बड़ी या वयस"। चूँकि वयस का अर्थ होता है उम्र इसलिये मुहावरे का अर्थ था अक्ल बड़ी या उम्र। लेकिन यहाँ उच्चारण दोष के कारण वयस शब्द पहले पहले वैस बना फिर कालान्तर में बदल कर भैंस बन प्रचलन में आ गया। आपके ध्याननार्थ बता दूँ कि इसी वयस शब्द से बना है वयस्क।

इसी क्रम में एक अन्य मुहावरा लेते है - **"धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का"**। अब जब हम विचार करते है तब पाते हैं कि यदि किसी धोबी ने कोई कुत्ता पाला है तो बेचारा कुत्ता धोबी के साथ घर में भी रहता है और घाट पर भी जाता है। तब शोध करने पर पता चला कि मूल मुहावरे में कुत्ता नहीं कुतका शब्द है।लकड़ी की

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'
IV E 508 जय नारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर (राजस्थान)

खूँटी जिस पर कपड़े लटकाए जाते हैं को संक्षेप में कुतका कह कर पुकारते हैं। चूँकि वह लकड़ी की खूँटी घर के बाहर लगी होती है इसलिये गंदे कपड़े उस पर लटका देते थे और धोबी उस कुतके से गंदे कपड़े उठाकर घाट पर ले जाता और धोने के बाद धुले कपड़े उसी कुतके पर टाँगकर चला जाता। इसलिये ही **'धोबी का कुतका ना घर का ना घाट का'** मुहावरा बना। लेकिन यहाँ भी कालांतर में कुतका शब्द के बदले कुत्ता शब्द प्रचलन में आ गया।

अन्त में यही बताना चाहता हूँ कि एक रचनाकार को संक्षेप में प्रभावशाली तरीके से भाव प्रगट करने में मुहावरे बहुत ही सहायक होते हैं और सही मुहावरे का चयन तो रचनाकार की लेखनी में चार चाँद लगा देता है।

****

लेख (अध्यात्म)

एक ओंकार के प्रणेता बाबा नानक

बलविन्दर बालम गुरदासपुर

सिक्ख मत के संचालक एंव प्रथम गुरू बाबा नानक को एक -ओंकार के रचयिता माना जाता है। जपुजी, आसा दी वार, बारह माह, रागतुखारी, पट्टी मांझ तथा मल्हार की वार जैसी उच्च कोटि के रचनाएं लिखकर भारत की धरती को, मानवता की सच्ची कदरें-कीमतें बख्शी हैं। गुरू नानक देव जी की बाणी एक ओंकार की ही समस्त शाखाएं हैं। समस्त बाणी सच तथा यथार्थ की बुनियाद पर है जो इन्सानी कदरों कीमतों को उजागर करती है। यह अद्वितीय बाणी है। मानवता के लिए शिक्षाप्रद बाणी है। अंधविश्वास से दूर तथा सबके कल्याण की इलाही बाणी।

एक ओंकार काआकार देखने से ही हृदय की शान्ति मिलती है। इसके उच्चारण से, जाप करने से तन, मन, रूह, हृदय शांत तथा एकाग्र हो जाते हैं। इसके उच्चारण से मनुष्य स्वयं ही पवित्रता तथा आध्यात्मिकता से जुड़ जाता है। एक आनंदमयी अवस्था का एहसास हृदय में तैरता है। समस्त बाणी ऋतुआंे, दिन, वर्ष, माह, क्षण, प्रकृति, ब्रह्मांड, सचखण्ड, धरती, आकाश, पानी, अग्नि, वायु (पांच तत्व), समाज, सच्चाई, रागों, संगीतमय इत्यादि नियमों में संगठित है। समस्त बाणी बहरों (ंवज़न) में है। अनेक भव्य प्रतीकों-बिम्बों, उपमाओं, अलंकारों से भरी हुई है बाणी। एक ओंकार का जाप विश्वास पैदा करता है और यह विश्वास कर्मठता का अस्तित्व उजागर करता है। इस आकार ने परमात्मा के अस्तित्व को सही अर्थ दिए हैं। एक-ओंकार बाणियों की राहनुमाई करता है। इस शब्द की आवाज़, बनावट, उच्चारण इतना शुद्ध है कि मानव में शक्ति, शान्ति, प्रभु का विश्वास पैदा करता है। यह शब्द ही परमात्मा का स्वरूप है। इस शब्द से ही परमात्मा नजर आता है एक ओंकार की बनावट ही प्रभु वाणी का अस्तित्व है।

१का उच्चारण एक है। ओंकार का उच्चारण ओंकार है। सतिनाम, करतापुरख, रिनभओ, निरवैर, अकाल मूरत, अजूनी सैभंग, गुर प्रसादि।। यह मानवता का मूल मंत्र है। मूल मंत्र का अर्थ है प्राथमिक उपदेश। इसके अर्थ इस प्रकार हैंः आकाल पुरख परमात्मा एक है जो सारी सृष्टि में व्यापक है। उसका नाम सदैव अस्तित्व वाला है। यह सारी सृष्टि को पैदा करने वाला है। वह भय से रहित है। वह वैर, दुश्मनी से रहित है। उसका स्वरूप काल से दूर है भाव उस के ऊपर समय का कोई प्रभाव नहीं। वह बचपन, जवानी, वृद्धावस्था, मृत्यु से परे है। वह योनियों में नहीं आता। उसका अस्तित्व, उसका प्रकाश अपने आप से हुआ है। एसे स्वरूप वाला परमात्मा शब्द गुरू सतगुरू की कृपा द्वारा ही मिलता है।

आदि सच, जुगादि सचु।। है भी सच, नानक, होसी भी सच।। यह श्लोक मंगलाचरण जैसा है। इसमें गुरू नानक देव जी ने अपने इष्ट का स्वरूप ब्यान किया है, जिसका जप-सिमरण करने का उपदेश इस सारी बाणी, जप में किया गया है (जपु जी साहिब से), गुरू नानक देव जी की बाणी में शब्दों की मिठास, संदेश, शुद्ध-शांत तथा स्वस्थ कर देता है। प्रेम तथा सेवाभाव उत्पन होते हैं।

बाबा नानक का जन्म 15 नवम्बर सन् 1469 ई. को माता तृप्ता की कोख से, पिता मेहता कल्याण राय जी (बेदी वंश) के घर राय भोए की तलवंडी श्री ननकाना साहिब जिला शेखपुरा (पाकिस्तान) में हुआ। कवि बाबा नानक की शादी बीबी सुलखणी जी सुपुत्री श्री मूल चंद जी बटाला निवासी (जिला गुरदासपुर, पंजाब) के साथ 1487 ई. को हुई। उनके दो सुपुत्र थे-बाबा श्रीचन्द्र जी तथा बाबा लक्ष्मी दास जी।

बाबा नानक जी के श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज 947 शब्द 19 रागों में हैं। उन्होने देश-विदेश के लोगों को रास्ता दिखाया। भाई बाला तथा मरदाना उनके संगी थे। उनका यह संग सांझीवालता तथा धर्म-जाति रहित, मानवतावादी था। उनके जीवन प्रसंग, घटनाएं, यात्राएं भी दुर्लभ तथा संदेश परक हैं। बचपन में उन्होने पांधे, पुरोहित तथा वैद्य को उपदेश दिया। सच्चा सौदा किया, मोदी खाने तेरा तेरा तोलना, चार महान उदासियों (यात्राएं), ऊंच-नीच का भेदभाव खत्म करना, नाम जपना, बांट कर खाना तथा धर्म की कमाई करने की शिक्षा कर्मठता, विभिन्न धर्म के भ्रम, कुरीतियों को तोड़ना भी उनके महान कार्यों में शुमार हैं।

आप हरिद्वार, काशी, गया, ऐमनाबाद, मथुरा, जगन्नाथपुरी, जैसलमेर, अजमेर, पुष्कर आबू, उज्जैन, नादेड़, विदर, रामेश्वरम्, संगलादीप, सोमनाथ, द्वारका, ज्वालामुखी, मणिकरण, सुकेत मंडी, चम्बा, गोरखपुर, पीलीभीत, उत्तराकाशी, तिब्बत, लंका, भूटान, नेपाल, चीन, ईरान, गुजरात, काबुल, मुल्तान, सिंध,

, बलोचिस्तान, मक्का, मदीना, बगदाद, जलालाबाद, हसन अबदाल, पुन्छ, बर्मा आदि कई दूर-दूर के क्षेत्रों में गए।
बाबर, मलिक भागो, जीवन भूमियां, पीर बहलोल, पण्डित ब्रह्मदास, राम बुलार, गोपाल पांधा, हरदयाल, पुरोहित, दौलत खां, लोधी, भाई लालो, भाई मरदाना, मनमुख भागीरथ, दुनी चंद, शेख सज्जन, हमजा गौंस, साल सराए, नूर शाह, कौटा राक्षस, वलि कंधारी, राजा शिभनाथ इत्यादि को अपने उपदेश विचारों से प्रभावित किया तथा शुभ कर्म, करनी, कथनी तथा कर्मठता का उपदेश दिया। उनके समकालीन बादशाह, बहिलोल, सिकंदर, इब्राहीम लोधी, बाबर तथा हुमायंू हुए हैं।
बाबा नानक को उर्दू, गुरमुखी, संस्कृत, फारसी आदि विद्या (भाषा) का ज्ञान था। उन्होने लगभग 22 वर्ष देश विदेश में पैदल चल कर धर्म प्रचार किया। अंधविश्वास तथा अधर्म का खण्डन किया।
आपने पांच बड़ी उदासियां की। प्रथम उदासी (यात्रा) में आप ने अंधविश्वास के खिलाफ प्रचार किया। आप प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ जैसे के जगन नाथपुरी, गया, बनारस, हरिद्वार, कुरूक्षेत्र आदि स्थानों में भी गए। द्वितीय उदासी में आप पंजाब से संगलदीप (लंका) तक गए तथा लोगों के रूबरू हुए तथा उनको सही मार्ग पर चलने का संदेश दिया।

सुनीता मिश्रा
भोपाल

लघुकथा

"परिवर्तन"

मैं और सुधि कोर्ट से निकले,कि बाबूजी ने कहा"तुम लोग घर चलो मै यहाँ से ऑफ़िस जाऊँगा "।
मैने सुधि को लेकर घर की ओर रुख किया। दरवाजा माँ ने ही खोला,हम दोनों ने उनके चरण स्पर्श किये ।वे मुँह से कुछ बोली नहीं,बस पीठ पर हाथ रख दिया ।

हमें बैठक मे बैठने का इशारा कर वे घर के अंदर कमरे में जाने लगीं ,मैं भी उनके पीछे-पीछे हो लिया।उन्होंने एक थाली ली और उसमे सामान रखने लगी।हल्दी कुकूं,चावल साड़ी और भी बहुत कुछ---
मैं माँ को देख रहा था,वो नियम धरम वाली सात्विक,धार्मिक महिला रहीं ।दादी जब तक रहीं उनकी हर बात को माँ ने दिल से माना ।दादी के समय चूल्हे में लकड़ियाँ डालने से पहिले लकड़ियों पर पानी का छिड़काव कर शुद्ध किया जाता ,उसके बाद चूल्हा जलाया जाता,किस तरह से माँ ,और दादी उसके उठते धुएँ से चूल्हा फूँकते-फूँकते खाँसती,अपनी आँखें पोछतीं ,मुझे अब भी याद है।

रसोई के बाहर सफेद खड़िया से लकीर खींची जाती ,माँ और दादी के सिवा हम सबका प्रवेश निषिद्ध रहता वहाँ ।एक दिन तो चूल्हे पर दूध उफन कर बाहर गिरता रहा,माँ किसी काम मे व्यस्त थीं ,मैं चौके बाहर बैठा नाश्ता कर रहा था,दौड़ा दूध का बरतन उठाने कि माँ ने रोक दिया"जूठे मुँह,चौके मे न घुसना,गिर जाने दे दूध।"

सूर्योदय से पहिले माँ और दादी का स्नान हो जाता ।पूजा,तुलसी अर्चन होता,माँ दादी को रामायण का पाठ करके सुनातीं ।घर धूपबातऔर फूलों की खुशबू से महक उठता।
उसके बाद माँ चौके में कदम रखतीं ।दादी के रहते तक तो लहसुन प्याज पूरी तरह वर्जित था।बाद मे माँ ने मेरे और बाबूजी के लिये खाने मे इनका प्रयोग किया।लेकिन वे स्वयं के लिये अलग से सादा खाना बनाती ।
बाद मे गैस आ जाने पर माँ को चूल्हे मे लकड़ियाँ फूँकने से निजात मिली।पर उनका सात्विक भोजन,धार्मिक आस्था ,नियम धरम वैसे ही अनवरत रहे।
मैं बहुत डर रहा था, मैंने सुधि से विजातीय विवाह किया था।सुधि का घर पूर्ण रूपेण नॉन वेज था।कोर्ट मेरिज की सलाह बाबूजी ने ही हमें दी थी,साथ ही सहयोग भी किया।पर माँ--------

माँ थाल ले बैठक में आईं ,हम दोनों को पास-पास बैठने के लिये कहा।मुझसे कहा कि मै सुधि की माँग में सिन्दूर भरूँ,मंगल सूत्र निकाल कर दिया कि उसे पहना दूँ ।मै अभिभूत, माँ का कहा करता रहा।माँ ने हम दोनों का टीका ,अक्षत किया।आरती उतारी ।सुधि की गोद मे आभूषण और नये कपड़े दिये।सुधि को गले से लगा लिया।फिर मेरी ओर देख कर बोलीं --

"ऐसे क्या देख रहा अपनी माँ को।हमे तो तुम्हारे बाबूजी ने महिना भर पहिले ही बता दिया था।कहा था उन्होंने ,कल्याणी तुम्हारा बबुआ दूसरी जाति की लड़की,तुम्हारी बहू बना कर लाने वाला है।अब अपने आपको बदलते समय के परिवर्तन के लिये तैयार कर लो।"

फिर सुधि से बोली--बिटिया उठो,अंदर चलकर,भगवान को प्रणाम करो।और पूर्वजो को भी प्रणाम कर उनका आशीर्वाद लो"

प्रकृति रक्षति रक्षितः

संस्कृत भाषा मे लिखित श्लोक "धर्मो रक्षति रक्षितः" जिसका वर्णन महाभारत व मनुस्मृति में मिलता है का अर्थ है कि जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है और पूर्ण श्लोक "धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः/ तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्" का अर्थ है जो मनुष्य धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म की रक्षा करने वाला मनुष्य कभी पराजित नहीं होता, क्योंकि उसकी रक्षा स्वयं धर्म (ईश्वर, मनुष्य, प्रकृति, ब्रह्माण्ड, इत्यादि) करता है। आज जब मानव प्राकृतिक असंतुलन की वजह से अनगिनत गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है तो ठीक इसी श्लोक की भाँति "प्रकृति रक्षति रक्षितः " मतलब जो प्रकृति की रक्षा करता है, प्रकृति भी उसी की रक्षा करती है, की महती आवश्यकता है। मानव जीवन की उत्पत्ति के साथ ही प्रकृति ने मनुष्य को उसकी जरूरत की हर चीज़ मुहैया कराई, लेकिन तदनुपरांत मनुष्य की जरूरतें ना ख़त्म होने वाली ख़्वाहिशों और दिखावट में तब्दील होने लगी; मनुष्य और प्रकृति के बीच एक जंग छिड़ गई, जिसका कुपरिणाम दोनों को ही झेलना पड़ रहा है। प्रकृति अपने दर्द का निवारण खुद कर सकती है लेकिन उसकी समय अवधि ज्यादा होती है इसलिए हम मानव जाति से यह अपेक्षा की जाती है कि हम प्रकृति को मलहम लगाने में अपने स्वार्थ से उठकर मदद करें ताकि प्रकृति हमें हमारी जरूरत की चीज़ें - साफ़ हवा, पानी, अन्न आदि बिना किसी भेदभाव के प्रदान करती रहे।

दुनिया का हर धर्म शांति का पैरोकार है कम से कम तब जब प्रकृति संरक्षण की बात होती है। विश्व के सभी धर्मों में पर्यावरण को संरक्षित करने की बात कही गई है। प्रकृति के संरक्षण के लिये विभिन्न धार्मिक समूहों द्वारा वैश्विक या स्थानीय स्तर पर कई प्रयास किये जा रहे हैं। पाकिस्तान में स्थित कब्रगाहों में प्राचीन वृक्षों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं क्योंकि इनको काटना गुनाह माना जाता है, लेबनान के मैरोनाईट चर्च ने हरीसा के जंगलों को पिछले 1,000 वर्षों से संरक्षित रखा है, थाईलैंड के बौद्ध भिक्षुओं ने संकटग्रस्त जंगलों की रक्षा हेतु वहाँ छोटे-छोटे विहारों की स्थापना की है तथा उसको पवित्र जंगल घोषित किया गया है।

इसके अलावा जर्मनी के 300 चर्चों ने स्थानीय समुदायों के सहयोग से सौर ऊर्जा प्रणाली अपनाई है तथा वृहत स्तर पर इसका लगातार प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। अमेरिका में रहने वाले अफ्रीकी मूल के लोगों द्वारा क्वान्ज़ा त्योहार प्रकृति संरक्षण का एक उपयुक्त उदाहरण है। वर्ष 1986 में इटली के शहर असीसी में विश्व वन्यजीव कोष द्वारा 'असीसी घोषणा' का आयोजन किया गया। इसमें विश्व के पाँच प्रमुख धर्मों (ईसाई, हिंदू, इस्लाम, बौद्ध तथा यहूदी) के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था ताकि वे इस मुद्दे पर सुझाव प्रस्तुत कर सकें कि उनके धर्मों में प्रकृति संरक्षण हेतु क्या प्रावधान है तथा किस प्रकार वे योगदान कर सकते हैं। वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु विभिन्न धर्मों के सहयोग से अलायंस ऑफ रिलिजन एंड कंजर्वेशन नामक संगठन की स्थापना वर्ष 1995 में की गई थी। विश्व वन्यजीव कोष द्वारा तथा अलायंस ऑफ रिलिजन एंड कंजर्वेशन के सहयोग से 'लिविंग प्लैनेट कैंपेन' नामक एक मुहिम शुरू की गई। इसके तहत विश्व के प्रमुख धर्मों ने पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य करने की प्रतिबद्धता

सलिल सरोज
कार्यकारी अधिकारी
लोक सभा सचिवालय , नई दिल्ली

प्रदर्शित की तथा उनकी इस प्रतिबद्धता को 'जीवंत पृथ्वी के लिये पवित्र उपहार' का नाम दिया गया। इस अभियान के तहत वकालत, शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि, संपत्ति, जीवनशैली तथा मीडिया के क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करना शामिल है। इस प्रतिबद्धता के तहत जैन धर्म ने अंतर्राष्ट्रीय जैन व्यापार पुरस्कार प्रारंभ किया है। इसके तहत उन कंपनियों को पुरस्कृत किया जाता है जिन्होंने पर्यावरणीय प्रभावों को कम करते हुए प्रगति की है। इसी प्रकार स्वीडन के लूथरन चर्च के सहयोग से स्वीडन में नेशनल फॉरेस्ट स्टीवार्डशिप काउंसिल की स्थापना की गई।

भारतीय परिप्रेक्ष्य की बात करें तो लोक संस्कृति में मानव की भूमिका प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षक/प्रबंधक के रूप में मानी गई है। इसमें मानव के साहचर्य के हजारों सन्दर्भ हैं और पर्यावरण के साथ उत्तम सामंजस्य रखने की सीख दी गई है। पेड़ों की पूजा करने से लेकर धरती व नदियों को मां के पवित्र सम्बोधन से नवाजने का संस्कार भी है। हमारे लोकगीत, लोक नृत्य, लोक कथाएं, लोक त्योहार - ये सब प्रकृति-प्रेम को प्रकट करने वाले हैं। मनोरंजन, खेतों में बुवाई, धान की कटाई आदि अवसरों पर हमारे पुरखे मिल-जुलकर जल, पृथ्वी, वायु अग्नि और आकाश की महिमा का बखान करते थे। कृतज्ञता का भाव उनके रोम- रोम से प्रकट होता था। लोक कहावतों व लोक

कथाओं पर नज़र डालें तो उनकी सीख में पर्यावरण के प्रति श्रद्धा का भाव झलकता है। रामायण, महाभारत, गीता, वायु-पुराण, स्कन्द पुराण, भविष्य पुराण, वराह पुराण, ब्रह्म पुराण, मार्कण्डेय पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण, श्री विष्णु पुराण, भागवत पुराण, श्रीदेवी भागवत पुराण वेद, उपनिषद तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थ, पेड़-पौधे, जीव-जन्तुओं पर दया करने की सीख देते हैं। मानसिक शान्ति, शारीरिक सुख, इन सबकी पूर्ति के साधन प्राकृतिक सम्पदा ही है। गेहूँ, जौ, तिल, चना, चन्दन, लाल पुष्प, केसर, खस, कमल, ताम्बूल, श्वेत पुष्प, बांस, मिट्टी, फल, तुलसी, हल्दी, पीत-पुष्प, शहद इलाइची, सौंफ, उड़द, काले-पुष्प, सरसों के फूल, मुलेठी देवदार, बिल्व वृक्ष की छाल, आम, पला, खैर, पीपल, गूलर, दूब, कुश आदि को संरक्षित रखने के उद्देश्य से इन्हें किसी दिन,त्योहार, देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना से जोड़ा गया है। औषधि के रूप में फलों तथा जड़ी-बूटियों की रक्षा करने की बात कही गयी है और इन्हें घरों के निकटस्थ लगाकर पर्यावरण को स्वच्छ रखने की सलाह दी गयी है, जैसे- अंगूर, केला, अनार, सेब, जामुन, प्याज, लहसुन, गाजर, मूली, नींबू, अदरक, आंवला, घीया, बादाम, आम, टमाटर, अखरोट, अजवाइन, अनानास, अश्वगंधा, गिलोय, तम्बाकू, तरबूज, तुलसी, दालचीनी, धनिया, पुदीना, संतरा, पान, पीपल, बबूल, ब्राह्मी बूटी, काली मिर्च, लाल मिर्च, लौंग, हरड़, बहेड़ा आदि अनेक बूटियों का प्रयोग करने से मनुष्य निरोग रह सकता है।

हमें प्रकृति संरक्षण सीखने के लिए किसी अन्य देश या तकनीक की आवश्यकता नहीं है। हमारे धर्म, शास्त्रों में यह बहुतायत में लिखा गया है और हमारे पूर्वजों ने प्रकृति संरक्षण के अनेकों बेहतरीन उपाय बताए हैं जिसकी लिए ज्यादा धन की भी आवश्यकता नहीं है। उन्होनें इसे हमारी आदत में शामिल कर के एक रोज़मर्रा की चीज़ की तरह पेश किया था ना कि आज की तरह किसी ख़ास दिन पर वृक्षारोपण कार्यक्रम की तरह। संरक्षण में सिर्फ पेड़ लगाना ही नहीं बल्कि उनकी जान बचाना भी शामिल है और यह किस तरह किया जा सकता है, यह हमें विरासत में मिली है जिसे हमें पुनर्जीवित करने की और उन्हें संभालने की ख़ास जरूरत है। हमारे ऋषि जानते थे कि पृथ्वी का आधार जल और जंगल है. इसलिए उन्होंने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है- 'वृक्षात् वर्षति पर्जन्य: पर्जन्यादन्न सम्भव:' अर्थात् वृक्ष जल है, जल अन्न है, अन्न जीवन है। जंगल को हमारे ऋषि आनंददायक कहते हैं- 'अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु' यही कारण है कि हिन्दू जीवन के चार महत्वपूर्ण आश्रमों में से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास का सीधा संबंध वनों से ही है। हम कह सकते हैं कि इन्हीं वनों में हमारी सांस्कृतिक विरासत का संवर्धन हुआ है। हिन्दू संस्कृति में वृक्ष को देवता मानकर पूजा करने का विधान है। वृक्षों की पूजा करने के विधान के कारण हिन्दू स्वभाव से वृक्षों का संरक्षक हो जाता है। सम्राट विक्रमादित्य और अशोक के शासनकाल में वन की रक्षा सर्वोपरि थी। वैदिक काल में जीवित वृक्षों को काटना प्रतिबंधित था और ऐसे कृत्यों के लिए दंड निर्धारित किया गया था। उदाहरण के लिए, याज्ञल ६ए, स्मृति, ने पेड़ों और जंगलों को काटने को दंडनीय अपराध घोषित किया है और 20 से 10-रानी का दंड भी निर्धारित किया है। चाणक्य ने भी आदर्श शासन व्यवस्था में अनिवार्य रूप से अरण्यपालों की नियुक्ति करने की बात कही है। पर्यावरण संरक्षण के कानून की दृष्टि से मुगल सम्राटों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनके महलों के चारों ओर फलों के बागों और हरे भरे पार्कों की स्थापना, केंद्रीय और प्रांतीय मुख्यालय, सार्वजनिक स्थान, नदियों के किनारे और घाटी में वे गर्मी के मौसम के स्थानों या अस्थायी मुख्यालय के रूप में इस्तेमाल करते थे।

हमारे महर्षि यह भली प्रकार जानते थे कि पेड़ों में भी चेतना होती है, इसलिए उन्हें मनुष्य के समतुल्य माना गया है। ऋग्वेद से लेकर बृहदारण्यकोपनिषद्, पद्मपुराण और मनुस्मृति सहित अन्य वाङ्मयों में इसके संदर्भ मिलते हैं. छान्दोग्य उपनिषद में उद्दालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु से आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वृक्ष जीवात्मा से ओतप्रोत होते हैं और मनुष्यों की भाँति सुख-दु:ख की अनुभूति करते हैं। हिन्दू दर्शन में एक वृक्ष की मनुष्य के दस पुत्रों से तुलना की गई है- दशकूप समावापी: दशवापी समोह्रद:/दशह्रद सम:पुत्रो दशपत्र समोद्रुम:। इसी संस्कृति में हर भारतीय घर में तुलसी का पौधा कहीं न कहीं मिल ही जाता है। तुलसी का पौधा मनुष्य को सबसे अधिक प्राणवायु ऑक्सीजन देता है। तुलसी के पौधे में अनेक औषधीय गुण भी मौजूद हैं पीपल को देवता मानकर भी उसकी पूजा नियमित इसलिए की जाती है क्योंकि वह भी अधिक मात्रा में ऑक्सीजन देता है। देवों के देव महादेव तो बिल्व-पत्र और धतूरे से ही प्रसन्न होते हैं। यदि कोई शिवभक्त है तो उसे बिल्वपत्र और धतूरे के पेड़-पौधों की रक्षा करनी ही पड़ेगी। वट पूर्णिमा और आंवला ग्यारस का पर्व मनाना है तो वट वृक्ष और आंवले के पेड़ धरती पर बचाने ही होंगे। हिन्दुओं के चार वेदों में से एक अथर्ववेद में बताया गया है कि आवास के समीप शुद्ध जलयुक्त जलाशय होना चाहिए। जल दीर्घायु प्रदायक, कल्याणकारक, सुखमय और प्राणरक्षण होता है। शुद्ध जल के बिना जीवन संभव नहीं है। यही कारण है कि जल स्रोतों को बचाए रखने के लिए हमारे ऋषियों ने इन्हें सम्मान दिया। पूर्वजों ने कल-कल प्रवाहमान सरिता गंगा को ही नहीं वरन सभी जीवनदायिनी नदियों को मां कहा है। हिन्दू धर्म में अनेक अवसर पर नदियों, तालाबों और सागरों की मां के रूप में उपासना की जाती है। छान्दोग्योपनिषद् में अन्न की अपेक्षा जल को उत्कृष्ट कहा गया है। महर्षि नारद ने भी कहा है कि पृथ्वी भी मूर्तिमान जल है। अंतरिक्ष, पर्वत, पशु-पक्षी, देव-मनुष्य, वनस्पति सभी मूर्तिमान जल ही हैं। जल ही ब्रह्मा है। महान ज्ञानी ऋषियों ने धार्मिक परंपराओं से जोड़कर पर्वतों की भी महत्ता स्थापित की है।

पर्वत, देश के प्रमुख पर्वत देवताओं के निवास स्थान हैं और अगर पर्वत देवताओं के वास स्थान नहीं होते

तो कब के खनन माफिया उन्हें उखाड़ चुके होते। विंध्यगिरी महाशक्तियों का वास स्थल है, कैलाश महादेव की तपोभूमि है। हिमालय को तो भारत का किरीट कहा गया है। महाकवि कालिदास ने 'कुमारसम्भवम्' में हिमालय की महानता और देवत्व को बताते हुए कहा है- 'अस्तुस्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:' भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन की पूजा का विधान इसलिए शुरू कराया था क्योंकि गोवर्धन पर्वत पर अनेक औषधि के पेड़-पौधे थे, मथुरा के गोपालकों के गोधन के भोजन-पानी का इंतजाम उसी पर्वत पर था। मथुरा-वृन्दावन सहित पूरे देश में दीपावली के बाद गोवर्धन पूजा धूमधाम से की जाती है। इसी तरह हमारे महर्षियों ने जीव-जन्तुओं के महत्व को पहचान कर उनकी भी देवरूप में अर्चना की है। मनुष्य और पशु परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं। हिन्दू धर्म में गाय, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, हाथी, शेर और यहां तक की विषधर नागराज को भी पूजनीय बताया है। प्रत्येक हिन्दू परिवार में पहली रोटी गाय के लिए और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए निकाली जाती है। चींटियों को भी बहुत से हिन्दू आटा डालते हैं। चिडिय़ों और कौओं के लिए घर की मुंडेर पर दाना-पानी रखा जाता है। पितृपक्ष में तो काक को बाकायदा निमंत्रित करके दाना-पानी खिलाया जाता है। इन सब परंपराओं के पीछे जीव संरक्षण का संदेश है। हिन्दू गाय को मां कहता है, उसकी अर्चना करता है। नागपंचमी के दिन नागदेव की पूजा की जाती है। नाग-विष से मनुष्य के लिए प्राण रक्षक औषधियों का निर्माण होता है। नाग पूजन के पीछे का रहस्य ही यह है। हिन्दू धर्म का वैशिष्ट्य है कि वह प्रकृति के संरक्षण की परम्परा का जन्मदाता है। हिन्दू संस्कृति में प्रत्येक जीव के कल्याण का भाव है। हिन्दू धर्म के जितने भी त्योहार हैं, वे सब प्रकृति के अनुरूप हैं। मकर संक्रान्ति, वसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, होली, नवरात्र, गुड़ी पड़वा, वट पूर्णिमा, ओणम, दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, छठ पूजा, शरद पूर्णिमा, अन्नकूट, देव प्रबोधिनी एकादशी, हरियाली तीज, गंगा दशहरा आदि सब पर्वों में प्रकृति संरक्षण का पुण्य स्मरण है।

प्रकृति का उपहार हमें अपनी आगे वाली पीढ़ी से गिरवी के रूप में मिली है जिसकी जान बचने की जिम्मेदारी हम पर है। महात्मा गाँधी कहते थे - प्रकृति के पास हमारी जरूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन है लेकिन लोभ के लिए पूरी पृथ्वी अलबत्ता पूरा ब्रह्माण्ड भी कम है। अपनी जरूरतों को अगर सीमित नहीं कर सकते तो जरूरतों को लालच में तब्दील ना करने की कोशिश जरूर करनी चाहिए। मार्टिन लूथर किंग ने कहा है - किसी एक के ऊपर अन्याय सबके ऊपर अन्याय है। यदि प्रकृति के साथ आज आप अपने आस पास न्याय नहीं कर रहे हैं तो इसके दूरगामी परिणाम आपके विश्व के किसी कोने में किसी न किसी रूप में देखने को मिलेंगे। पृथ्वी पर एक स्वस्थ जीवन की परिकल्पना मनुष्य और प्रकृति के साहचर्य के बिना करना असंभव है। हम सब को चेतने की सख़्त जरूरत है और यदि अब भी देर की तो यह आख़िरी देर होगी।

गज़ल

बृज राज किशोर "राहगीर"

ईशा अपार्टमेंट, रुड़की रोड, मेरठ (उ.प्र.)-

(१)

कौन यह सच पर चलाता है मुझे।
हर क़दम पर आज़माता है मुझे।

मंज़िलों के ख़्वाब दिखलाते हुए,
रास्तों में छोड़ जाता है मुझे।

जीत सच की ही सदा होती यहाँ,
यह भरम ही मार जाता है मुझे।

झूठ से जिसने बनाई कोठियाँ,
अब वही आँखें दिखाता है मुझे।

नाम है जिसका शरीफ़ों में बड़ा,
गालियाँ अक्सर सुनाता है मुझे।

आजकल मौसम नहीं ईमान का,
रात-दिन बेटा सिखाता है मुझे।

खो गया हूँ मैं नक़ाबों में कहीं,
आईना खुद से मिलाता है मुझे।

(२)

जंग लड़ने के लिए इक हौसला दरकार है।
फिर भले ही आपकी टूटी हुई तलवार है।

आज भी हैं हर सफ़े पर क़त्ल के क़िस्से छपे,
लग रहा है हाथ में कल का वही अख़बार है।

बस तआरुफ़ ही कराया था सियासतदान का,
बज़्म में चिल्ला उठे सब, आदमी मक्कार है।

राजनीतिक गालियाँ जब दी गई तो यूँ लगा,
हाथ सबके लग गया बेशक नया हथियार है।

आप भी वक़्त-ए -ज़रूरत आज़माइश कीजिए,
साहबों, ईमान का भी इक बड़ा बाज़ार है।

(३)

लोग आए, मुस्कुरा कर चल दिए।
आप दिल में घर बनाकर चल दिए।

काम आ जाए किसी के ज़िंदगी,
इसलिए खुद को मिटाकर चल दिए।

सरहदें महफ़ूज़ रखने के लिए,
वे वतन पर जाँ लुटाकर चल दिए।

गर्दिशों में देखकर मेरा जहाँ,
दोस्त दो आँसू बहाकर चल दिए।

आ रहा हूँ लौटकर कुछ देर में,
ये कहा औ' सिर हिलाकर चल दिए।

कैनन

कैनन ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ **"मापन छड़"** या **"मापन संबंधी यंत्र"** होता है। कालान्तर में इसके अर्थ का दायरा कभी बढ़ा तो कभी संकुचित होता रहा। शाब्दिक अर्थ में प्रयुक्त होते हुए यह शब्द धर्मशास्त्र में भी प्रभावशाली रहा और आज भी है। साहित्य में प्रतिष्ठित एवं प्रचलित हो चुका है। लोकप्रिय प्राचीन शब्दकोश में कैनन के अनेक अर्थ मिलते हैं - जैसे धर्मनिरपेक्ष कानून, नियम या संहिता, निर्णय, मापदंड आदि। चर्च द्वारा औपचारिक रूप से अनुमोदित पुस्तकें, संतों के चित्र, नियम एवं प्रतिज्ञा से बांधा कोई धार्मिक व्यक्ति एवं समूह , चर्च में कार्यरत पादरियों का समूह एवं चर्च द्वारा संचालित नियमावली कैनन के अन्तर्गत आती है । पाश्चात्य अवधारणा में कैनन के अर्थ की बदलाव प्रक्रिया अनवरत रूप से जारी है। प्राचीन यूरोप में चर्च, सार्वजनिक रूप से नैतिक मूल्यों और न्याय संबंधी नियम कानून के स्थापन और संचालन के लिए जिम्मेदार थी। इन्हीं नियमो के संकलन एवं संहिताओं को कैनन कहा गया। वास्तव में यह अँग्रेजी भाषा का शब्द है, इसलिए चर्च एवं ईसाई समुदाय से सम्बन्ध रखता है और उनके द्वारा अनुमोदित नियमों को स्थपित और संचालित कार्य है। हालाकिं हर धर्म में कुछ ऐसी ही वयवस्था हैं।

विशेष यहूदी या ईसाई समुदाय के धार्मिक ग्रन्थों अथवा उत्कृष्ट पुस्तकों को आधिकारिक तौर पर मानने वाले मापदंडों को कैनन की श्रेणी में रखा गया है ।उस समय बाइबल या कैनन एक दूसरे के पर्याय थे, जो आज भी हैं। **कैनन दो प्रकार के हुआ करते थे " बंद " और " खुले "**। अधिकांशत: जो कैनन अनुयायियों द्वारा मानें जाते थे, उसमें कुछ जोड़ा या हटाया नहीं जा सकता था। समाज के कुछ तथाकथित विद्वान, चर्च के पादरियों द्वारा उनका संचालन होता था। इस तरह के कैनन में जनता का हस्तक्षेप वांछनीय नहीं था तथा किसी प्रकार के रहस्योद्घाटन अथवा परिवर्तन की गुंजाइश भी नहीं थी। इस तरह के कैनन "बंद कैनन " कहलाते थे। जबकि "खुले कैनन" मे निरंतर परिवर्तित सामयिक परिस्थितियों एवं गतिविधियों को जोड़ा या हटाया जा सकता था । कैनन का शाब्दिक अर्थ मानक, मान, मूल्य एवं प्रतिमान है। लेकिन इन सभी शब्दो में पूर्ण रूप से कैनन की व्याख्या करना असंभव है। इन शब्दों में प्रयोग भाव, समाज में व्याप्त गुण - दोषों का प्रस्तुतीकरण और अर्थशास्त्र के विश्लेषण के अधिक निकट बैठता है। जबकि सामान्य जन मानस की स्वतंत्रता एवं आधिकारों को गौण रखा गया था।

हिन्दी साहित्य में कैनन का प्रवेश एक क्रांतिकारी कदम था। कोई कृति किस आधार पर महान घोषित की जाती है, इन मूल्यों का निर्धारण कैसे होता है ? हिंदी में कैनन का निर्माण कैसे हुआ एवं उसकी क्या उपयोगिता है ? यह सब पहले भी तय था। कुछ कृतियाँ सदैव से श्रेष्ठ रही हैं ओर आज भी हैं, वो सामयिक न होकर कालातीत है। हिंदी साहित्य की बात करे तो प्रतिमानीकरण , शब्द उतना ही पुराना है ,जितनी आलोचना प्रक्रिया। विभिन्न धर्म आस्थाएं, मठ, मत, सांप्रदाय एवं शिक्षण संस्थाएं लगातार कैनन का निर्माण करती रहती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि समय के बदलाव के साथ - साथ प्रतिमान गतिमान रहते हैं । सामाजिक, नैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के उतार चढ़ाव का कैनन पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

मिश्र बंधुओं का **'नवरत्न'** हिंदी का पहला

डा. रश्मि तिवारी
लखनऊ

व्यवस्थित कैनन घोषित करती है, 1910 के पहले संस्करण में नौ रचनाकार हैं — **तुलसी, सूर देव, बिहारी, भूषण केशव, मतिराम, चंदबरदाई और भारतेंदु** । तुलसी का रचना संसार भक्ति काल से आज तक कैनन बना हुआ है, इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह कालातीत होते हुए भी आज तक नितांत सामयिक है।

धर्म से साहित्यिक आलोचना में आते - आते इसकी अवधारणा के स्वरूप में काफ़ी अंतर आया। इस शब्द की पहली साहित्यिक आलोचना में अर्थपूर्ण व्याख्या चौथी शताब्दी में मिली जब कैनन का प्रयोग लेखक और लेखन के संदर्भ में माना गया। अब कैनन प्रयोगकर्ताओ ने रचना और रचनाकारों के तुलनात्मक मूल्यों का आंकलन इसके द्वारा प्रारम्भ कर दिया। अत: हम कह सकते हैं कि जिस तरह साहित्य को वर्गीकृत करने के अनेक तरीके हैं, उसी तरह कैनन भी एक तरीका है। यह एक ऐसा मापदंड है जो कृति अथवा साहित्यकार को वैधता प्रदान करता है, अन्य विधाओं द्वारा यह संभव नहीं है। कोई भी कृति अथवा कृतिकार यदि कैनन में शामिल होता है तो इसका तात्पर्य यह है कि उस कृति अथवा लेखक ने विशाल पाठकीय समूह को प्रभावित किया है और उस कृति ने साहित्य जगत में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया है। सामान्य दृष्टि से देखा जाए तो कैनन की अवधारणा पारंपरिक उत्कृष्टता,

गौरवशाली परम्परा, आदर्श एवं श्रेष्ठता का पर्याय है, जबकि इसका समकालिकता से दूर - दूर तक कोई संबंध नहीं है। अर्थात् जो था, आज नही है परन्तु अभी तक मान्य है जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम और उनका सतयुग, आदर्श एवं उत्कृष्ट परंपरा का निर्वाह करता था, वह आज की समाजिक व्यवस्था को नही दर्शाता परंतु आज भी सामाजिक संबंधों और नैतिक मूल्यों के मापन में प्रयुक्त होते है।

धीरे - धीरे समय बीतने के साथ - साथ कैनन का विकास हुआ, अब साहित्यिक कैनन का चुनाव धार्मिक कैनन नियमावली के अनुसार नही होता है। इस प्रक्रिया में राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियां पूर्णतया से हस्तक्षेप करती है। साहित्यिक कैननो को यदि सशक्त तर्को के आधार पर देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि उसमें अश्वेत, दलित, निम्न वर्ग एवं महिलाओं का अस्तित्व शून्य है, यहां पर हम आदर्श की बात न करके यथार्थ को देखें । यह स्थिति आज भी विद्यमान है।

रचना का कैनन बनने की प्रक्रिया में सिर्फ कला पक्ष ही मान्य नही है बल्कि उसका भाव पक्ष भी श्रेष्ठ होना चाहिए जो पाठक के ह्रदय और मस्तिष्क में अपनी छाप छोड़ सकें। किसी एक पाठक की प्रतिक्रिया किसी कृति का प्रतिमानीकरण नहीं कर सकती ।अनेक जटिल सामाजिक संदर्भ भी इस वर्गीकरण / निर्धारण में प्रतिभागी है। साहित्यिक कैननो में लोकतांत्रिक मूल्यों को महत्व देते हुए धार्मिक रूढ़िवादिता को विस्थापित कर मानवीय मूल्यों को स्थान दिया जाना चाहिए।

अतः हम कह सकते है कि किसी भी समाज में पढ़ने - लिखने की प्रक्रिया को सुनियोजित ढंग से नियंत्रित किया जाता है, यह व्यक्तिगत न होकर सामाजिक संस्थाओं द्वारा संचालित होता है। सामाजिक संस्थाएं किसी उद्देश्य, हित एवं वैचारिक शक्ति समूहों का वहन करती हैं। किसी भी साहित्य का निर्माण सामाजिक परिस्थितियों वश होता है। यही कारण है कि कैनन निर्माण की प्रक्रिया में उस काल की प्रभुत्वात्मक और प्रतिरोधात्मक शक्तियों दोनों ही धाराओं का समावेश होता है।

कैनन निर्माण किसी भी समाज के व्यापक इतिहास का केवल एक पहलू है। वह समाज को संगठित करता है, शिक्षा मानव का बौद्धिक उत्थान करती है। इस तरह विद्यालय एवं शिक्षण संस्थान पढ़ाने योग्य पुस्तकों का चयन करती हैं। किसी कृति का महत्व , उपयोग, संरक्षण और प्रासंगिकता विद्यालय की आवश्कता और उसके सामाजिक गतिविधियों के संदर्भ में आंकी जाती है। रचना को कैनन में शामिल करने के लिये, उनके भाव पक्ष और नैतिक मूल्यों के आधार पर उन्हें चुना जाता है। कई बार इन रचनाओं को पढ़ने के बाद पाठक वर्ग भिन्न- भिन्न प्रतिक्रियाएं देता है तब महानता का मापदंड निर्धारित करना बड़ा मुश्किल होता है।

कैनन के विरोध करने वाले समूह ने इसके निर्माण की प्रक्रिया पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए कहा कि कैनन निर्माण की प्रक्रिया सदैव से शक्तिशाली समूह द्वारा निर्धारित होती है क्योंकि उसमे उस वर्ग का हित निहित होता है। अतः यह स्पष्ट हुआ कि कैनन निर्माण के मापदंड स्वहित, स्वार्थ एवं पूर्वाग्रहों से प्रभावित होते हैं।

जान गिवलोरी ने यह प्रस्तावित किया कि " **यदि मुझे साहित्य के पाठ्यक्रमों पर पुनर्विचार का अवसर दिया जाए तो मैं कैनन के बाहर और भीतर की तमाम कृतियां पढ़ना चाहूंगा। लेकिन मैं उन्हें बेहतर तरीके से पढ़ना चाहूंगा। मैं पढ़ना चाहूंगा कि वे अपने देशकाल में क्या करती है , साथ यह भी कि मात्र कैनन में शामिल होने के कारण कृतियों पर आरोपित किए गए नए अर्थों और उनके वास्तविक अर्थ के बीच क्या अंतर है।** हिंदी आलोचना के लिए कैनन एक नई अवधारणा है। **शिवदान सिंह चौहान** के निबंध **"आलोचना का मान"** आलोचना के दायित्व और उस समय की सामाजिक परिस्थितियों पर केंद्रित है। उन्होंने अपने विचार कुछ इस तरह वयक्त किए **"मानव चेतना को हर पहलू से उन्नत और समृद्ध बनाना"** और इन तथ्यों को स्मरण में रख के हर आलोचक अपने साहित्य ज्ञान और अनुभव से प्राप्त जीवन बोध के सहारे यथासंभव समन्वयकारी दृष्टिकोण का विकास कर ही सकता है। इस में जिस आलोचना को जितनी सफलता मिलेगी, सत्य को उजागर करने की दिशा में वह उसकी अपनी विशिष्ट उपलब्धि होगी । आलोचना क्षेत्र से लड़ने का यही एकमात्र तरीका है।

विश्व साहित्य पटल पर आलोचना के सम्मुख यह प्रश्न सदैव से रहा है कि अन्य क्षेत्रों के शब्द आलोचना में कैसे प्रयुक्त हो कि अपने अर्थ को न खोए। किसी आंचल से निकले शब्द जब नए स्थान में प्रयुक्त होते हैं तो उनके अर्थ भी बदल जाते है, फिर बदले स्वरूप में लगातार प्रयुक्त होते होते परिवर्तित अर्थ और उनके भाव स्थाई हो जाते है। यह संभावना तब प्रबल होती है जब देशकाल एक हो। स्थान और समय के बदलने से उनके अर्थ और अवधारणा भी बदल जाती है।

" कैनन " शब्द का उद्भव एवं विकास की कहानी कुछ ऐसी ही है, जो ईसाई धर्म शास्त्र से निकल कर साहित्य जगत में प्रविष्ट हुआ , परंतु उसने आज भी अपने धर्मशास्त्रीय अर्थ को पूर्णतया नहीं बिसराया।

सन्दर्भ :

1- हिंदी आलोचना में कैनन निर्माण की प्रक्रिया लेखक: मृत्युंजय, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन ।
2- वीकीपीडिया।

****

व्यंग्य

चम्मच महान

सुबह-सुबह पति की झल्लाई हुई आवाज आई, "क्या कर रही हो? मुझे ऑफिस को देर हो रहीं है, नास्ता रख गई और चम्मच नदारद!"

मैं चाय बनाना छोड़ जल्दी से एक चम्मच उठा दौड़ी। चम्मच! बड़े काम का है यह चम्मच, रसोई घर के बर्तनों मे सबसे छोटा बर्तन। बर्तन स्टैंड के एक कोने में यानी हाशिये पर लटका हुआ। कुछ स्टेनस स्टील का, कुछ प्लास्टिक हैंडल वाला, कुछ सामान्य तो कुछ अधिक गहरा। जाने कितने अलग-अलग किस्म हैं इस छोटे से चम्मच के। पर इसे छोटा या तुच्छ समझने की भुल, तो भुल से भी न करें। क्योंकि इस छोटे का गुण बड़ा महान है।

अब देखिये आपका डायनिंग टेबल आपके मन पसंद स्वादिष्ट व्यंजनों से सजा हो, जिसमे से उठने वाली भीनी-भीनी खुशबू आपके नथुनों में समा रहे हों। बिन रोक-टोक के इस घुसपैठ के कारण आपके पेट के चुहे आपके आंतों को चुहों का स्टेडियम समझ चुहा दौड़ लगा रहे हों। ऐसे में आप भोजन पर झपट ही पड़ेंगे..... तभी आपको याद आएगी एक अति आवश्यक वस्तु की यानी चम्मच महान की। और ये महाशय! मेज के एक कोने में खड़े मंदमंद मुस्कुरा रहे होंगें, आई न बच्चू मेरी याद? व्यंजनों की सुंदरता का जी भर लुत्फ उठा लो, खुशबू चाहे जितनी फेफड़े में समा लो। असली मजा मुझ बिन कहां पाओगे? अंततः मुझे ही तलाशते नजर आओगे तभी तो हूं मै महान!

अब यह चम्मच धातु से निकलकर, बर्तन से निकलकर, किचन से आजाद हो कुछ इंसानों में भी प्रवेश कर गया है। अब चुकी इंसान ईश्वर की महानतम रचना है। सो यह भी यहां पहुंच कर महान से महानतम हो उठा है। आपको यकीन नहीं? आ जाएगा.... तनिक विचार तो कीजिए, आपके आस-पास हर स्थान, हर मोड़, हर रुप में मौजूद है यह महान हस्ती! स्कूल, कॉलेज, पास-पड़ोस, ऑफिस, कल कारखाने हर जगह ये पाये जाते है। हां इंसानों में पहुंच कर यह स्त्रीलिंग, पुल्लिंग यानी चम्मचा और चम्मची दोनो ही रूपों में पाए जाते हैं। तो अब आप महिला हों या पुरुष आपको अपने ही आस-पास ये महान हस्ती आसानी से मिल जाएंगे। बस तलाशने की देर है तो आइए शुरू करते है।

शुरुआत स्कूल से ही करते हैं। क्योंकि इंसान बुद्धिमान बनना तो स्कूल से ही शुरू करता है। इसके पहले तो वह अबोध ही होता है। किसी भी माध्यम का कोई भी स्कूल हो, उसमे पढ़ाने वाले सारे शिक्षक सभी विद्यार्थियों को प्रिय तो होते नहीं। उनमे से जरूर कुछ बुढ़े, खूसट, चश्मुद्धिन, छड़ीबाज आदि होते ही हैं। अब शिक्षक महोदय को देख कर जब ऐसी सुंदर-सुंदर उपाधियां मन में आएगी तो जाहिर है इसका उपयोग आप शिक्षक महोदय के उपस्थित में तो कर नहीं सकते। ऐसे में आप अपनी मित्रमंडळी के बीच उन शिक्षक महोदय को इन महान उपाधियों से सम्मानित करेगें और इस सम्मान समारोह का पूरा आंनद भी लेंगे। पर यह क्या? अगले ही दिन वह सम्मानित शिक्षक आपको भरी क्लास में ससम्मान कान पकड़ खड़ा कर देंगें, "क्यों रे! तू मुझे फलां-फलां कह रहा था न?"

आप भौचक! अरे.... हमने तो इनकी अनुपस्थिति मे इन्हें सम्मानित किया था। फिर इस बात की जानकारी इन्हें कैसे हो गई? हां... यही तो है, इस महान हस्ति चम्मच का कमाल। बात आपके मुंह से निकली, चम्मच ने उठाया और ठूंस दिया शिक्षक महोदय के कानों में। नतीजा आपके सामने है। यानी

ऊषा कुशवाहा

फ्लैट न-410, दुसरा तल्ला
युवराज अपार्टमेंट, कैलाश बिल्डिंग
हुरलुंग रोड, जमशेदपुर 831004
प्रकाशन- कहानी संग्रह 'कसक' एवं 'वो एक महीना' ,

आपके मित्रमंडली में कोई उन शिक्षक महोदय का चम्मच है। इन्हें पहचानने के लिए इनका इतना परिचय काफी है। अब आप इन्हें आसानी से पहचान जाएंगे, तलाश किजिए।

ऐसा नहीं है कि इन चम्मच महान से हमेशा हानी ही होती है। कभी-कभी इनसे बड़े फायदे भी होते है। बल्कि कुछ काम, कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं जंहा इनके बिना काम ही नहीं चलता। किसी आला अफसर, किसी बड़े नेता, राजनेता जैसे महापुरुष से आपका कोई काम अटक जाए तो ऐसे मे ये महान चम्मच बड़े काम के साबित होते है। क्योंकि इनकी कुछ विशेषताएं हैं। ये अपने मालिक, आका, अन्नदाता के काफी मुंहलगे होते है। हां... भाई चम्मच हैं तो मुंह को ही लगेंगे! किंतु यह काम इतना आसान भी नहीं है। इसके लिए इन्हें काफी मेहनत करनी पड़ती है। ये अपने स्वामी के खिदमत-खुशामद में नित नयी कविता, गीत,

छंद, लिखकर , चुराकर, उड़ाकर उनकी स्तुति करते हुए अपने प्रभु की परिक्रमा करते रहते है। ये कोई झारखंड, बिहार, बंगाल अथवा पंजाब महाराष्ट्र पुत्र नहीं बल्कि सच्चे धरतीपुत्र हैं। धरती ही की तरह चाहे कोई मौसम आये या कोई मौसम जाए ये पूरी निष्ठा के साथ अपने काम में लगे रहते हैं। अतः इनके मालिक वही देखते हैं, जो ये उन्हें दिखाते हैं। वही सुनते हैं जो ये सुनाते है। वही करते हैं जो ये करवाते हैं।

अब ऐसी महान हस्तियों के बीच रहने वाला जीव से यदि आपका कोई काम अटक जाए, तो अव्वल तो इतनी सुदृढ़ परिक्रमा को तोड़ पाना ही आसान न होगा। यदि किसी शक्ति, किसी जादू से आपने यह करिश्मा कर भी लिया; तो ऐसे महान जीव जिनके कान स्तुति के आदी, जिनकी आंखें चश्मे की अभ्यस्त और हाथ हर वक्त चम्मच के हैबिचुएटेड हों वह भला आपकी बात को कितना सुन समझ पाएंगे?

समझा-समझा कर या तो आप पागल हो जाएंगे या अपना सिर फोड़ बैरंग वापस आ जाएंगे। तो क्या काम हो ही नहीं सकता? हो सकता है.... जनाब, बिल्कुल हो सकता हैं। बस जरा रास्ता बदलना होगा। उसी महान हस्ती चम्मच की तलाश करनी होगी। उन्हें कुछ दान-दक्षिणा, कुछ चढ़वा चढ़ाना होगा। अब इसमे क्या बुरा मानना! यह तो परंपरा है, रीत है। भगवान की पूजा करवाने, मंत्रोच्चारण करने की दक्षिणा पंडित लेता है या नहीं? फिर ये भी तो अपने देवता की रात-दिन स्तुति करते हैं!

तो दीजिए दान-दक्षिणा और देखिए इनका कमाल। जो काम आप लाख सिर पटक कर भी न कर पाए, कैसे ये अपनी बत्तीसी दिखा, कमानी की तरह कमर झुका, स्तुति करते हुए आपका मनोवांछित कार्य, चाहे वह जैसा भी हो, उससे दो लोगों का भला होना हो या दो चार सौ लोगों की जाने ही जानी हों। उसे सर्वहित, उचित और महान बता कर चुटकियों में करा लाते हैं तो है न यह चम्मच महान।

काव्य

चाँद को नहीं आसमान को देखना

जब बहुत मुश्किल में होना
तो चाँद को नहीं,
आसमान को देखना।

माँ के आँचल की तरह फैले
आकाश के असीमित विस्तार को देखना
बहन के आँसू की तरह जमें
गहरे नीले रंग को देखना
दादी के पके बालों जैसे
सफेद बादलों को देखना
और रास्ता देखना
खोप से उड़े
परेवा के लौटकर आने का।

अगर कुछ न भी दिखे
तो घबराना मत,
उस तरह देखना
जिस तरह बाबा देखते थे।
कोशिश करना
और बार-बार देखना
तुम आसमान की तरफ़
बाबा की तरह देखना।

जब बहुत मुश्किल में होना
तो चाँद को नहीं,
बाबा के हिम्मत की तरह ऊँचे
आसमान को देखना।

ईमानदार उपस्थिति

मोहन कुमार
वाराणसी

जीवन में
सबकुछ मिल जाए
यह संभव नहीं है

इसलिए
जब कुछ न मिले
तो अफ़सोस मत करो !

जो जा रहा हो
उसे जाने दो
रोको मत!
बस इतना ख्याल रखो
कि जाते समय कोई
गले मिलकर भले न जाए
लेकिन
दोबारा न मिल सकने कीउम्मीद खोकर
बिल्कुल न जाए।

हमसे प्यार करने वाले लोग
हमारे दिल, घर और शहर से तो
बाहर चले जाते हैं
लेकिन हमारी स्मृतियों से
वे कभी बाहर नहीं जा पाते हैं
इसलिए
प्यार हमेशा पूरी ईमानदारी से करो,
ताकि कोई अपनी स्मृतियों में
हमारी ईमानदार उपस्थिति
दर्ज करने के लिए
विवश हो जाए।

मनोज कुमार मिश्रा
सेवानिवृत्त (राष्ट्रीयकृत बैंक)
अहमदाबाद

लघुकथा

नया दिन

रात गहरा रही है, काम के बोझ से थके शरीर को आराम की जरूरत है पर अनिश्चिन्तता के सागर में गोते खा रहे मन को कैसे समझाएँ। पिछले 3 महीने से वो अपनी सब सुख सुविधा आराम भूल कर सिर्फ सेवा में जुटी है। एक बेटा है एक बेटी है। सभी दूर दूर रहते हैं, नौकरी करने में व्यस्त हैं। बेटा एक बार आकर देख गया है। दोनों बच्चे रोज फ़ोन करते हैं हाल चाल पूछते हैं पर सामने रहने पर बात कुछ और ही होती थी। मन को आशंकाओं के भवँर से निकालने के लिए वो अपने पति को देखती है। वे निर्विकार शून्य में छत को निहारे जा रहे हैं। पति ने खाना खाना बहुत कम कर दिया है। लगता है जैसे सिर्फ सांस लेने के लिए खा रहे हैं। पानी भी नहीं पीना चाहते। तरह तरह की आशंकाओं को मन में पाले रहते हैं। उसकी चर्चा करना चाहते हैं पर दवा या खाना दोनों से ही अभी परहेज कर रहे हैं। परिणामतः शरीर कमजोर होते जा रहा है। मन को दिलासा देने के लिए एक बार उनकी चलती सांसों को महसूस करती हैं। सब ठीक है अभी तक तो। पुनः सोने का प्रयत्न करती हैं शायद मन पर तन की थकान भारी हो गयी है जो उन्हें निद्रा की गोदी में हल्के से दुलार कर ले जाती है। पति 3 महीने से बीमार हैं, सभी प्रकार के टेस्ट कराए जा चुके हैं, डॉक्टर भी बगल में ही रहते हैं गाहे बगाहे उनको बुला भी लिया जाता है पर उनका भी एक ही कहना है इनको कुछ नहीं हुआ है इनको खाना खाना पड़ेगा और किसी चीज की जरूरत नहीं है। अब तो वे भी आने में कतराने लगे हैं। जो पड़ोसी आते जाते रहते थे इस कॅरोना काल में खुद ही घर से नहीं निकलते। निश्तबद्ध सन्नाटे का यह जीवन खुद में किसी तपस्या से कम नहीं। पर कहें किसे, मौन आज के परिपेक्ष्य के लिए सही दिशा है ओर उन्होंने वही चुन रखा है। घुटनों के दर्द फिर मुखर हो रहा है, हल्की सी आह के साथ करवट बदलती हैं पर उस करवट भी राह नहीं पातीं क्या पता पति को किसी चीज की जरूरत हो और वे देख ही न पाएं। पति के बिना जीवन की वो कल्पना भी नहीं कर सकतीं पर नियति लगता है उन्हें उसी ओर ले जा रही है। उन्होंने उम्मीद छोड़ दी है बेटे बेटी को भी कह दिया है। वे समझते हैं पर उनकी अपनी उलझनें भी हैं पुत्रियों का विवाह है बेटों का नियोजन है कॉलेज बंद है, हारी बीमारी है, चारों ओर कोरोना की महामारी है, फिर एक पुत्री भी रोग ग्रस्त थी, अब उससे बाहर आ रही है। वो लोग वहां देखे या यहाँ। यहां जो है सब बीता हुआ चुका है जीवन है वहाँ जो है वो बीत रहा और आने वाला जीवन है। जीवन के सार को जिन बच्चों में रमा कर अपना सबकुछ निसार दिया आज वही बच्चे अपनी दुनिया में व्यस्त होने के कारण शायद अपने मूल को ही समय नहीं दे पा रहे हैं। दोनों अपने अपने शहरों से आना चाहते हैं पर इस कोरोना काल में माँ पिता का मन अपनी संतान को संकट में डालने के अंदेशे से ही घबरा उठता है। अतः दोनों को सख्ती से आने से मना कर रखा है।एक गहरा निश्वास उनके कंठ से निकला। चिड़ियों का कलरव घर के बाहर शोर मचा रहा था। उनकी तंद्रा टूटी तो बगल में लेटे जीवन साथी की ओर गया। वे गहरी नींद में थे। एक मुस्कान अनायास ही उनके चेहरे पर तैर गयी।अभी सांसें चल रही हैं यानी आज का दिन उनका है, एक दिन और रात को वे हरा चुकी हैं, आने वाली बाकी है, उसे भी हराना है। आज का लक्ष्य नियत है। चलें तैयारी करें।।

काव्य

कौन कहता है कि वक्त बेवफा है साथ नहीं रहता।
मेरी आँखों मे झांक कर देखो ये वहीं है ठहरा हुआ।।

होंगी वो बहारें और जहां खिंजा ने रंग जमा लिया।
मेरा गुलशन तो है अब तक जवाँ तेरे पहलू में खिला खिला।

तेरा साथ है तो मुझे जमाने की रुसवाई भी मंजूर है।
तेरे रुखसार के गड्ढे हसीन आज भी मेरे नज़रों का नूर हैं।।

हाँ वक़्त की गलबहियों ने अपना असर छोड़ा जरूर है।
दिल तो मेरा आज भी जवाँ और शरारातों से भरपूर है।

छोड़ जमाने की नजरें बस मेरी नज़रों से नज़रें मिला।
हम ही रहेंगे एक दूजे के लिए इस बात को समझ जरा।।

वे पंछी जिन्हें पाला था हमने लाखों जतन से सेज कर।
उड़ जाने हैं हमसे दूर कहीं अपना घोसला बनाने के लिए।।

रहना है बस मुझको और तुमको ही एक दूजे के लिए।
इसीलिए कहता हूँ न शरमा आजा इन बाहों में सब छोड़कर

मनोज कुमार मिश्रा

कहानी

दासता की जंजीरें कहानी

जब सभी लोग चाय नाश्ता कर चुके, तो हमारे माता-पिता ने फुसफुसाकर आपस में कुछ बातें की, तभी रजनी शालीन वेशभूषा में कमरे में दाख़िल हुई और वे मुझे अकेला छोड़कर बाहर चले गए। पापा ने जाते-जाते फुसफुसाकर मुझसे कहा,' चल आगे बढ़ और उससे बात कर।'...'अरे पापा, अगर मैं घर जमाई नहीं बनना चाहता, तो कैसे ज़बरदस्ती उससे यह कह सकता हूं कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं।'

'यार! तुझे इससे क्या लेना-देना है। बेवकूफी मत कर। ज़रा दिमाग से काम ले।' यह कहकर मेरे पापा ने क़हर भरी नज़र मुझ पर डाली और कमरे से बाहर चले गए। तब तक रजनी मेरे करीब आ चुकी थी। मुझे लगा, इसने हमारी बातें सुन ली। मैंने सोचा, 'ख़ैर चलो, अब जो होगा, देखा जाएगा।' इसके बाद मैंने प्यार के लहजे में उससे बैठने को कहा। वह शरमाते हुए मुझ से कुछ फासला बना कर बैठ गई और मिठाई की प्लेट मेरी ओर बढ़ा दी। मैंने मन बहलाने लिए स्वयं से कहा, 'मेरी बातें सुनने के बाद भी यह रोमांटिक हो रही है, कहीं मिठाई में ज़हर तो नहीं है।'

मैं उसके लिए मुकम्मल अजनबी था मगर उसके बर्ताव में अजनबीपन में एक अजब-सी जान पहचान थी,जैसे बरसों या शायद सदियों के बाद आज वो मुझ से मिली हो...। एक अजीब सी नज़दीकी और अपनेपन का एहसास था। उसके बाद मैंने थोड़ी चालाकी बरतते हुए कहा, 'रजनी, आखिर अब हम अकेले हैं और अपने मन की बात कह सकते हैं।' यह कहकर मैं चुप हो गया।

वह अपने चेहरे पर झलक आई शर्म को छुपाने का ज़ोर से धड़क -प्रयास कर रही थी। उसका दिल इतनी ज़ोर । ...रहा था कि उसकी आवाज मुझे भी सुनाई दे रही थी उसका बदन भी बुरी तरह से कांप रहा था। मैंने स्वयं से ,कहाइस बेचारी ने तो मुझे घर जमाई समझकर आमंत्रित किया था ,पर मैंने नादानी से उसका दिल तोड़ दिया। मैं उस समय उसके सामने वैसा ही बैठा था जैसा एक असभ्य होता है। कुछ देर बाद उसने कहा' ,यहां घुटन महसूस हो रही है। हमारे माता-पिता इस कमरे के बाहर ही खड़े हुए हैं और हमारी बात-चीत सुनने की कोशिश कर रहे हैं, चलिए बाहर बगीचे में चलते हैं।' हमें बाहर निकलता देख वे जल्दी से बरामदे के एक कोने में जाकर खड़े हो गए। हम घर से बाहर निकल आए और घर के सामने बने बगीचे में एक पगडंडी पर चलने लगे। रजनी के चेहरे पर चांद की रोशनी चमक रही थी। मैं बेवकूफों की तरह उसे घूर रहा था। मैंने उसके चेहरे पर झलक रही मधुरता और मासूमियत को महसूस किया, फिर एक गहरी सांस भरी और उससे कहा, 'लगता है नर कोयल गा रहा है, अपनी मादा को लुभा रहा है। पर, मैं भला किसी को क्या लुभा सकता हूं।' रजनी का चेहरा शर्म से लाल हो गया और उसने अपनी नज़रें झुका ली। हम दोनों बगीचे के उस पार सरोवर किनारे बैंच पर बैठ गए।

मैंने कहा, 'मैं बुरी तरह से एक लड़की के इश्क में डूबा हुआ हूं। उससे बेहद प्यार करता हूं। सवाल है कि वह मुझे चाहती है या नहीं? अगर वह मुझे नहीं चाहती, वह मुझ से प्यार नहीं करती तो समझिए मैं बर्बाद हो जाऊंगा मैं मर जाऊंगा और जानती हो वह लड़की कौन है? आप ही हैं वह ख़ास इंसान मेरे लिए। बताइए न? क्या आप भी मुझे चाहती हैं?

'जी, आपको ही चाहती हूं।' रजनी ने बुदबुदाकर होंठों ही होंठों में कहा।'

'ऐसा क्या देखा मुझ में आपने?' मैने कहा।

'जब से मैं यूनिवर्सिटी से पढ़कर गांव लौटी हूं, पापा हर दिन मेरे विवाह के लिए किसी न किसी को आमंत्रित करते हैं। पापा की शर्त है --दामाद

वाजिद हुसैन सिद्दीक़ी

कार्य-छेत्र - प्रवक्ता एवं प्रबंधक, डिग्री कालिज

रूचि- कहानी लेखन, नाटक लेखन।हिन्दी एवं अंग्रेज़ी ।

प्रकाशन - विभिन्न समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओ में कहानी एवं लघु कथा लेखन

सम्मान - बर्डस सेव सोसाईटी सम्मान

घर जमाई बने और ससुर की आज्ञा का पालन करे।' घर जमाई बनने वालों में होड़ मची है, जिसमें अधिकारियो से लेकर संपन्न व्यापारी तक शामिल है। मैं हैरान हूं, आप घर जमाई नहीं बनना चाहते हैं। जिस समय मैं कमरे में आई थी, मैंने आपको अपने पापा से यह कहते सुन लिया था। उसी समय मैंने आपको भगवान मानकर अपने मन मंदिर में विराजित कर लिया और आपकी पूजा करने लगी।'

'रजनी, यह सच है क्या? कहीं इमोशनल होकर तो आपने हामी नहीं भर दी।'

मैं बदहवास होकर बेंच के चारों ओर भागने लगा 'अरे यह सब मज़ाक है ,रजनी। यह प्यार- व्यार ,ये शादी-वादी सब फालतू की चीजें हैं। ज़मीन जायदाद के मामले हैं ये सब और इन्हीं मामलों की वजह से हमारा रिश्ता तय

तय किया जा रहा है। आपसे शादी करने से तो बेहतर है कि मैं अपने गले में एक भारी पत्थर लटका लूं। उन्हें ,आख़िर क्या हक हैवो हमारी ज़िंदगियों के साथ खिलवाड़ करें। वो लोग हमें अपना गुलाम समझते हैं क्या ? जब मर्जी हुई जिस किसी के खूंटे से बांध दिया। नहीं ,हम यह शादी नहीं करेंगे चाहे कुछ भी हो जाए। हमने अभी तक उनकी सारी बातें मानी थी ,पर अब मैं नहीं मानूंगा। मैं अभी जाकर उनसे कहता हूं कि आपसे शादी नहीं कर सकता। बस बात यहीं खत्म हो जाएगी। 'आप भी कह दीजिए कि करण एक सरकारी अफसर है परंतु साधारण परिवार से है। वह मुझे वह सुविधाएं नहीं दे सकेगा जिसकी मैं आदि हूं।

अचानक ही वह धीरे से बोली, 'मेरी ज़िंदगी सिर्फ एक इनसान की तावेदार है। सिर्फ वही इनसान मेरी खुशी की जिम्मेदारी ले सकता है।' रजनी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, 'उसके लिए मेरे मन में एक ख़ास जगह है, एक ख़ास एहसास है। सच-सच कहूं तो मैं आपसे मोहब्बत करती हूं। यदि आप नहीं मिले तो मैने जो समय साथ गुज़ारा हैं, वो
जीवन को रौशन करने के लिए काफी हैं।' मैंने उसका हाथ पकड़ा और कहा, ' दूसरा हाथ भी दो।' मैंने उसके दोनों
हाथ चूमे और उसकी ओर देखकर कहा, 'तुम्हारी आखों में सच्चाई झलक रही है।'

हम बहुत खुश थे, हमने अपना सही जीवन साथी तलाश लिया था। मोहब्बत के इज़हार से ज़्यादा ज़रूरी घर की तरफ चलना था। हम घर पहुंचे तो देखा कि हम दोनों के मां-बाप वहीं हमारा दरवाज़े पर इंतज़ार कर रहे थे।

रजनी ने पापा को बताया, करण शादी करना चाहता है परंतु घर जमाई नहीं बनना चाहता है। उनके माथे पर बल पड़ गए पर शिष्टाचारवश वह हमारे सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गए।

रजनी हिकारत से हंसी, फिर बोली, यह अंत है हमारे प्यार का...।'

'नहीं रजनी नहीं, दासता की ज़ंजीरों से मुक्त होने तक मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा।'

... रजनी सरोवर के पास घूमती फिरती विरह व्यथा का अनुभव करती। फिर अतीत में खो जाती। रजनी की दशा देखकर उसकी माता को मन-ही-मन चिंता होने लगी। रजनी की माता फिर एक दिन राममूर्ति बाबू से बोली, 'तुम्हारी एक ही लड़की है, वह जैसे बिना इलाज के मरी जा रही है।'...डॉक्टर आया देख-सुन कर बोला बीमारी- बीमारी कुछ नहीं है। राममूर्ति बाबू विरक्त होते हुए बोले, 'यह तो बड़ी कठिन बात है। ज्वर नहीं खांसी नहीं, बिना बात के यदि मेरी लड़की मर ही जाए। माता सूखे मुंह से बोली, मेरी रजनी इस तरह से क्यों घूमती रहती है?
राममूर्ति बाबू कुछ देर सोचकर चिंतित होते हुए बोले, ' उस शहरी बाबू ने लली पर ऐसा जादू कर गया, किसी दूसरे से विवाह के लिए हामी नहीं भरती, अब तुम्ही बताओ, घर जमाई नहीं होगा तो इस संपत्ति को मेरे बाद कौन संभालेगा?

एक दिन दोपहर के समय घर के सब लोग मिलकर रजनी के विवाह की बातें कर रहे थे। इसी समय वह खुले बाल, अस्त- व्यस्त वस्त्र धारण किए, सूखे गुलाब के फूल को हाथ में लिए, चित्र की भातिं आ खड़ी हुई। रजनी की मां कन्या को देखकर तनिक हंसती हुई बोली, 'ब्याह हो जाने पर यह सब कहीं अन्यत्र चला जाएगा।' इस बार रजनी ने गर्दन घुमाई फिर बोली, 'विवाह मैं नहीं करूंगी।' ... विवाह नहीं करेगी?

' नहीं।'
रजनी पूर्ववत गंभीर मुंह किए हुए बोली- किसी प्रकार भी नहीं।- क्यों?- चाहे जिसे हाथ पकड़ा देने का नाम ही विवाह नहीं है। मन का मिलन न होने पर विवाह भूल है।- माता चकित होती हुई रजनी के मुंह की ओर देखती हुई बोली, 'हाथ पकड़ा देना क्या बात होती है। पकड़ा नहीं देंगे तो क्या लड़कियां स्वयं ही देख-सुनकर पसंद करने के बाद विवाह करेंगी?

अवश्य!

पापा ने करण को बैरंग लौटा दिया क्योंकि वह मुझसे प्यार करता था, पापा की संपत्ति से नहीं। आंखें उठाकर चीत्कार करने लगी, 'मैंने धर्म को साक्षी मानकर उसे अपने पति के रुप में स्वीकारा। इस संसार में उसे छोड़कर कोई भी पुरुष मुझे स्पर्श नहीं कर सकता।'

,रजनी की चीत्कार बाहर तक जा पहुंची। क्या हुआ क्या हुआ ,क्या हो गया ,कहते हुए राममूर्ति बाबू दौड़ते हुए आए। रजनी मूर्छित होकर पलंग के समीप पड़ी हुई थी। माता रो पड़ी' ,मेरी रजनी को क्या हो गया ?डॉक्टर को बुलाओ , पानी लाओ ,हवा करो इत्यादि... 'बहुत देर बाद आंखें खोलकर रजनी धीरे-धीरे बोली' ,मैं कहां हूं ?उसकी मां उसके पास मुंह लाती हुई बोली' ,तुम मेरी गोदी में लेटी हो। 'रजनी गहरी सांस छोड़ती हुई धीरे-धीरे बोली-ओह तुम्हारी गोदी में ?मैं समझ रही थी कहीं अन्यत्र स्वप्न में उसके साथ बही जा रही थी ?पीड़ा-विचलित आंसु उसके कपड़ों पर बहने लगे।

,रात को माता रजनी के पास बैठ कर बोलीबेटी किसके साथ विवाह होने पर तुम सुखी हो जाओगी '?रजनी आंखें बंद करके बोली सुख-दुख मुझे कुछ नहीं है ,वही मेरे स्वामी हैं- करण! मेरा करण। वही जो मुझे देखने आया था। चंद लम्हों में मैंने उसे मन प्राण ,जोवन सब कुछ दे डाला। इस जन्म में न पा सकूं तो अगले जन्म में अवश्य पाऊंगी। रात में ही उसकी मां राममूर्ति बाबू से बोली- करण के साथ हमारी रजनी का जिस तरह विवाह हो सके ,वह करो।

दूसरे दिन सवेरे ही राममूर्ति बाबू करण के घर जा पहुंचे। उसके पापा से बोले' ,करण ने मेरे मस्तिष्क को दासता की ज़ंजीरों से मुक्त कर दिया। समधी जी बरात लेकर आइए और अपनी बहू को ब्याह कर ले जाइए। ' हमारी खुशियां लौट आई। कुछ दिनों बाद धूमधाम से हमारा विवाह संपन्न हुआ। रजनी के पापा के चेहरे पर खुशी भरा तेज साफ झलक रहा था।

कहानी

इतवार की नींद

अंगरू ने मंगरू से कहा- "जम्हाई काहे ले रहे हो? आज तो थोड़ा बतिया लो, वैसे भी हम साथ होकर भी नहीं होते। हर पल, हर घड़ी हम साथ होते हैं, साथ खाते हैं, साथ पीते हैं, साथ जुतते हैं और साथ ही पैना की मार झेलते हैं, फिर भी हम साथ नहीं होते। एक दूसरे का दर्द बांट नहीं पाते, एक दूसरे से दिल का हाल कह नहीं पाते, बस देखते हैं एक दूसरे को मूक और बधिर होकर।"

मंगरू बोला- "आखिर उपाय क्या है? गुलामी में पैदा हुए, गुलामी में मर जाएंगे। एक दूसरे का हाल हम जानते ही हैं, फिर बतियाने सतियाने से फायदा क्या? चुपचाप अपने हिस्से का लेहन खाओ और जुआठ में बंधकर जुतते रहो।"

अंगरू बोला- "लेकिन कल तो इतवार की छुट्टी है न, आज थोड़ी मस्ती कर लेते हैं। सुबह जल्दी उठने का टेंशन नहीं है न।"

मंगरू ने जम्हाई ली। बोला- "भाई कुछ कह नहीं सकते, आजकल आदमी सारा नियम कानून ताक पर रखकर चलता है, उसे हमारी कहां चिंता?"

अंगरू ने असहमती जताई- " अपना मालिक वैसा नहीं है, खेत बिगड़ जाए तो बिगड़े मगर वह इतवार को हल नहीं उठाएगा। कल ही दूसरे गांव का एक आदमी आया था, अपनी जुताई के लिए हम-दोनों में से एक क़ो मांग रहा था इतवार के लिए। मालिक ने साफ मना कर दिया। कह रहा था इतवार की जोताई में बैलों की टांग कट जाती है।"

मंगरू हंसा- "हा हा हा मालिक को हमारी नहीं अपने आराम की फिकर होगी।"

अंगरू भडका- " यार तुम हमेशा गलत ही काहे सोचते हो? उधर देखो मालिक खुद खरहरे खटिया पर लेटा है, मच्छर भिनभिना रहे हैं लेकिन हमारी सुविधा के लिए नीचे पुआल बिछा रखा है, धुंआ कर रखा है ताकि हम आराम से सो सकें।"

मंगरू थोड़ा नरम हुआ। बोला- "शायद ठीक ही कह रहे हो, एक बार मुझे बुखार लगी थी तो बेचारा परेशान हो गया था। अपने हाथों से मुझे रोटी खिलाता था। "

अंगरू बोला- "और जब मेरी टांग छिल गई थी तो अपने हाथों से तेल लगाता था। यार कुल मिला कर मालिक अपना दयालू है।"

मंगरू ने फिर उपदेश दिया- " जैसा भी हो, हमारे दिन अब लदने वाले हैं और सच कहो तो मुक्ति भी मिलने वाली है। देख रहे हो न आजकल खेती के लिए एक से एक मशीन आ रही है। दूसरे लोग तो कब का मशीनी खेती शुरू कर चुके हैं मगर हमारा मालिक है कि अब भी हमें रगड़े जा रहा है।"

अंगरू बोला- " भाई जबतक जुतोगे तबतक जिओगे। आजकल जो जुतते नहीं वो कसाई के हाथ कटते हैं।"मंगरू जुगाली करते हुए बोला- " ससुरी ऐसी जिंदगी से तो मर जाना ही बेहतर है। अच्छा चल अंगरू एक कथा सुना। कथा सुनते-सुनते अच्छी नींद आ जाती है। जब मैं छोटा था तो मां सुनाती थी। मन तो करता था कि मां की गोद में सो जाऊं लेकिन वो हमारा खुसट मालिक मुझे दूर खूंटे से बांधकर रखता था। मेरी मां मेरी तरफ देखती थी एकटक और उसकी आंखों से कथा निकलकर मेरे कानों द्वारा दिल तक पहुंचती रहती थी।"

मंगरू की बात सुनकर अंगरू भी बचपन में चला गया। बोला- "अच्छा तो सुन, बचपन की एक बात बताता हूं। हम जहां रहते थे, वहां मालिक के पास बहुत सी गायें थी। जब किसी को बछिया होती थी, मालिक बहुत खुश होता था और जब हमारे जैसे लौंडे पैदा होते थे तो ससुरा मुंह बना लेता था सुथनी जैसा।"

दीपक कुमार

जन्म स्थान~ छपरा (बिहार)

स्थाई पता~ ग्राम +पो- चेंफूल

जिला - सारण (बिहार) -841209

मंगरू ने बीच में टोका- " यार ये आदमी भी अजीब टाइप का जानवर है न! जब खुद के बेटा होने पर खुश होता है और अपनी गाय के बेटा होने पर रोता है। तब तो उसे बछिया चाहिए होती है और अपनी बेटी होने पर मातम करता है। ये बात आजतक समझ नहीं आई।"

अंगरू ने कहा- "आगे की कहानी तो सुन। जब हम छोटे थे, खूंटे में बंधे छटपटाते रहते थे और सूरज के डूबने का इंतजार करते थे। अंधेरा होते ही एक आदमी आता था और हमारी मां के थान को जोर-जोर से खिंचता था और दूध की धार फूट पड़ती थी। दिन भर की भूख और प्यास से तड़पते हम बच्चों को अंत में छोड़ा जाता था तो दौड़कर अपनी-अपनी मां के थान से चिपक जाते थे। पर हाय रे नसीब! दो-चार कुल्ला के बाद ही आदमी हमें जबरन खींच कर वापस खूंटे से बांध देता था। हम तो तड़पते ही थे, हमारी मां भी मचल जाती थी। एक दिन ऐसा हुआ कि हममें से एक बच्चा मर गया। उसकी मां रो रही थी, खाना

तक नहीं खायी और सदमे की वजह से उसका दूध भी बंद हो गया। लेकिन आदमी तो आदमी ठहरा, उस बच्चे की खाल में भूसा भरके उसकी मां के सामने लाया गया ताकि उसे भरम हो कि मेरा बेटा जिंदा है। उसकी बेचारी और दुखी मां सब समझती थी और कहना चाहती थी कि अरे वो मनुष्यों मेरा खून तक पी जाओ लेकिन मेरी ममता का उपहास तो मत करो। मेरे बच्चे की खाल में भूसा भरके तुम मुझे मूर्ख बनाना चाहते हो सिर्फ इसलिए कि मेरा दूध आता रहे तो आओ मैं तुम्हें अपना लहू तक पिलाने को तैयार हूं।"

बात से बात निकलती है। एक कहानी मंगरू के पास भी थी। अब उसने कहना शुरू किया- "मैं जब जवानी की दहलीज पर कदम रख ही रहा था कि प्रेम उबाल मारने लगा था। हमारे मालिक के पास एक सुंदर सी बछिया थी। चाहती तो वो भी थी मुझे लेकिन कह नहीं पाती थी और मैंने जब जब कहना चाहा, मुंह पर नकाब की वजह से कह नहीं पाया और सारी प्रेम कहानियों की तरह हमारी कहानी में भी त्रासदी आ गई। मालिक ने एक दिन मुझे बेच दिया और वहां मेरे अंडकोष को कुचलकर हमेशा-हमेशा के लिए मेरी जवानी को जला दिया गया। काश कि हम कनकटा सांड होते।"

अंगरू खर्राटें भरने लगा था, थोड़ी देर जुगाली करने के बाद मंगरू भी सो गया। सुबह उसके कानों में कुछ आवाजें आ रही थीं- "डाक्टर साहब पता नहीं दोनों बैलों को हुआ क्या है, दस बज गये अभी तक उठे नहीं। चेक कीजिए, कुछ हुआ तो नहीं इनको, आजतक तो कभी इतनी देर तक नहीं लेटे। कुछ कीजिए डाक्टर साहब ये ठीक न हुए तो मेरी बड़ी पूंजी डूब जाएगी।"

अंगरू- मंगरू दोनों सुन रहे थे पर इतवार की नींद से उठने का मन नहीं हो रहा था।

नलिन खोईवाल
इंदौर

गीत

कोना-कोना क्या खूब धुले हैं
मन का मैल भी मिट जाता है
प्रेम से मिलते जब गले हैं ।

दीपों से अँधियार मिटे हैं

जगमग-जगमग दीप जले हैं
दीपों से अँधियार मिटे हैं
अनार चकरी रेल चले हैं
अधरों पर मुस्कान खिले हैं ।

माँ तेरी किरपा से हमको
धन यश वैभव सभी मिले हैं
मिल कर धरती से ये अम्बर
करते दूर शिकवे गिले हैं ।

घर-घर में नवप्रकाश छाया
तारों में चंदा हरषाया
चेहरों पर खुशहाली छाई
दीप मालिका पर्व है आया ।

नभ से बरसती हैं फुलझड़ियाँ
आई मिलन की अब ये घड़ियाँ
द्वार देहरी पर खूब सजा दे
फूल मोतिन की सुंदर लड़ियाँ ।

हाथों में मेहंदी रचे हैं
आँगन में रंगोली सजे हैं
सुख समृद्धि घर-घर आए
ढोल नगाड़े खूब बजे हैं ।

स्वच्छता के ये सिलसिले हैं
बेर सीताफल हम चढ़ाएँ
लक्ष्मीजी की आरती गाएँ
कितने मीठे और रसीले
गुपचुप जामुन हिल मिल खाएँ

एक दीप उनके नाम

जो गुमनाम है
गुमराह है
बदनाम है
उनकी चौखट पर जलाएँ
एक दीप उम्मीद का ।

जो अनाम है
बेदाम है
बेकाम है
उनकी चौखट पर जलाएँ
एक दीप विश्वास का ।

जो बेबस है
लाचार है
निराश्रित है
उनकी चौखट पर जलाएँ
एक दीप प्यार का ।

हम जिएँ
नन्हे दीपक का जीवन
और करें .....
औरों की ज़िंदगी रौशन ।

कहानी

बदलाव

मैं अरुण के सीने से लगी जोर जोर से रो रही थी, उनका हाथ मेरे सर पर था और वो मुझे चुप कराने की कोशिश कर रहे थे।

आज मैने जीवन मे रिश्तो की सम्बन्धो की लोगो की कद्र समझी।

मैं रोते हुए बार बार उनसे माफी मांग रही थी। आज लग रहा था उन सभी से माफी मांगू जिनके दिल को कभी न कभी दुखाया था मैने। जिनके साथ बुरा व्यवहार किया था।

मैं पूरे परिवार में नकचढ़ी के नाम से जानी जाती थी। न किसी से बात करना न ही हमउम्र बच्चो से घुलना मिलना। परिवार रिश्तेदार क्या होते हैं ये कभी जाना नही। कुछ मेरी सुंदरता का घमंड था तो कुछ मम्मी की शिक्षा।

हमारा परिवार एक ही शहर में रहता था मगर अलग अलग। दादी,चाचा, ताऊजी, सब थे मगर हमारा आना जाना नही था कहीं। किसी घर मे कुछ कार्यक्रम होता तो पापा अकेले ही जाते। मैंने कभी न किसी का सुख देखा न ही दुख। मम्मी को कोई पसन्द ही नही आता था। कोई न कोई बहाना बना देती हर बार। एक समय के बाद सबने बोलना ही छोड़ दिया। पापाजी ने भी परिस्थिति से समझौता कर लिया। हर बार मम्मी की जलीकटी सुनने से बेहतर यही लगा होगा उन्हें।

मैं भी इसी रंग में ढलने लगी क्योंकि जो देखते रही बचपन से वही सीखा। कोई मेहमान आ जाये घर पर तो कोई मतलब नही मुझे। परिवार के किसी भाई बहन से कोई लगाव ही नही बन पाया। कभी भूले भटके एक जगह इकट्ठा होते तो मम्मी मुझे न छोड़ती। जब बड़े हुए तो किसी से वास्ता ही नही रहा। मगर कहते हैं न किसी के बिना जीवन रुकता नही। तो हम भी अकेले जीने के अभ्यस्त होते गए। परिवार रिश्तेदार दोस्ती जैसे शब्दों से परिचित लेकिन इनकी सौंधी महक से अनजान।

एक दिन मेरी शादी हो गयी, सबकी होती है जैसे। मम्मी चाहती थी एकल परिवार जहां ज्यादा झंझट न हो। मगर तकदीर के आगे चली किसकी है। तीन भाइयों दो बहनों से भरापूरा परिवार मिला, जो हमारे शहर से थोड़ी दूर पर दूसरे शहर पर रहता था। शादी के बाद कुछ दिन तो मुझे लगता मैं चिड़ियाघर में आ गयी हूं। ननदें कुछ दिन बाद ससुराल चली गयी। रह गए दोनो जेठ उनका परिवार और सास ससुर।

तब भी इतने लोग भी मैंने एक साथ रहते कहीं नही देखे थे। बड़ा अजीब सा लगता। दिन भर सारे जेंट्स दुकान चले जाते बच्चे स्कूल तो सास जेठानियाँ बैठ कर बातें करती या कुछ काम करती। तब मैं अपने कमरे में घुसी रहती। मेरी तो आदत ही नही थी ऐसी। किसी से बात करने की गप्पे मारने की। बड़ी पापड़ अचार कैसे बनता है देखा ही नही था। ले देकर खाना बना लेती थी यही शुक्र था। घर के काम कभी मन से किये ही नही थे। और बाहर के काम करने नही दिए कभी। तो भोदूँ मैं इन सबके बीच बड़ा अटपटा महसूस करती। इसलिए सबसे अच्छा कमरे में पड़े रहो। कुछ महीनों में सबको समझ आ गया मैं कैसी हूँ। सास ने कोशिश की समझाने की, फिर उन्हें भी लगा पत्थर पर रस्सी घिसने से निशान आने में समय बहुत लगेगा इससे अच्छा है समय पर छोड़ दिया जाए सब। मेरा मन होता तो काम करती नही तो अपने राजभवन में। कभी टीवी कभी मोबाइल और इनके अलावा मम्मी से घण्टो बातें। मेरे आने के बाद उनके पास भी कोई नही था। अकेलापन महसूस करती थी वो भी। मेरे सुबह उठने से लेकर सोने तक पूरी दिनचर्या उनसे शेयर करती। और बदले में मिलती

संजय मृदुल
भरत कुटीर, भावना नगर
खमार डीह, रायपुर
छत्तीसगढ़

सलाह। ज्यादा काम न किया कर। बच्चो को ज्यादा मुह न लगाया कर। अरुण का बस ध्यान रखा कर। बाकी के पीछे सर खपाने की जरूरत नही। ऐसा कोशिश कर की अरुण अलग घर लेकर रहने लगे। ऐसी ही ज्ञानवर्धक शिक्षा।

ऐसा नही की अरुण प्यार नही करते मुझे। सब फरमाइशें पूरी करते, ध्यान रखते, कोशिश करते कि सब से पटरी बैठ जाये मेरी। मगर बचपन से देखते सुनते मैं वो दुम हो गयी थी जो कभी सीधी नही हो सकती।

दो साल हो शादी को हमारी। सब ने जैसी हूँ वैसी एडजेस्ट कर लिया मेरे साथ। परिवार में एका बहुत है मेरे लाख कोशिश के बाद भी अरुण बदले नही। ये हुआ कि मुझ से ज्यादा बातें नही करते। मैं जब चाहे मायके चली जाती तो भी कुछ नही कहते।

कुछ पति होते हैं ऐसे जो हर हाल में परिवार को खुश रखने के लिए त्याग करने को तैयार रहते हैं अरुण उनमें से हैं। मैं अपने व्यवहार आदतों के कारण सबसे दूर होती चली गयी मगर मुझे कोई फर्क नही पड़ता था। क्योंकि जैसी शिक्षा मिली वैसी ही आदतें बन गयी थी।

एक दिन सुबह नींद खुली तो देखा सन्नाटा पसरा हुआ था घर मे। सभी बड़े गायब। और बच्चे घर पर।
पता चला आधी रात बाबूजी की तबियत बिगड़ गयी तो एडमिट करना पड़ा। अरुण को काल किया तो बोले अटैक आया है बाबूजी को, एडमिट किये हैं। तुम्हे उठाया था पर तुम उठी नही। तुम घर के काम देख लो बने तो,यहां सब हैं।
मुझे कोई फर्क नहीं पडा। जैसे बन पड़ा नाश्ता बनाया बच्चो को खिलाया फिर मम्मी को काल कर के बताया। उन्होंने कहा तू घर पर रह, सब तो हैं वहां, क्या करेगी जाकर।
सात दिन रहे बाबूजी, मैं अरुण के साथ चली जाती, कुछ देर में अजीब सा लगने लगता वहां। सब भाई मिलकर डयूटी बांध लिए थे, दोनो जेठानी भी आती जाती रहती। बस मैं घर पर रहती जितना मन होता काम कर देती। कोई कुछ कहता नही था मुझे मगर सबके चेहरे बयान कर देते थे। अरुण भी चुपचाप सेवा में लगे रहे। रात में वही रुकते सुबह आते फिर तैयार होकर दुकान चले जाते। जितना कम बोलना पड़े मुझसे यही कोशिश करते। मुझे फर्क कहां पडता था किसी बात से। रिश्तो की कद्र करना कहाँ सीखा था मैंने। न मुझे किसी की परवाह थी।
समय बीत जाता है, बातें रह जाती हैं। मन मे जो घाव लगते है वो भर जाते हैं मगर निशान रह जाते हैं।एक छत के नीचे मैं सबसे अजनबी होती गयी। न कोई मुझे कोई बात बताता न ही किसी कार्यक्रम में जाने के लिए जोर डाला जाता। बस अरुण बता देते। मर्जी हो तो चलो नही तो घर पर रहो।
मैं भी आंख वाली अंधी। मम्मी और मैं मेरी दुनिया इससे आगे आज तक नही बढ़ पाई।

आज लग रहा है सबने कितना कोसा होगा मुझको। कितने दुख दिए है मैंने सबको। आज दस दिन हो गए पापाजी को अस्पताल में। उनके लंग्स में पानी भर गया था। स्थिति गम्भीर थी। काफी समय से तबीयत ढीली थी मगर बताया नही उन्होंने। न किसी को फिक्र थी। मम्मी बस दवाई दे देती समय पर। बाकी वो जाने।
मम्मी का काल आया कि पापाजी को अस्पताल में।एडमिट किया है जल्दी आ जा। मैं अरुण से बताया तो उन्होंने मम्मी से बात की और बोला मैं भी चलता हूँ। वो दिन और आज का दिन है दस दिन हो गए अरुण घर नही गए। पापाजी के साथ हैं लगातार। इस बीच रोज ही ससुराल से कोई न कोई आ जाता। ताऊजी चाचा बुआ कोई नही आये। बस फोन कर के हालचाल ले लेते।मामा एक दिन आये और नसीहतें देकर चले गए।

मैं भी ज्यादातर समय साथ रहती। ये बुरा समय शायद मुझे सिखाने को आया है ऐसा महसूस हुआ मुझे।
आज पापाजी की तबियत काफी अच्छी है। दुनिया भर की नसीहतें देकर डॉक्टर ने आज छुट्टी दे दी है। अरुण मुझसे कहने लगे अभी तुम यहीं रुको। यहां जरूरत है तुम्हारी। मैं रोज रात आ जाया करूँगा। पापाजी अच्छे हो जाएं फिर ले चलूंगा तुम्हे। बहुत ध्यान रखना पड़ेगा इनका। बहुत कमजोर हो गए हैं तुम रहोगी तो सब सम्हाल लोगी। कितने विश्वास से कहा उन्होंने। मैं फ़फक कर रो पड़ी। अपना सब किया याद आने लगा। सब भूलकर कैसे मेरे परिवार ने मेरा साथ दिया परेशानी में। मैं अरुण से बोली। आज तुम और रुक सकते हो क्या? कल मैं एक बार घर जाना चाहती हूं। वो बोले- क्यों? मैने कहा बस कुछ जरूरी काम है।
ठीक है, उन्होंने बोला

मैं कल सब से माफी मांगूंगी। उम्मीद है छोटी समझ कर, नादान समझकर माफ कर देंगे मुझे। मैं उनकी ही छोटी बहू तो हूं। अपना घर अपना परिवार क्या होता है ये जान लिया है मैंने।

****

लघुकथा

सपना चन्द्रा

कहलगांव, भागलपुर बिहार

फैसला

दो गुटों के बीच हुई मारपीट और तोड़-फोड़ के मामले में रमाशंकर के साथ-साथ माधव को भी पुलिस पकड़ लाई।
दोनों की ठेले पर दुकान सजती थी..आसपास जगह कम होने की वजह से लोग कभी-कभी उलझ जाते थे।
उस दिन क्या बात हुई जो भीड़ आपस में लड़ बैठी,पता नहीं...!!
हालंकि गलती पुरी तरह किसकी थी और झगड़े की क्या वजह रही पुलिस के पल्ले भी नहीं पड़ी।
पुलिस की भनक लगते ही तीन हिस्से भीड़ गायब थे।
इससे हमको करना भी क्या है..ऐसे फसाद तो होते रहते हैं।यही तो कमाई का मौका होता है।
यही सोंचकर दरोगा ने कड़क आवाज में उन दोनों को कहा..."आपस में समझौता कर लो,और ले देकर निबटान करो।"
हमने जब कुछ किया ही नहीं तो कैसा लेन-देन और कैसा समझौता..?
इस फसाद का कारण तो हो..न ठेले होते न लोग आते.!
हवलदार!.डाल दो इन दोनों को लॉक-अप में..कुछ देर रहेगें तो अक्ल ठिकाने आ जाएगी।
माधव दरोगा जी की बातों मे आ गया..हँसते हुआ बाहर आ गया।
बेचारा रमाशंकर ईमानदारी की लड़ाई लड़ना चाहता था और लड़ा भी।
पाँच वर्ष लग गये अपने आप को सही साबित करने में।
कोर्ट परिसर से बाहर निकलते ही दरोगा जी सामने नतमस्तक हो गया।
काश!..आप की बात मानी होती तो ये पाँच वर्ष व्यर्थ न जाते।

कहानी

रोशनी

कार्तिक का महीना था। पौर्णमी के दिन सभी लोग घरों में कार्तिक दीप जलाते थे। इसके अलावा बडे-बडे बंगले बिजली के लाल-हरे-पीले बल्बों से जगमगा रहे थे।

सुन्दर दास की इकलौती बेटी 'नीना' कार्तिक उत्सव की तैयारियाँ बडी शौक से कर रही थी। अपनी इकलौती बेटी का विवाह लाखों का दहेज़ देकर ही पिता ने करवाया था। उसका दामाद 'करुण' एक इंजीनियर है। करुण को अपनी पत्नी नीना से बहुत प्यार था। इसके कारण उस घर में खुशियाँ-ही-खुशियाँ थी।

हल्की नीली साडी पहनकर नीना बंगले में एक सुन्दर गुडिया की तरह घूमती-फिरती रहती थी। उस दिन बहुत देर होने पर भी करुण आया नहीं, नीना उसकी इंतज़ार में खडी थी। उसकी नज़र गेट पर पडी। तभी करुण अंतर आता हुआ देखा।

नीना ने कहा "कब से तुम्हारी इंतज़ार कर रही हूँ, पापा भी न जाने कितनी बार पूछ चुके हैं।"

करुण ने बताया- माफ कर दो। मैं तुम्हारे लिए पटाके लेने गया था।

पिता ने आकर कहा "ओ बेटे, तुम दोनों पटाके जलाओ, मैं तो कुछ देर आराम करके आऊँ।"

दोनों पटाका जलाना शुरु किया। अब आसपास के घर के सभी बच्चे भी वहाँ आए। मिठाईयाँ खाकर, पटाके जलाकर, साथ मिलकर सब बहुत आनन्द मनाते रहे। तभी पास में पडा हुआ अधजला पटाका ज़ोरों से उछला और सीधे नीना के आँख और मुख में लग गया।

नीना की दाहिनी आँख उस पटाके से बुरी तरह झुलस गई। सभी लोग नीना की ओर दौड पडे।

सारी हँसी-खुशी उदासी में बदल गई। तुरंत ही सुन्दर दास और करुण नीना को अस्पताल ले गये।

डाक्टर ने आँख की जाँच करके बताया कि नीना की दाहिनी आँख बुरी तरह जख्मी हो गयी है और अब इसमें रोशनी का आना भी बहुत मुश्किल है। पटाके से जलकर उसके मुख भी विकृत हो गयी।

बहुत दिन बीत गए। इसके बीच करुण दो-तीन बार नीना को देखने आया। फिर धीर-धीरे उसका आना-जाना बंद हो गया। नीना बहुत दुखी हुई। करुण को देखने के लिए उसका मन तडप रहा था।

उसने पिता से कहा "पापा करुण को बुलाकर आना, वह क्यों यहाँ आया नहीं।"

पापा ने नीना के हाथ दबाते हुए कहा "नीना बेटे, मैं तुम्हारे साथ हूँ। घबराने की कोई बात नहीं। सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

पापा करुण को बुलाने गए।

करुण ने कहा "पापा, अब नीना बिलकुल अंधी एवं बेरूप हो गयी है। इस स्थिति में उसके साथ जीवन बिताना दूभर की बात है। मुझे भी एक स्टाटस है। पापा, मुझे तलाक चाहिए।"

यह सुनकर पापा को बहुत दुख हुआ। उनका सिर चक्कर खाने लगा।

यह समाचार पापा ने नीना से नहीं बताया, लेकिन किसी के मुँह से यह खबर नीना के कानों में भी पडी। वह, यह सह नहीं सकी। वह खाना, पीना, सोना सब भूल गयी। एक हिरणी के समान कुदकने वाली नीना एक कुम्हलाई कली-सीदीख पडी। उसकी आँख में नहीं मन में भी अंधेरा छाने लगा।

एम निर्मला कुमारी

(सेवानिवृत्त हिंदी अनुवादक, एन सी सी निदेशालय, केरल और लक्षद्वीप, कोट्टण हिल बंगला, तिरुवनंतपुरम-10) टी सी-22/391(5), 'कुडुम्बम', कोंचिराविला,मणक्काड पी ओ

सुन्दर दास के पास पैसा है। वह हिम्मत हारनेवाला आदमी न था। वह बेटी की आँख की रोशनी वापस लाने के लिए अपनी सारी संपत्ती खोने को भी तैयार था। वह, नीना की आँख एक-से-एक नए-नए डाक्टर को दिखाते ही रहे। अंत में उनकी भेंट डाक्टर 'नवीन' से हो गई। वह आँखों की चिकित्सा में लोक-प्रसिद्ध था। डाक्टर ने नीना की आँख ठीक कर देने का पूरा विश्वास दिलाया। उन्होंने पिता से कहा कि नीना के मन की अंधेरापन दूर करना पहली आवश्यकता है। इसके लिए साहस और आत्मविश्वास ही मुख्य है।

अगले दिन नीना के ऑपरेशन का दिन है। वह करुण के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। लेकिन वह नहीं आया। डाक्टर ने उसे तसल्ली दी। डाक्टर नवीन पूरी रात जागते हुए प्रार्थना कर रहे थे। इतनी जख्मी नसों में रोशनी फैलाना साधारण काम तो नहीं है। उसने अपना

सब कुछ ईश्वर पर सौंपा दिया।

नीना उसका उपहास करनेवाले करुण को अपने मन से हटाने का प्रयत्न कर रही थी। उसको अब मालूम हुआ कि करुण ने उसके प्रति जो प्यार दिखाया था, वे सब सिर्फ दिखावट थी। इसी दुखी अवस्था में वह एक करुणा भरी गीत गुनगुनानेलगी। तब डाक्टर नवीन, नीना को देखने आये। उसने वहाँ छिपकर गीत सुना। उसने मन ही मन सोचा कि करुण कितना भाग्यवान है, इसलिए ही उसे इसी तरह की एक निष्कलंक, निर्मल नारी को मिला।

नीना का ऑपरेशन ठीक-ठाक हो गया। डाक्टर नवीन के मन में नीना की आँख ठीकतरह देखने का उत्साह उभर आया। नीना को खुश करने के लिए नवीन रोज दो-तीन बार आता था। उसकी खुशी बन्द आँखों से नीना देख सकती थी। नवीन के संपर्क से नीना का खोया आत्मविश्वास पुन: उभरआया।

इसके बीच एक दिन नवीन या। उस दिन नीना ने अपने बन्द आँखों से देखा कि हमेशा फूल सा खिला हुआ डाक्टर का चेहरा आज बिलकुल कुम्हलाया हुआ लग रहा था।

नीना ने बार-बार डाक्टर की उदासी का कारण पूछते ही उन्होंने कहा "आज उसके विवाह का वर्षगांठ है।"

नीना का गोरा चेहरा लाल हो गया, वह हँसकर बोली "डाक्टर आपको मेरी तरफ से लाखों बधाइयाँ, फिर क्यों आप इतनी उदास। यह शुभ समाचार बताया क्यों नहीं, आप का मुँह मीठा करने के लिए यहाँ कुछ नहीं है, फिर नीना ने हँसते हुए कहा रुकिए डाक्टर साब, यहाँ तो सिर्फ चीनी ही है। मुँह खोलिए, थोडा सा खाईए। नीना को इतनी खुश देखकर नवीन ने कहा– मैं सब बताता हूँ नीना। तुझसे कुछ छिपा रखना अब असंभव है, सुनो।"

एक पार्टी के लिए जाने का वक्त है। मैं पत्नी के साथ स्कूटर में आ रहा था। एक कार, सीधे जाकर मेरी स्कूटर पर टकराया। पत्नी उसी वक्त ही मर गई। मुझे थोडा -सा घायल हुआ बस। तभी बीबी की आँखें निकाली गई थी। वही आँख दिनों पहले आप को रखी थी, नीना। मैं ने आप से कुछ बताया नहीं। पत्नी तो नष्ट हो गयी। उसकी आँखें सुरक्षित स्थान में रखना मेरा विचार था। तुम्हारे चेहरे पर पत्नी की आँख देखकर मेरे मन में कितना हर्ष है, तुम्हें उसका पता नहीं होग, इस में से हुआ आनंद तुमारी समझ में नहीं आगा।

ये सब सुनकर नीना आश्चर्यचकित हो गयी। नवीन के इस कार्य से उसको बहुत अधिक गर्व हुआ। उसने नवीन को बहुत धन्यवाद दिया।

अगले दिन सुबह कांपते हाथों डाक्टर ने नीना की आँखों की पट्टी खोली। नीना के सामने पापा थे। डाक्टर ने बाएँ आँख बन्द करके दाहिने आँख धीरे-धीरे खोलने को कहा।

नीना ने धीरे-धीरे आँख खोली। उसने बताया कि हल्का धुंधला सा उसे दिखाई दे रहा है। उसने संतोष से जोर से चिल्लाया- पापा,मेरे पापा, मैं पापा को देख सकती हूँ, पापा .....

नवीन खुशी से उछल पडा। खुशी से उसकी आँखों में आँसू भर आई। उसने कहा- नीना तुम्हारी आँख ठीक हो गयी। मैं धन्य हो गया नीना।

यह खबर सुनकर करुण नीना को देखने आया।

डाक्टर नवीन ने नीना और करुण को पास खडा देखकर मुस्कुराते हुए कहा – "आप दोनों को मेरी तरफ से लाखों बधाइयाँ। करुणजी, अब नीना को खूब संभालकर रखिए। अच्छा, नीना अब मैं चलताहूँ, मेरा काम पूरा हो गया।"

यह सुनकर नीना ने ज़ोर से चिल्लाया, "चले जाओ करुण यहाँ से, चले जाओ। तुम मुझे नहीं चाहते, मेरा धनदौलत चाहते। तुम ने मुझ पर जो प्यार दिखाया था, वह सिर्फ दिखावटी है। आगे भी मैं इसी हालत में हूँगी तो तब भी तुम मुझे छोडेंगे, तुम ने पहले बताया कि तुम्हें तलाक चाहिए, अब मैं बताता हूँ कि मुझे तलाक ज़रूर चाहिए। चले जाओ यहाँ से। आप के जीवन में मैं कभी नहीं आऊँगी। यह डाक्टर एक देवता है।"

पापा अत्यधिक संतोष के साथ आगे बढे। फिर उन्होंने डाक्टर नवीन और नीना के हाथ पकडकर एक साथ रखा और कहा "जब चाहो तुम दोनों मिल जाओ, अब मैं धन्य हो गया।"

नीना ने कहा- "एक बेटी के प्रति पिता का जो स्नेह -वात्सल्य है जो आपने दिखाया। इसके लिए बहुत धन्यवाद पापा। लेकिन एक पति के रूप में नहीं, मेरे एक अच्छे दोस्त के रूप में डाक्टर साब मेरे साथ होंगे तो हम दोनों मिलके इस देश को रोशनी फैलाने का कार्य कर सकते हैं। इसके लिए आप का आशीर्वाद चाहिए, पापा।"

पापा ने कहा – "इस समाज-सेवा कार्य में मैं भी आप के साथ होंगे, ज़रूर होंगे बेटे.....।"

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव'कोमल'
व्याख्याता हिन्दी लहार, भिण्ड (म०प्र०)

काव्य

ले पायल झंकार शरद ऋतु आई

वर्षा तो है अब चली, लेकर सुखद बहार।
घन गर्जन पिक सरस स्वर, मनभावन बौछार।
मनभावन बौछार, रसीली भीगी रातें।
बीती पावस रात, गईं वर्षा की बातें।
कह 'कोमल' कविराय, प्रकृति का कण-कण हर्षा।
सर्दी का संकेत, विगत अब समझो वर्षा।।

दिखता है चहुंओर अब, हरा-भरा विस्तार।
सर्दी ने है अब दिए, अपने पैर पसार।
अपने पैर पसार, सुखद शीतलता छाई।
कर पायल झंकार, शरद ऋतु देखो आई।
कह 'कोमल' कविराय, प्रकृति का कण-कण हँसता।
बिखर गया आनंद, चतुर्दिक सुन्दर दिखता।

दिवा शंकर सारस्वत 'प्रशांत'
एटा, उत्तर प्रदेश

नुमाइश

नयी नवेली दुल्हन राधा कुछ अल्हड़ सी, सकुचाती सी दिखाई देती। नये घर में संकोच होना आवश्यक था। हालांकि वह हमेशा से हंसमुख रहने बाली, एक चंचल हिरणी जैसी थी। एक जगह रुकना जानती नहीं थी। पर ससुराल में उसके पैर जम गये। मुंह पर टेप सा लग गया।

राधा का आदमी सोहन दूर कस्बे में एक फैक्ट्री में काम करता था। वहीं उसका ससुर भी नौकर था। अब सभी के भाग्य में तो जमीन नहीं होती। फिर गुजर वसर के लिये आदमियों को गांव छोड़ना होता।

गांव में राधा के साथ बस उसकी सास जमुना थी। जमुना जरा मोटे शरीर की, कुछ कठोर सी लगने बाली स्त्री। उसे देख राधा की हिम्मत और जबाब दे जाती। मायके से बड़ी बूढियों ने बहुत सिखा पढा कर भेजा था। पहले से शादीशुदा उसकी सहेलियों ने जो अपनी सास का पुराण उसे सुनाया था फिर उसे जमुना भी ललिता पवार लगती।

जमुना अपनी तरफ से राधा का ध्यान रखती। पर उसका भी बोलने का अपना तरीका था। बहुत समय से घर में अकेली स्त्री रही उसकी आवाज जरा ऊंची ही थी। कोशिश करके भी वह राधा की उदासी दूर न कर पायी।

जमुना चाहती कि राधा बाहर निकले। अपनी उमर की लड़कियों से हस बोल मन बहलाये। पर जानती थी कि अब उसे किसके साथ की जरूरत है। वह खुद भी भुक्तभोगी थी। जब वह शादी होकर आयी थी, उसका आदमी भी कमाने शहर चला गया था। दिन रात उसी की याद तो वह करती थी। बहू की भी वही हालत होगी।

दीपावली पर कुछ दिन की छुट्टी मिली। सोहन कुछ दिन घर रुका। राधा भी जरा खिली खिली रही। हालांकि जमुना से कटी कटी रही। दूसरे गांव में एक नुमाइश लग रही थी। कुछ खेल, तमाशे थे। सोहन भी जा रहा था। अपने बचपन के दोस्तों के साथ। जमुना ने सोहन को रोक दिया। सोहन नुमाइश देखने जायेगा पर बहू के साथ। आवाज अभी भी जमुना की तेज थी। पर न जाने क्यों आज राधा को मधुर संगीत जैसी लगी। नुमाइश में दोनों घूमे। साथ चांट खायी। फिर राधा भी मचल गयी। उसे झूले पर बैठना था। पर अकेले नहीं। सोहन के साथ।

सोहन टालता रहा। सच बताना नहीं चाहता था। औरत क्या समझेगी। मर्दानगी की डींग भरने बाला उसका आदमी झूला झूलने से डरता है।

राधा ने सोहन के साथ झूला झूला। सोहन रोकते रोकते भी अपना डर छिपा न सका। राधा के चेहरे पर एक मधुर मुस्कान थी। पता नहीं क्या था। शायद पुरूष पर स्त्री की विजय का आनंद मना रही थी।

सोहन अब वापस चला गया। राधा गुमसुम हुई। पर फिर ज्यादा देर चुप न रह सकी। अब उसे अपने घर में जमुना सास नहीं बल्कि सहेली ज्यादा लगने लगी। मन की गांठ खुल गयी। अब घर में राधा की आवाज़ भी जमुना के बराबर सुनाई देती है। घर के बाहर भी राधा चहचहाती घूमती है।

काव्य

बुजुर्ग

घर का मान
बुजुर्गों का सम्मान
जीवन ज्ञान।।

दादा की याद
उनका आशीर्वाद
हम आबाद।।

दादी सुकून
घर की शान रही
दुर्भाव नहीं।।

है मात-पिता
हमारे भगवान
सदा महान।।

उनसे चैन
हमारे है बेचैन
हमसे चैन।।

मातृ आंचल
सुरक्षित है जीवन
सरजीवन।।

देते आशीष
अंकल अर आँटी
देवे गारंटी।।

बुजुर्ग हंसी
है जीवन की सीख
मिटादे झीख।।

है पहचान
देती सुरक्षा ज्ञान
जीना आसान।।

बिन बुजुर्ग
घर रहता सूना
है समझना।।

न बीमार हो
कभी ना लाचार हो
वे ही सार हो।।

माँ आए याद
उनका आशीर्वाद
सुखी हैं आज।।

पूज्य पिताश्री
को मेरा है प्रणाम
बड़े महान।।

जीवन में है
सफल कर दिया
आशीष दिया।।

हम सबका
आधार परिवार
यही विचार।।

कवि पृथ्वीसिंह बैनीवाल
हिसार (हरियाणा)

भगवती सक्सेना गौड़

बैंगलोर

लघुकथा

अपने तो अपने होते हैं

मनोज जी, आज अपने बेटे अक्षत के मिन्नत करने पर बहु, पोते के साथ कार में घूमने निकल पड़े। आज उनका जन्मदिन भी था, पर पत्नी राधा के साथ छोड़ने के बाद उन्होंने अपने आप को ईश्वर में लीन कर लिया था। सारी संपत्ति अक्षत के नाम कर दी थी।

अचानक गाड़ी के रुकने की आवाज़ आयी, और उन्होंने बाहर देखा और सोचने लगे, ये कहाँ आ गए हम...

उनका बेटा उन्हें वृद्धाश्रम ले आया, क्या छोड़ने लाया है, वो भी जन्मदिन में, ऐसे बेटे को मैंने जीते जी करोड़ो की संपति दे दी।

अचानक उन्हें रात के सपने की याद आ गयी, उन्होंने अपने एक दोस्त को रोते कलपते इसी वृद्धाश्रम में देखा था। हे भगवान, मुझे भी यहीं रहना पड़ेगा क्या? तभी दो वर्ष के पोते की आवाज़ आयी, "दादू, अब उतरो भी, गाड़ी में ही बैठे रहोगे क्या, डिक्की से सारा सामान पापा ने निकाल लिया।"

दुखी मन से नीचे उतरे, नजर पड़ी, वृद्धाश्रम के संचालक राम प्रवेश जी, उनको माला पहनाने आगे बढ़े और बोले, "जन्मदिन की ढेरों बधाइयां सर।" और जैसे ही भीतर गए, सारे लोग लाइन लगाए खड़े थे, बेटे अक्षय मुझे प्रत्येक सज्जन के लिए धोती, कुर्ता और मिठाई का पैकेट देने लगे, मैं सबको पकड़ाता रहा। और अपने बेटे के सपूत होने का सर्टिफिकेट दिल मे संजोकर रख लिया और गांठ बांध ली, कि दुनिया इधर की उधर हो जाए अपनो पर शक नही करूंगा, तभी कहीं से वो गाना सुनाई पड़ा, अपने तो अपने होते हैं, बाकी सब सपने होते हैं।

रमेश कुमार संतोष

लघुकथा

टूटते रिश्ते

आज घर टूट गया और टूट गए रिश्ते... भाभी ने साफ कह दिया है कि वह उनके साथ नहीं रह सकती बार बार घर छोड़ने की धमकी ने भाई को खामोश रहने के लिए मजबूर कर दिया है । एक रसोई से दो रसोई बन गई।

अगर सोचा जाए तो अच्छा ही हुआ है। प्रतिदिन का झगड़ा.....किच...किच.. उस के मन में बात बैठ गई है कि उसका पति ज्यादा कमाता है और मैं...कम...। बात सच भी है... परन्तु वह यह बात भूल जाती है कि मां सुबह अंधेरे में ही उठ कर उनके उठने से पहले ही कितने काम निपटा लेती है...। और देर रात सब के बाद वह सोती है । घर के छोटे बड़े कार्य मैं निपटा देता हूं..।

घर में झगड़े के वातावरण में तनाव बना रहता है...। मां की दबी चीख कमरे की दीवारों में ही दफन हो जाती है। हर समय सब सहमे से रहते हैं....पता नहीं कब क्या हो जाये.. बहाना तो ख़र्च को लेकर और मेरे द्वारा कम कमाने का है...। वह समझती है कि उसका पति ही कमाता है और खर्च करता है। हम सब उन पर बोझ है। वह भूल गई है कि उसका पति किसी मां का बेटा और किसी का भाई भी है। और भाई की खामोशी उसे उत्साहित कर जाती है।

कितने अजीब होते हैं रिश्ते.... शादी से पहले जो भाई अपने हिस्से का भी दूसरे भाई को देने में पीछे नहीं रहता वही भाई शादी के बाद शरीक बन जाते हैं और मेरा तेरा शुरू हो जाता है....सब सहते हुए भी एक भ्रम पाले बैठे थे कि हम सब एक दूसरे के लिए जीते हैं।

आज के झगड़े के पश्चात सब खत्म हो गया मुहल्ले में भी हमारे रिश्ते नग्न हो गये है। परिस्थितियां बदल गई है हम कम में भी गुजारा करने में अभ्यस्त हो गये है मां के चेहरे पर भी खुशी झलकने लगी है सुबह उठ कर नहा धो कर वह मुहल्ले में बने मन्दिर में भी जाने लगी है और दोपहर को कुछ समय के लिए आराम भी कर लेती है । सब कुछ अच्छा हो रहा है ।

परन्तु कुछ दिनों के पश्चात मां फिर चिन्तित होने लगी है इस बार झगड़ा उन में नहीं बल्कि उन दोनों के बीच होने लगा है भाई के घर आते ही आवाजें शुरू हो जाती है... झगड़े का कारण काम वाली को लेकर होता है पत्नी कहती हैं उस की बहन के घर में सफाई वाली कपड़े/ बर्तन वालीं भी लगी है और यहां मैं अकेले मरू.... और भाई ने उस की यह बात मानी नहीं है

डॉ० अशोक
पटना,बिहार

लघुकथा

"गुणवत्ता की परख"

आज़ फ़कीर चन्द ने जैसे ही अपने खेतों में उपजाए नये उत्पाद सेठ नरेन जैन के मुनीम के यहां वज़न कराने के लिए रखें भी उत्पाद की नई नस्ल की जानकारी नहीं रहने के कारण फ़कीर चन्द के उत्पाद पर नाक मुंह सिकोड़ते हुए बहुत कम मूल्य पर आमदा थे।यह जानकर फ़कीर चन्द को तकलीफ़ हो रही थी परन्तु शहर तक जाना उसके लिए सम्भव नहीं था।मन मारकर वह किसी अन्य किसान जो उसके परिचित थे,का इंतजार करने लगा।सेठ के मुनीम अन्य किसानों के उत्पादों को वज़न कर पैसे का भुगतान करते जा रहे थे और किसानों की भीड़ खत्म हो रही थी ।
वहीं दूसरी ओर किसान भाईयों के द्वारा लाएं गई उत्पाद का ढ़ेर लग रहा था।
तभी केशवपुर के भागीरथ बाबू को देखकर फ़कीर चन्द खुश हो गया।वह पड़ोस गांव का उसका पक्का मित्र था और बचपन के स्कूल का साथी भी। दोनों आपस में मिलकर काफी खुश हुएं और आखीरकार भागीरथ बाबू ने फ़कीर चन्द से घर परिवार की बातें पूछी। फिर फ़कीर चन्द ने भी भागीरथ बाबू के शिक्षक पिता के सम्बन्ध में अद्यतन जानकारी लिए जो दोनों को बचपन से ही शारदा माध्यमिक विद्यालय में पढ़ाते थे।
फिर दुःखी फ़कीर चन्द को देखकर उनसे उत्पाद की गुणवत्ता के सम्बन्ध में अद्यतन जानकारी दी और मुनीम जी के द्वारा कम दर लगाने पर बहसबाजी होने की बात कही।फिर तुरन्त भागीरथ बाबू ने फ़कीर चन्द के उत्पाद को देखते हुए कहा कि अरे मुनीम जी यह अमेरिकी बीज का सबसे उत्कृष्ट उत्पाद है। नहर में तो यह हाथों हाथ इसकी बिक्री हो जाएगी।आप किस आधार पर इसे निम्न कोटि का उत्पाद मानकर कम मूल्य देने कि निश्चय कर लिया हैं।यह जानकारी मुनीम जी को नहीं थी।
फिर तभी भागीरथ बाबू ने फोन पर ब्लाक में पदस्थापित निर्मल वर्मा जी को फोन पर बातचीत कर उत्पाद की वैज्ञानिक जांच का अनुरोध किया।
वह एक साल पूर्व ही सरकार के द्वारा कृषि वैज्ञानिक के रूप में किसानों की मदद के लिए पदस्थापित किया गया था। भागीरथ बाबू के जान पहचान वाले भी थे।दो घंटे के बाद उत्पाद की जांच करने के लिए आने को तैयार हों गया। परन्तु यहां तो नयी बात सामने आई। ब्लाक वैज्ञानिक फ़कीर चन्द के उत्पाद को देखते हुए ही उन्हें शाबाशी देते हुए विशेष जानकारी प्राप्त करने में लग गए।उन्हें गांव के किसानों को इसके हाइब्रिड बीज उपलब्ध कराने पर विचार करते हुए गांव के सभी किसानों को मदद करने का अनुरोध करने लगे। यह देखते ही सेठजी के मुनीम का चेहरा देखने लायक था।

ब्लाक वैज्ञानिक की अनुशंसा पर फ़कीर चन्द को आज़ उनके उत्पाद का सबसे ज्यादा प्रतिफल मिला था। अपने मित्र भागीरथ बाबू और कृषि वैज्ञानिक की उत्तम सोच के कारणों से सेठजी के मुनीम की कुछ नहीं चल पाई। फिर फ़कीर चन्द अपने मित्र भागीरथ बाबू के साथ मिलकर कृषि वैज्ञानिक को गांव के किसानों को मदद करने की बातें कहने के उपरांत अपने अपने घर को चल दिए। आज़ मित्र भागीरथ बाबू के सहयोग से ही फ़कीर चन्द को उनके उत्पाद की गुणवत्ता का सही सही पता चल पाया था।

वीरेन्द्र बहादुर सिंह
जेड-436ए, सेक्टर-12
नोएडा-201301 (उ.प्र.)

लघुकथा

अवार्ड

एक लेखक को सम्मानित किया जाना था, जिसके लिए संस्था ने एक गायक कलाकार एक लाख रुपए दे कर बुलाया था। उस अवार्ड के कार्यक्रम के संचालन के लिए एक बहुत ही लोकप्रिय लेखक को बुलाया था। जि
इसके लिए उसे पच्चीस हजार रुपए दिए गए थे। अवार्ड के इस समारोह के लिए जो हॉल बुक कराया गया था, उसका किराया पंद्रह हजार रुपए था।

लेखक का सम्मान करने के लिए फूलमाला आदि के पीछे पांच हजार रुपए का खर्च किए गए थे। खाने पर संस्था ने सत्तर हजार रुपए खर्च किए थे। इस कार्यक्रम में लेखक की प्रशंसा करने के लिए दस विद्वानों को बुलाया गया था, जिन्होंने पांच-पांच हजार रुपए लिए थे। किराया-खर्चा अलग से लिया था। जबकि लेखक को पच्चीस हजार रुपए का अवार्ड दिया गया था। उस अवार्ड का नाम था प्यारेलाल पुत्र श्यामलाल पुत्र छगनलाल भतीजा दीनदयाल परमपूज्य काका के स्मरणार्थ.... (अगर इसमें किसी का नाम छूट गया हो तो मेरी कमजोर याददाश्त जिम्मेदार है)।

यह है हिंदी अवार्ड की सच्चाई, जहां अवार्ड की रकम की अपेक्षा अवार्ड के कार्यक्रम का खर्च कर कई गुना होता है।

नीना सिन्हा
पटना,बिहार

भरोसेमंद

एक विवाहित जोड़ा जिसकी शादी को बामुश्किल पाँच-सात महीने हुए होंगे, दारोगा जी के सामने बैठ दिमाग का दही कर रहा था। दोनों एक दूसरे पर बेवफाई का आरोप लगा रहे थे।

"दरोगा जी! मेरे पति/पत्नी का किसी के न किसी के साथ कोई न कोई सॉलिड लफड़ा जरूर है। दिन हो या रात यह बस अपने फोन पर लगा रहता/लगी रहती है। इसने अपने मोबाइल में पासवर्ड डालकर उसे लॉक कर रखा/रखी है। अपनी तसल्ली करने के लिए पासवर्ड माँगा तो नहीं दिया। कुछ तो ऐसा जरूर है जो यह मुझसे छुपाना चाहता/चाहती है। हमारे रिश्ते से अधिक निजी ऐसा क्या है, जिसे छुपाने की जरूरत पड़े ? जीवन की शांति भंग हो गई है, मेरे पति/पत्नी के विरुद्ध शिकायत लिखवानी है..।"

"तुम दोनों के दोनों पागल हो क्या? एक सा आरोप-प्रत्यारोप एक दूसरे पर लगा रहे हो! जब दोनों एक ही जैसे हो, तो समस्या क्या है? झेलो एक दूसरे को, मेरा टाइम खोटी मत करो। इस थाने को ग्राम पंचायत का दालान समझा है कि पति-पत्नी के किसी उपकरण से संबंधित झगड़े सुलझाता रहे? सामने की कुर्सी खाली करो, अपने घर का रास्ता नापो। पुलिस के पास अपनी बहुत सरदर्दी होती है, फालतू की मगजमारी नहीं चाहिए मुझे। पर बताते जाओ तुम दोनों का लव मैरिज है या अरेंज?"

"लव मैरिज है साहब!" फटकार सुनकर दोनों अपने मोबाइल को हथेलियों में दबाए, एक दूसरे को हिकारत भरी नजरों से देखते हुए रवाना हो गये।

"क्या जमाना आ गया है, लव मैरिज तक सालभर भी नहीं टिकती! युवाओं का जीवनसाथी से अधिक मोबाइल से जुड़ाव है! जो भरोसा टूटता तो देख सकता है पर जीवनसाथी को अपना पासवर्ड नहीं बता सकता! शादीशुदा संबंधों में पुराने वक्त वाली विश्वसनीयता अब बची नहीं, इन शादियों का क्या भविष्य होगा..?" दरोगा जी ने चिंतित स्वर में सहकर्मी से कहा।

हट_के

"माँ ! छोटी ने कहा कि आपने मेरे लिए एक चाय वाली पसंद की है! तस्वीर देखी उसकी, शक्ल-सूरत अच्छी है। पर मैं जीवनसाथी के रूप में किसी कामकाजी लड़की की तलाश में था। चाय वाली का क्या मतलब हुआ? क्या वह चाय कॉफी की स्टॉल या कैफे चलाती है?"

"लड़की मेरे स्कूल की पूर्व छात्रा है और मेरे सहकर्मी की बेटी भी। वनस्पति विज्ञान से स्नातक करने के बाद 'टी-टेस्टर' का कोर्स किया है। अपने क्षेत्र में बढ़िया काम भी कर रही है। उसकी शर्त है कि शादी के बाद माता-पिता भी उसके साथ ही रहेंगे। बात कहीं बन नहीं पा रही है। लड़का-लड़की के माता-पिता एक ही घर में, जैसे म्यान में दो से अधिक तलवारें! बात बने भी तो कैसे बने? कुछ दिनों पहले उसकी माँ ने स्टाफ रूम में कुछ अंतरंग मित्रों के सामने यह चर्चा की तो मैंने एकांत मिलते ही तुम्हारा नाम सुझाया।"

"ठीक है माँ! पर तस्वीर के साथ बायोडाटा कहाँ है? तिसपर तस्वीर के नीचे छोटी का स्पेशल टैग, 'कन्या चाय वाली है!' क्या कहूँ?"

"छोटी का खिलंदड़ापन तू जानता ही है, ऐसी ही है वह। व्हाट्सएप करती हूँ बायोडाटा। विचार कर लो तो मीटिंग भी तय कर दूँगी। इकलौती है, माता पिता के लिए उसकी चिंता उसकी नेक नियति का सबूत लगी मुझे। तभी..."

"तुम शिक्षिका हो, तुमसे वाद-विवाद में कौन कब जीत पाया है,माँ ? मीटिंग फिक्स कर दो। अपने प्रोफेशन के कईयों से मिल चुका हूँ, जरा इस लीक-से-जुदा से भी मिलकर देखा जाए।"

"बेटा! तुझे कैसी लड़की चाहिए, मुझे इसका अनुमान था। उससे मिलने के बाद तुम भी मेरे विश्वास पर विश्वास कर पाओगे..।"

"हो सकता है माँ! तुमसे बेहतर मुझे कोई जानता भी तो नहीं।"

सरोज बाला
गांव रिज्जू चक ज़िला कठुआ
राज्य जम्मू कश्मीर

लघुकथा

अपराजिता की यादें

आज फिर मुझे अपराजिता जैसी महिला मिली। वैसी ही मुस्कान वैसी ही चाल और वैसी ही शरीरिक बनावट थी। मैं दूर तक उसे देखती रही। फिर लौट गई पुरानी यादों में। विशेष तौर पर अपराजिता और पिता जी की आख़री लड़ाई जिसे मैं कभी भुला नहीं सकी।

अपराजिता और पिटा जी दोनों ही बैठकर चाय की चुस्कियां भरते हुए शिमला जाने की तैयारी में अपनी विचारधारा प्रकट कर रहे थे। और मैं अपनी ड्राइंग कॉपी पर पिता जी और अपराजिता की तस्वीर बना रही थी। मैने उन्हें बड़ी देर के बाद एक साथ बैठे हुए देखा।

" अपराजिता हमारी शादी को तीन साल हो गए। शिल्पी के कारण तुम कहीं मेरे साथ जा भी नहीं पाई। शिल्पी के कारण तुम कही मेरे साथ कहीं जा भी नहीं पाई। शिल्पी को संभालना और भी माँ की देखभाल ने तुम्हें जी जान एक कर दिए। "

" हम्म ..... (चुस्की भरते हुए) शुक्र है तुम्हें .... इतना तो महसूस हुआ। "

" ऐसा क्यों कहती हो ..... माना तुम्हें कहीं घुमा नहीं पाया..... तुम्हें समय नहीं दे पाया ....पर तुम्हें कभी किसी सुख से बंचित भी तो नहीं रखा। गाड़ी बंगला और पार्टी में अपनी मर्ज़ी मुताबिक़ आना-जाना और क्या चाहिए एक औरत को ?"

" तुम्हारे लिए यह सुखद होगा ..... पर मेरे लिए नहीं। "

" मैने तुमसे सब कुछ बताकर ही शादी की थी। मुझे यह शादी अपनी बेटी शिल्पी के लिए करनी पड़ी। "

" तुम्हारी बेटी और तुम्हारी माँ का यही है सब कुछ मेरे लिए ... मेरी तो कोई अपनी दुनिया है ही नहीं। मैं खुश थी तुमसे शादी करने से पहले। "

" और उसके साथ भी ?"

" हाँ खुश थी कम से कम मेरे दिल की बात तो सुनता था। भले ही उसके पास कुछ नहीं था। "

" जाओ .... उसी के साथ। शिल्पी का क्या है ? सातवी क्लास में हो गई है। माँ का स्वर्गबास हो गया है। मैं भी कभी तुम्हे वो सुख नहीं दे पाया जो तुम्हें लविश दे पाया। "

" तुम हर बार लविश को बीच में क्यों ले आते हो... शादी के बाद मैं उसे मिल पाई या फिर वो मुझे मिला ? हाँ .... सही कहते हो तुम ..... तुम मुझे वो सुख नहीं दे पाए .... क्योंकि तुम्हारे पास पैसा है , नाम है और ऐशो – आराम .... पर किसी की भावना को समझने की शक्ति नहीं। "

अपराजिता ने चाय का आधा कप छोड़ दिया और ट्रे उठाकर रसोई में चली गई। मुझे आज पहली बार महसूस हुआ जो अपराजिता मुझे दिन रात देख रही थी। माँ का प्यार दे रही थी। वेह अंदर से कितनी दुखी है ?"

मैं अपराजिता के पास गई और उसे अपनी उंगली से पकड़कर अपने कमरे में ले गई। अपराजिता रो रही थी। मैं उन्हें चुप कराते हुए कहती हूँ ," तुम चली जाओं... अपराजिता ...पापा तुम्हें कभी प्यार नहीं करते। "

अपराजिता रोते हुए मुझे गले से लगा लिया ," मैं तुम्हें छोड़ के नहीं जा सकती। तुम्हें छोड़ कर जाऊंगी तो माँ-पिता की बीमारी का खर्चा कौन उठाएंगा?"

अपराजिता दूसरे दिन पिता जी की फाइल चेक कर उन्हें देने जाती है तो पिता जी उसकी ओर देखते कहते है," फिर क्या सोचा तुम मेरे साथ शिमला चलोगी या फिर "?

" या फिर क्या मतलब है तुम्हारे लिए ....मुझे किसी बात का फैसला लेने का हक्क नहीं है तो इनकार करने का कोई मतलब नहीं हैं। "

" तुम जवान चलाना सीख गई हो ..... क्या तुमने लविश से यही सीखा है ? उसके पास जाना चाहती हो। "

" आप मेरे धेर्य की परीक्षा ले रहे है। आपको नहीं लगता आप हद से ज्यादा बदसलूकी कर रहे है ? "

इतना सुनते ही पिता जी ने उन्हें बालों से पकड़ कर घर से निकाल दिया। अपराजिता कुछ कहना चाहती थी पर पिता जी ने उनके बोलने का मौका नहीं छोड़ा। "

अपराजिता तो चली गई। पर उसकी यादें मेरे साथ रही जो मुझे पालती रही और मुझे समझती रही। शायद उसकी अच्छाई के कारण मैं उसे अपराजिता ही कहती गई। मैं जब तक यादों में से बाहर निकली तब तक अपराजिता जैसी महिला भी में कहीं खो गई थी जिसे मैं ढूंढ रही थी।

मनोज जैन मधुर
106 विट्ठल नगर लालघाटी
भोपाल 462030

गीत

काश, हम होते नदी के

काश हम होते नदी के
तीर वाले वट

हम निरंतर भूमिका
मिलने-मिलाने की रचाते
पाखियों के दल उतरकर
नीड़ डालों पर सजाते

चहचहाहट सुन हृदय का
छलक जाता घट

नयन अपने सदानीरा से मिला
हँस-बोल लेते।
हम लहर का परस पाकर
खिलखिलाते डोल लेते।

मन्द मृदु मुस्कान बिखराते
नदी के तट

साँझ घिरती, सूर्य ढलता
थके पाखी लौट आते ।
पात-दल अपने हिलाकर
हम रूपहला गीत गाते ।

झुरमुटों से झाँकते हम
चाँदनी के पट

देह माटी की पकड़कर
ठाट से हम खड़े होते ।
जिन्दगी होती तनिक सी
किन्तु कद में बड़े होते।

सन्तुलन हम साधते ज्यों
साधता है नट!

छोटी मोटी बातों में मत

छोटी मोती बातों में मत
धीरज खोया कर।
अपने सुख की चाहत में मत
आँख भिगोया कर।

काँटों वाली डगर मिली है
तुझे विरासत में।
छिपी हुई हैं सुख की किरणें
तेरे आगत में।
देख यहाँ पर खाई पर्वत
सब हैं दर्दीले।
कदम-कदम पर लोग मिलेंगे
तुझको दर्पीले।
कुण्ठाओं का बोझ न अपने
मन पर ढोया कर।

बेमानी की लाख दुहाई
देंगे जग वाले।
सुनने से पहले जड़ लेना
कानों पर ताले।
मुश्किल से दो चार मिलेंगे
तुझको लाखों में।
करुणा तुझे दिखाई देगी
उनकी आँखों में।
अपने दृग जल से तू उनके
पग को धोया कर।

कट जायेगी रात सवेरा
निश्चित आएगा
जो जितनी मेहनत करता
फल उतना पायेगा।
समय चुनौती देगा तुझको
आगे बढ़ने की।
तभी मिलेंगी नई दिशाएँ
आगे बढ़ने की।
मन के धागे में आशा के
मोती पोया कर।

बीज वपन कर मन में साहस
धीरज दृढ़ता के।
छट जायेंगे बादल मन से
संशय जड़ता के।
सब को सुख दे दुनिया आगे-
पीछे घूमेगी।
मंज़िल तेरे खुद चरणों को
आकर चूमेगी ।
कर्म मथनी से सपनों को
रोज़ बिलोया कर ।

छोटी-छोटी बातों में
मत धीरज खोया कर।

चाँद सरीखा मैं अपने को

चंद सरीखा मैं अपने को
घटते देख रहा हूँ।

धीरे-धीरे
सौ हिस्सों में,
बँटते देख रहा हूँ।

तोड़ पुलों को,बना लिए हैं
हमने बेढब टीले।
देख रहा हूँ मैं संसृति के,
नयन हुए हैं गीले।।

नई सदी को परंपरा से,
कटते देख रहा हूँ।।

अधुनातन शैली से पूछें ,
क्या खोया क्या पाया।
कठपुतली-से नाच रहे हम,
नचा रही है छाया।।

घर-घर में ज्वालामुखियों को
फटते देख रहा हूँ।।

तन-मन सब कुछ हुआ विदेशी
फिर भी शोक नहीं है।
बोली-वाणी-सोच नदारद
अपना लोक नहीं है।

छद्म शोध से शुद्ध बोध को
हटते देख रहा हूँ।।

मेरा मैं टकरा-टकरा कर,
घाट-घाट पर टूटा।
हर कंकर में शंकर वाला,
चिंतन पीछे छूटा।।
पूरब को पश्चिम के मंतर,
रटते देख रहा हूँ।।

गीत

डॉ० लक्ष्मीकांत शर्मा

तुम खड़ी हो दीप जलाए

तुम खड़ी हो या जले हैं
दीप काली रात में।।
तुम हँसी हो या झरे हैं
फूल महकती रात में।

01
इस दीवाली देख कर तुमको
मैँ खोने लगा।
प्यार कहते हैं जिसे शायद
वही होने लगा।।
मांग लूँगा तुम को मैं,तुमसे ही
सौगात में...।

02

मेरी पूजा में बन चंदन
तुम आजाओ ना
मेरी वाणी में बन वन्दन
तुम आजाओ ना
शामिल हो जाओ तुम मेरी,
हर सपनीली रात में....

03
तुम फूलों में हँसी ,तुम
दीपशिखा लहराई हो
अधरों के मदिरालय में
जादू क्या भर लाई हो
यूँ मदहोश कर मुझको
छोड़ो न ऐसे रात में.....

04

खाबों के पर्दे हटा के
अब बदन बन जाओ तुम।
ये जनम जो तार दे वो दहन
बन जाओ तुम।
तुमको ढूँढे ये जमाना
मेरी बात,बेबात में....।

डॉ०कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

जीवन का आधार....

जीवन का आधार है पानी ,
हर जन को समझाना है ।।
पानी का कोई मोल नहीं है ,
बात सभी यह मानो ।
अनुपम है उपहार प्रकृति का ,
बस इतना ही जानो ।।
अगर न मानी बात पते की ,
ठोकर खाते जाना है ।
जीवन का आधार है पानी ,
हर जन को समझाना है ।।1।।

थका पथिक पीकर पानी को
अपनी प्यास बुझाता है ।
और पेड़ की छाया पाकर ,
मन ही मन हर्षाता है ।।
शीतल शीतल हवा कहे ,
बस आगे बढ़ते जाना है ।
जीवन का आधार है पानी ,
हर जन को समझाना है ।।2।।

रूप ,रंग ,आकार नही है ,
सब सुन लो बात हमारी ।
बेस्वाद यह होता बच्चों ,
बात बहुत है इसकी न्यारी ।।
जीवन इसके बिना असंभव ,
हर जन को बतलाना है ।
जीवन का आधार है पानी ,
हर जन को समझाना है ।।3।

विनय बंसल
(आगरा)

इस बार ....

चलो इस बार दीवाली,
अलग विध से मनाते हैं ।।

है उजियारा ही उजियारा,
वहाँ पर ध्यान दें, न दें।
तिमिर है जहाँ अधिक गहरा,
वहाँ दीपक जलाते हैं ।
चलो इस बार दीवाली,
अलग विध से मनाते हैं ।।

है घर फुटपाथ ही जिनका,
जो चलने भी नहीं पाते।
मदद थोड़ी सी करके हम,
उन्हें चलना सिखाते हैं।
चलो इस बार दीवाली,
अलग विध से मनाते हैं ।।

हमारे देश में बच्चे,
हैं अनपढ़ आज बहुतेरे।
बने शिक्षित ये सारे ही,
ज्ञान दीपक जलाते हैं।
चलो इस बार दीवाली,
अलग विध से मनाते हैं ।।

जो करते रात-दिन मेहनत,
मगर भूखे रहें फिर भी।
मिटाएं भूख हम उनकी,
उन्हें खाना खिलाते हैं।
चलो इस बार दीवाली,
अलग विध से मनाते हैं ।।

रहेगी गर न हरियाली,
तो फिर काहे की दीवाली।
पटाखे फोड़ना छोड़ो,
चलो पौधे लगाते हैं ।
चलो इस बार दीवाली,
अलग विध से मनाते हैं ।।

मईनुदीन कोहरी "नाचीज़ बीकानेरी "
मोहल्ला कोहरियान् ,बीकानेर (राज .)

पापा मैं बोझ नहीं

(विश्व बालिका दिवस पर विशेष)

मम्मी - पापा
मैं बेटी हूँ आपकी
पर , क्या मैं ?
आप के लिए पराया धन थी
आप के लिए भार थी
मुझे लेकर कितनी आशंकाएं थी
तुम बड़ी हो रही हो
अब घर के अंदर रहा करो
मेरे होने का आपको डर
मेरे लिए तलाश रहे थे वर
अच्छे वर की तलाश में
घर-दुकान् गिरवी रखने की नोबत
अपनी बेटी से ही कहते रहते
तेरे लिए वर ढूंढते -ढूंढते .....

क्या बीतती थी मुझ पर
जब मुझे देखने वाले आते थे
मुझे नुमायश की तरहां परोसा जाता
उनकी डिमांड सुन कर
आपकी क्या हालत हुआ करती थी
आपका तनाव मुझ से देखा नही जाता था
आपकी बेटी होकर भी
मैं आप पर कितनी बोझ थी
यह सब सह - सह कर
आप अपनी ही बेटी से मुक्ति पा
चैन की नींद सोना चाह रहे थे
मैं भी सोचती , जिस घर में पैदा हुई
जब वो घर भी मेरा नहीं
तो , फिर वो अंजान घर कैसा होगा ?

आपने मुझ पर लाख पहरे - पाबन्दियाँ लगाई
पर , आपने मुझे पढाया - लिखाया
वो ही आज मेरे काम आया
आपकी पढ़ी - लिखी बेटी ने ही
आपके ऋण को चुका कर
आपको सारे भार से मुक्त कर दिया है
पापा अब आप पर ,आपकी बेटी बोझ नहीं है
क्योंकि अब मैं , पराया धन नहीं हूँ
अब मेरा अपना घर है ! !! !!!

रमेश मनोहरा
शीतला माता गली जावरा
(म.प्र.)
457226, जिला रतलाम

नया यहाँ पर दौर

होंसलों में जो भरते, रमेश आज उड़ान
होंगे एक दिन सफल वे, आप सभी श्री मान

ज्ञान जहाँ से भी मिले, बाटे दूँजों और
लावे जी इस तरह से, नया यहाँ पर दौर

रहते थे जिनके यहाँ, हरदम ठीक उसूल
उड़े उनके आँगन में, हरदम देखो धूल

गलत बात होती नहीं, रमेश को मंजूर
रहता है इससे सदा, हरदम ही वो दूर

महंगाई की मार से, टूट रहे बाजार
चूभ रहे हैं गरीब के, पाँवों में अब खार

लावे ऐसी योजना, आप अब तो हुजूर
समस्या हो जाए जिससे, हर गरीब की दूर

एक दूजे से वे सदा, खाते देख फरेब
आदमी काटता यहाँ, आदमियों की जेब

ज्ञान नहीं पास जिसके, बघारता है ज्ञान
ऐसे ज्ञानी का कभी, करें नहीं सम्मान

असत्य हरदम आपके, भीतर है मौजूद
बिछा उनके तू पथ में, सच की ही बारूद

जितना भी उसको मिले, रखता हैं संतोष
फिर किसको भी दे नहीं, रमेश कोई दोष

औरों के दु:ख का अगर, हो जावे एहसास
सांत्वना देने तुरन्त, पहुँचे उनके पास

रिश्तों का होता यहाँ, देखो अब व्यापार
माने है अब आदमी, इसको ही आधार

कितना ऊँचा हो गया, देखो ये बाजार
हर चीजें महंगी हुई, गुम हुआ सभी प्यार

चल रहा इस दौर में, कैसा ये अन्याय
सच को मिलती हैं सजा, झूठों को अब न्याय

काव्य

रंजना लता

समस्तीपुर, बिहार

एक गीत लिखा है

एक गीत लिखा है-
जो तुमको सुनानी है,
लिखा है कि-
क्या लिखूं.....
बस तुम यूं ही समझ लेना,
कोरे कागज़ को पढ़ लेना,
पढ़ लेना तहरीर स्याही की,
जो कुछ कहती बेजुबानी है,
एक गीत लिखा है-
जो तुमको सुनानी है।

लिखा है नयनों की नीर,
और हृदय की दुखती पीर,
तुम नयनों की भाषा पढ़ लेना,
इसकी भी एक कहानी है,
एक गीत लिखा है-
जो तुमको सुनानी है।

सुन लेना मेरे मन की बात,
सहे हैं कैसे-कैसे आघात,
तुम भी कभी कुछ लिख देना,
प्रीत की रीत जो निभानी है,
एक गीत लिखा है-
जो तुमको सुनानी है।

कहें भी तो फिर कैसे कहें,
सहें भी तो फिर कैसे सहें,
समझो तो आंखों में तूफान हैं,
न समझो तो फकत पानी है,
एक गीत लिखा है-
जो तुमको सुनानी है।

अंत में अपना नाम लिखा है,
गीत यूं ही तमाम लिखा है,
तुम भी इसे गुनगुना लेना,
जिंदगी नहीं लौटकर आनी है,
एक गीत लिखा है-
जो तुमको सुनानी है।

सुधा गोयल

२९०-ए, कृष्णानगर, डा दत्ता लेन, बुलंद शहर

स्त्रियां कुनकुनी सी

कुनकुनी चाय सी स्त्रियां
न पी जाती हैं न फेंकी जाती है
बस झेली जाती हैं
जो न गरम होती हैं
न नरम
उनका मिजाज पता नहीं चलता
वे अक्सर मौन रहती हैं
वे खिलखिलाती नहीं
बस मुस्कराती हैं
वे खुद नहीं बोलतीं
उनकी आंखे बोलती हैं
वे चीखती भी नहीं हैं
बस ओंठ फड़फड़ाती हैं।

आंसू पलकों में ठहरा लेती हैं
कुनकुनी चाय सी
उनकी नजर
बहुत कुछ कह जाती है
अधिकतर स्त्रियां
ऐसी ही होती हैं।
जो ज्यादा गरम होती हैं
कड़क चाय सी होती हैं
उन्हें सिप करना
थोड़ा मुश्किल होता है
वे अक्सर ओंठ जला देती हैं
फिर भी कुछ लोग
प्लेट में उड़ेलकर पी जाते हैं
कुनकुनी चाय सी स्त्रियां
सब सह जाती है।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"

मुंगेर, बिहार

नव निर्माण

युग है यह निर्माण का,
नूतन अनुसंधान का।
हम भी कुछ योगदान करें,
अपना चरित्र निर्माण करें।

प्रकृति ने है हमें रचाया,
निर्मल काया दे सजाया।
इसका हम अभिमान करें,
माँ प्रकृति का सम्मान करें।

मानव देह हमने पाया,
सुंदर सृष्टि की हमपे छाया।
इसका हम गुणगान करें,
वसुधा का कल्याण करें।

हर सुख सुविधा यहाँ से पाते,
फिर क्यों हम भूल जाते।
करनी है हमको रखवाली,
माँ वसुधा का बन कर माली।

निर्माणों के पावन युग में,
हम चरित्र निर्माण करें।
अपने सत्कर्मों से हम,
सतयुग का आह्वान करें।

देकर अपनी निर्मल आहुति,
माँ प्रकृति का करके स्तुति।
जीवन अपना साकार करें,
फिर निज धाम प्रस्थान करें।

नवीन माथुर पंचोली
अमझेरा धार मप्र

गज़लें

1
जब अरमान फलेगा तो।
मन के साथ चलेगा तो।
आँखें जी भर सो लेगी,
सूरज, शाम ढलेगा तो।
पत्थर भी कतरा-कतरा,
आख़िरकार गलेगा तो।
रिश्ता गिरकर संभलेगा,
गर व्यवहार पलेगा तो।
होगा सब पर हक सच का
झूठा हाथ मलेगा तो।
मिलकर, मिल न पायेगा,
मौका दूर टलेगा तो।

2
कहूँ सच बात तो मुश्किल।
बता दूँ झूठ तो मुश्किल।
किसी के साथ रहकर भी,
छुपा लूँ हाथ तो मुश्किल।
कभी इक जीत के बाज़ी,
मना लूँ हार तो मुश्किल।
कहीं पहचान वालों से,
रहूँ अंजान तो मुश्किल।
सफ़र की दूरियों से डर,
करूँ आराम तो मुश्किल।
सभी के साथ अपनों सा,
रखूँ व्यवहार तो मुश्किल।

3
इतने हो बेगाने क्या।
हमसे हो अंजाने क्या।
आँख झुकाये बैठे हो,
रूठे हो दीवाने क्या।
रुख़ पर थोड़ा गुस्सा है,
आये हो समझाने क्या।
खट्टे- मीठे जीवन की,
बातें हो पहचाने क्या।
होश लिए हो रात ढले,
टूट गए पैमाने क्या ।

4
चलकर भी रस्ते ठहरे हैं।
मंज़िल पर जिनके पहरे हैं।
लौट गए जो आकर खाली,
अब उनके उतरे चहरे हैं।
रखते हैं तल्ख़ी बातों में,
घाव वही देते गहरे हैं।
हो कैसे सुनवाई उनकी,
मुंसिफ ही जिनके बहरे हैं।
जीत गए जो बाजी अपनी,
उनके ही परचम फहरे हैं।

5
हाथ वो अपने छुपा देता है।
रोज़ जो ज़ख्म नया देता है।
मैं यहाँ दोस्ती निभाता हूँ,
वो वहाँ मुझको दग़ा देता है।
होश में रहना मनाही उसकी,
जो बहकने की रज़ा देता है।
बात निकली तो पहुँच जाएगी,
क्यों ज़माने को हवा देता है।
जो दवाओं से नहीं हो पाया,
वो दुआओं से बना देता है।

6
सहारे वो सारे चले जायेंगे।
सभी वो हमारे चले जायेंगे।
रहेंगे यहाँ जब तलक रात बाकी,
सुबह तक सितारे चले जायेंगे।
यहाँ वक़्त अपना न ज़ाया करो,
ये सारे नज़ारे चले जायेंगे।
नदी को पता ही रहा ये कभी भी,
कहाँ तक किनारे चले जायेंगे।
करो न हमारी कहीअनसुनी तुम,
तुम्हें हम पुकारे चले जायेंगे।

7
वही तो काम का नहीं होता।
कि जिससे वास्ता नहीं होता।
मंजिलें सब नज़र में आती है,
ख़त्म बस फ़ासला नहीं होता।
सभी का हाल-चाल है लेकिन,
पता बस आपका नहीं होता।
हमारी आपसी लड़ाई में,
मज़ा कुछ जीत सा नहीं होता।
सुलह की बात रोज़ करते हैं,
मग़र कुछ फ़ैसला नही होता।

8
जुबाँ तेरी कहा तेरा।
रज़ा तेरी मना तेरा।
चले तेरे इशारे पर,
जहाँ का क़ायदा तेरा।
यहाँ ढूंढा , वहाँ ढूंढा,
नहीं पाया पता तेरा।
हमारी चाहतों का क्या,
ख़ुशी तेरी मज़ा तेरा।
जमीं ये आसमाँ सारा,
सभी है दायरा तेरा।

9
उनसे मिलने आऊँ तो।
उनमें ही खो जाऊँ तो।
ख़ुशियाँ सब पाकर उनमें,
अपना मन समझाऊँ तो।
जीत सभी देकर उनको,
अपनी मात उठाऊँ तो।
नींदे तो सो लूँ अपनी,
उनके ख़्वाब सजाऊँ तो।
बोल सभी लिक्खे उनके,
सुर में अपनी गाऊँ तो।

10
रोशनी जो दूर की है।
वो हमारी जिंदगी है।
मिल रही है इस तरह से,
पास कोई अज़नबी है।
बात जो दिल से चली थी,
लब पे आकर रुक गयी है।
ये शुरू की दास्ताँ है,
या कहानी आखिरी है।
नाम इतना मिल गया है,
दाम की किसको पड़ी है।
हाथ है सिर पर दुआ का,
फ़िर भला कैसी कमी है।
क़ायदा रख कर कही जो,
वो ही अपनी शायरी है।

11
ख़ता से दूर बन्दगी रखना।
निभा सको तो दोस्ती रखना।
बना रहे हो जब मकाँ अपना,
यहाँ, वहाँ से इक गली रखना।
जहाँ मुश्किल कभी सुनो,समझो,
वहाँ सभी से कुछ बनी रखना।
हवा अक्सर जिधर से आती है,
उधर की खिड़कियाँ खुली रखना।
जुबाँ कहने में चूक जाएगी,
बुरी- भली में कुछ कमी रखना।
कभी मिले कभी नहीं भी मिले,
ज़रा सम्भाल कर ख़ुशी रखना।

प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला,मप्र

दोहों में लोकतंत्र की वंदना

लोकतंत्र के मूल्य का,हम करते सम्मान।
तत्पर रह पूरा करें,हर जन के अरमान।।

भारतीय जनतंत्र की,सकल विश्व में शान।
जन-गण-मन का हो रहा,हर पल नित गुणगान ।।

जब से पाया देश ने,चोखा,प्रखर विधान।
सम्प्रभु बनकर कर रहे,हम निज का यशगान।।

अंग्रेज़ों पर वार कर,हम हो गए स्वतंत्र।
संविधान का पा गए,वैभवशाली यंत्र।।

बने प्रखर,यशपूर्ण हम,नित पाया उत्थान।
संविधान का वेग ले,भारत बना महान।।

सप्त दशक का यह सफ़र,सचमुच देता हर्ष।
जीते हम हर हाल में,कैसा भी संघर्ष।।

भारत का गणतंत्र है,सारे जग में ख़ास।
करने जो पूरी लगा,हर इक जन कीआस।।

सभी नागरिक पा रहे,निर्धारित अधिकार।
संविधान ने कर दिए,ख़्वाब सभी साकार।।

लिए एकता भाव हम,गाते मिलकर गीत।
हम सेनानी पर हमें,भाती दिल की जीत।।

संविधान सुखकर लगा,जिसमें है आलोक।
लोकतंत्र के आँगना,परे हटा सब शोक।।

आओ,हम वंदन करें,करें आज जयघोष।
भारत दुनिया का गुरू,करें यही उद्घोष।।

दीपक के दोहे

दीपक गाने लग गया,आज खुशी के गीत।
आओ हम उल्लास में,झूमें ऐ मनमीत।।

दीपक पूजन योग्य है,देता है उजियार।
दीपक से हारे सदा,रातों का अँधियार।।

दीपक तूफाँ से लड़े,ले संघर्षी भाव।
जो लड़ता साहस लिए,खोता ना निज ताव।।

दीपक सूरज सा लगे,गहन निशा में आज।
बन उजास का मित्र वह ,करता चोखा काज।।

दीपक माटी से बना,पर बेहद मज़बूत।
जो आशा लेकर बना,सफल भाव का दूत।।

दीपक इक प्रतिमान है,दीया है पहचान।
हम भी दीयक से रखें,अपने सब अरमान।।

दीपक जतलाता हमें,देता है संदेश।
नहीं निराशा रख कभी,हो कैसा आवेश।।

दीपक-सी हो ज़िन्दगी,हो मीठी मुस्कान ।
बाती-सा जलते रहो,लेकर के निज शान।।।

दीपक के सँग तेल है,बाती का है साथ।
जिसके सँग सहयोग है,रहे सफलता हाथ।।

बिनोद बेगाना
जमशेदपुर झारखंड

दोहा एकादश

जिस बरगद की छाँव में,हुआ गाँव गुलजार ।
घर-घर की तकरार से,बना वृद्ध,लाचार।

दया भाव जिसमें नहीं,मिले उसे दुत्कार।
वंचित रहता मान से,जाये कोई द्वार।

दया भाव जिसमें नहीं,वो कैसा इंसान।
अरि समाज का,है वही,अवगुण का खादान।

कहाँ गई सब मित्रता,कहाँ रक्त-संबंध।
लोभ-लाभ में लीन सब,स्वारथ में हैं अंध।

हासिल मिहनत से सदा,सरल कठिन सब ध्येय।
ज्यों प्यासा है ढूढता,सहरा में भी पेय।

आज संग में और है,कल होगा कोई और।
कल कोई था दूसरा,ऐसे बदले दौर।

गहन भाव से प्रार्थना,शुद्ध भाव से ध्यान।
सहज भाव से साधना,करे सरल इंसान।

कहें इसे तकदीर या,लोकतंत्र का हाल।
जनता तो कंगाल है,सेवक मालामाल।

संघर्षों की नींव ही,जीवन का आधार।
तपता जितना आग में,चमके स्वर्ण-विचार।

गगन,क्षितिज से मिल गए,पानी,आग समीर।
तब ईश्वर ने रच दिया,सुंदर एक शरीर।

जीवन की जादूगरी,समझ सका है कौन।
पता नहीं कब जादुई,ताकत कर दे मौन।

मनीष पाठक
मूलतः चित्रकार
राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत
अहमदाबाद

एक ख्याल के....

एक ख्याल के ...
वह मुझे देख अपनी बेपरवाह जुल्फें संभाले नजरे मिलाए
ख्याल ही सही
फरमाइश तो है

एक ख्याल के ...
फिर वह मुझे देख चुपके चुपके मुस्कुराए
बचपन की दोस्त, पड़ोस की दीदी
और अपनी बुआ की लड़की के कान में फुसफुसाएं
ख्याल ही सही
साजिश तो है

एक ख्याल के ...
के यह देख मैं उसे चोरी चोरी से ना देखूं
उसके साथ लॉन वाला बंगला,
बेटे का नाम सौरभ बेटी का सुरभि
यह सपने भी ना देखूं
ये ख्याल ही सही
आजमाइश तो है

एक ख्याल
कि अब उसका मकान पिछली गली में नहीं,
नाम उसका स्कूल के रजिस्टर में नहीं,
पर मुझे याद रखें
दिल में दबा यह ख्याल
ख्याल ही सही
गुजारिश तो है

फिर क्या था वक्त बीत गया....

वक्त तो बीत गया पर
इतने सालों बाद नसीब मेरा मानो जीत गया

वही जुल्फें
वही आंखें
वही हंसी
वही बेतकल्लुफी
हां
ये तो वही है

बड़ी हो गई है
एक कमरे की चाल
अब बड़का कोठी हो गई है
हां जी खाते पीते परिवार की है थोड़ी मोटी हो गई है

एक ख्याल कि मुझे देख वो भी मुझे पहचान लेगी
देखते ही चिल्लाके मेरा नाम लेगी
बस...बस...फिर हाथ मेरा भी वो थाम लेगी
एक ख्याल ही सही
गुंजाइश तो है...

गज़ल

कनक किशोर
राँची (झारखंड)

दर्द को दफन कर, खुशियां बाँट तू
जहर ना बोओ, प्रीत को बाँट तू।

रिश्ता खून का, बाप को पहचानो
सड़क पर मत फेंकों,हिया से साट तू।

अन्हेर नगरी है, चौपट सिंह राजा
भोर आने को है, रात को काट तू।

दुनिया बाजार बना, खुद को ना बेचों
वोट ताकत है तेरी, उसे ना बाँट तू।

सत्ता नाचेगी, अपनी ताकत समझ
हाथ में ताकत है, हाथ ना काट तू।

भीख नहीं अधिकार है, इसे समझो
देश तेरा भी है, भीख ना चाट तू।

किशोर साथ तेरे, बात उसकी सुनो
खाट अब छोड़ दो, सत्ता भी बाँट तू।

राजपाल सिंह गुलिया
गाँव - जाहिदपुर ,
झज्जर (हरियाणा)

बात सुनो ये सीधी सादी ,
बनकर रहना अवसरवादी .

तजना मत ये दीवानापन ,
रहे भले बेगानी शादी .

अवसर खोजो विपदा में सब ,
आज गली में हुई मुनादी .

सच सुन कान पके लोगों के ,
हुए झूठ के ये सब आदी .

मसले नए उगाना सीखो ,
भूलो प्रसंग सब बुनियादी .

दिन दिखलाए कैसे कैसे ,
पूछे रब से इक फरियादी .

धर्म बहुत है नाजुक मसला ,
पल में बनते जन उन्मादी .

काव्य

निरुपमा सिंह

शब्दों का मायाजाल

शब्दों का मायाजाल
न कोई समझा है
न ही कोई समझेगा
शब्दों का अपना अस्तित्व
कभी हंसाते, कभी रुलाते
कभी मंद-मंद मुस्कान तो
कभी खिलखिलाहट दे जाते

ये शब्द ही तो हैं जो
कभी तीव्रता से झकझोर जाते
तो कभी दबे पाँव गुदगुदा जाते

शब्द कोई भी हों
अपना अलग ही अंदाज
 बयाँ कर जाते
कभी दबी जुबाँ में शूल
तो कभी तीर की भाँति
फिसल जाते।

जी हाँ ये शब्द ही तो थे
जो द्रौपदी के कंठ से निकल
महाभारत के जन्मदाता बन गए
एक महायुद्ध के रचयिता बन गए

कहीं खुशियों का उत्सव
तो कहीं गम काआगाज बन जाते
किसी का घर आबाद
तो किसी का बरबाद कर जाते

क्या कहें, कैसे कहें?
सब है शब्दों का मायाजाल
कभीहुई मति भ्रमित तो
इनके मोहपाश में फँस जाते
कभी महल, तो कभी
झोपड़ी में पटक दिये जाते

कुछ खट्टे, कुछ मीठे, कुछ कड़वे
कुछ चाशनी-मिश्रित बोल
हम इंसान ही तो बुनकर हैं इनके
फिर क्यों बुनते हैं ऐसे शब्द

अतीत को बिसरा कर
हम-सब मिल-जुल कर
एक सूक्ष्म प्रयास करते हैं
शब्दों का एक मोहक

प्रेम-जाल रचते हैं
शब्दों को बना माध्यम
सुंदर भावों को लिखते हैं!

प्रतिक्षामें

इन मार्गों से होकर ही
गुजरती है एक डगर और भी
जो शायद दिखाई न दे
क्योंकि वो
दूर्वा का नर्म बिछौना नहीं
अपितु कंकरीट-पत्थरों से सजी
ऊबड़-खाबड़ सी डगर है
जो आज भी प्रतिक्षारत
कर रही मौन सँवाद है!

मेरे नौनिहाल कब आएगें
जो चले गये सुदूर
जाब से घनी आबादी वाले
दूर-दराज़ शहरों में
आजीविका की तलाश में
पथराई आँखों से जोहती हूँ बाट मैं!

शायद कुछ खोट मुझमें ही था
अवश्य ही कुछ कोताही रही होगी
जो ना देसकी स्थिर आश्रय
अपने ही जायों को
नसमेटस की सँकरी बाहों में!

बस एक आस संजोए हूँ
भूले-भटके कभी तो आओगे
अपने पदचिह्नों से मुझे सजाओगे
एक माँ की ही भाँति प्रतिक्षारत
हूँ मैं तुम्हारी जन्मभूमि ...!!

दलजीत कौर
चंडीगढ़

मैं वहीं खड़ी हूँ

लगे हो
रहने व्यस्त
बढ़ गईं तुम्हारी
जिम्मेदारियाँ
तुम्हारे बढ़ने के
साथ -साथ
अब तुम
पहले से
नहीं लगते
बदल गया
बहुत कुछ
तुम्हारे आस-पास
पर
मेरे आस-पास
कुछ नहीं बदला
अब भी
वहीं खड़ी हूँ मैं
देखती तुम्हारी
पहली झलक
थामती तुम्हें
सपने में भी
छोड़ती स्कूल
पहली बार
इंतज़ार करती
तुम्हारे लौटने का
तुम्हारी पसंद का
सब कुछ
तुम्हीं से शुरू
तुम्हीं पर ख़त्म
तुम्हें बड़ा
करते -करते
वक़्त न जाने
कहाँ खो गया
पलक झपकते
सब हो गया
खड़ी हूँ तुम्हारे
बचपन की गलियों में
खोजती तुम्हें
वहीं मैं
तुम आगे बढ़ गए
मैं वहीं खड़ी हूँ
एक माँ की तरह
सोचने लगी हूँ
मैं बस एक
माँ रह गई हूँ

आध्या रेनू

उदयपुर (राजस्थान)
नवोदित लेखिका

शोक - संताप विनाशिनी

दुर्गा आराधना

नवरूप धर, नव उल्लास लिए,
नव जीवन का यूँ संचार लिए
आयी देवी, जगत जननी माँ
सृष्टि कल्याण का ध्येय लिए।

शैल पुत्री यह मां रूप है प्रथम,
पर्वतराज हिमाद्री की सुता हुई।
हुई दक्ष यज्ञ में भस्मित स्वयं,
ले जन्म, पुनः हेमवती यह हुई।

कर तपस्या कठोर वर्ष सहस्त्र,
माँ ब्रह्मचारिणी का रूप धरा।
जब बढ़ा प्रकोप महिषासुर का
तब माता चंद्रघटा का वेश धरा।

कर दूर अंधकार विरल, गहन,
माँ कुष्मांडा ने यह ब्रह्माण्ड रचा।
ज्योत जलाया ज्ञान का सृष्टि में
स्कन्धमाता का जब रूप रचा

मुख सहस्त्र ज्योति सम शोभित,
माँ कात्यायनी यह शुभ फलदात्री
हो प्रचंड देवी, असुर विध्वंसिनी,
रूप भयंकरी अति, माँ कालरात्रि।

शोक - संताप विनाशिनी देवी,
श्वेतवर्णा माँ महागौरी वृषाभासिनी
रूप दिया शिव को अर्द्धनारीश्वर
माता यह है सिद्धिदात्री, सिंहासनी

पापी देह यह, कलुषित हुआ मन,
छल, दम्भ, द्वेष से परिपूर्ण तन।
हर कष्ट देवी! तुम करूणामयी
करू समर्पित तुम पर मैं तन - मन।

अनुराधा प्रियदर्शिनी

प्रयागराज उत्तर प्रदेश

दुर्गा आराधना

हे ! जगजननी दुर्गा माता भवानी, नमन तुम्हे है बारम्बार।
द्वार सजाऊँ तोरण लगाऊँ, गुहार लगाऊँ मैं बारम्बार।।

कलश बिठाकर माँ को बुलाऊँ, नवरात्र में आ जा माता।
लाल पुष्प, अक्षत भी लायी,लाल चुनरिया लायी हूँ माता।।

शरण तिहारी मैय्या मैं आयी, बिगड़ी बना दो दुर्गा माँ।
जो भी विपदा संकट भारी,क्लेश मिटा दुःख दूर करो माँ।।

नवरात्रि के नौ दिन माता,नौ रूपों में आन विराजो माँ।
ज्योति जलाकर तम को मिटाओ,दुष्टों का नाश करो माँ।।

महिषासुर राक्षस बहुतेरे, अष्टभुजाधारी दुर्गा माँ तू आ जा।
नारी की गरिमा को जो मिटाए,रण चण्डी काली बन आ जा।।

जग जगनी जग उद्धारक मैय्या,दुष्ट- दलन को दुर्गा माँ आयी।
जब भी धरा पर संकट आया, भक्तों की रक्षा को भवानी आयी।।

जो भी माँ की करें आराधना,कष्ट सभी दुर्गा माँ हर लेती हैं।
माँ के चरणों में शीश नवाऊँ मैं,ममता वात्सल्य लुटाती जगजननी हैं।।

सुमति श्रीवास्तव

जौनपुर (उ. प्र.)

तुम छोड़ दो (विधाता छंद)

तुम छोड़ दो गर साथ तो हम भी तुम्हें बस भूलते।
पड़ते नहीं फिर प्रेम में खुद की खुशी बन झूमते।।
सुनसान राह दिखे जहां मन जा बसो अब छोड़ के।
डर खत्म है तम का मुझे मत रोकना अब मोड़ पे।।

तुम भूल थे अब है लगे मुझको,नहीं अब आस है।
मत साथ दो,मत हाथ दो, अपनी अदा बस पास है।।
इस बाग में कलियां नहीं बस शूल ही बसते रहे।
हम देख कंटक राह में दिल खोल के हंसते रहे।।

तुम बोल दो मतिमूढ़ है हम मान लें यह भी सही।
पर प्रीत मूढ़ लगे कभी तुम बात ये करना नहीं।।
जिस प्रेम का तरु काट के तड़पे सदा तुम धूप में।
तुम छोड़ चाहत को मुझे ठुकरा रहे उस रूप में।

अब छोड़ दो मुझको घने तम में दिया बन के जलूं।
तुम ख्वाब में मिलने लगो मुझसे उसी पल मैं चलूं।
तन हीन हो लगता नहीं पर प्राण भी दिखता नही।
मरती गयी तुमसे जुड़ी हर आस है मुझमें कहीं।।

विज्ञान व्रत
एन - 138 , सैक्टर - 25 ,
नोएडा - 201301

नेतलाल यादव
उत्क्रमित +2 उच्च विद्यालय शहरपुरा,
जमुआ ,गिरिडीह(झारखंड)

ग़ज़ल

1

मुझको जिस्म बनाकर देख
इक दिन मुझमें आकर देख

जिसका उत्तर तू ख़ुद है
अब वो प्रश्न उठाकर देख

अच्छा अपने 'ख़ुद' को तू
ख़ुद में ही दफ़नाकर देख

क्या समझा तू दुनिया को
दुनिया को समझाकर देख

तू अपनी ज़द में है क्या
अपना हाथ बढ़ाकर देख

2

आपमें जब है ख़ज़ाना
छानते हो क्यों ज़माना

आपका चेहरा नहीं जो
क्यों उसे अपना बताना

आपको जब याद आऊँ
याद मुझको भी दिलाना

लोग सुनकर हों निरुत्तर
प्रश्न अबके वो उठाना

आपसे ही रास्ता है
रास्ता फिर क्या बनाना

3

आपसे रिश्ता हुआ
फिर मुझे धोखा हुआ

क्यों मिला मैं आपसे
और भी तनहा हुआ

सब ठिकाने खो गये
दर - बदर मैं क्या हुआ

जो किसी का था नहीं
आज क्यों सबका हुआ

कौन हूँ मैं कौन हूँ
चल - बसा कहता हुआ

पत्थरबाज

सुना है तेरे शहर में भी
पत्थरबाज रहते हैं
बड़े चीख़-चीखकर
शहर वाले कहते हैं
तब मजबूर होकर
मैं पत्थरों का इतिहास पढ़ता हूँ
पत्थर भी कभी
पूर्वजों के चूल्हे जलाते थे
जलाते नहीं थें,घर-परिवार
तब पत्थर युग में भी
आदमी एक-दूसरे पर
पत्थर नहीं चलाते थे
कन्दराओं में भी प्यार से
भोजन पकाते थे

पत्थर ही घर,पत्थर ही औजार
उनका पत्थर ही सब कुछ था
पत्थरों पर लिखी चीजें
खुदाई में मिलती रही हैं
पत्थरों की बनी मूर्तियाँ
उनको गढ़ने वाले शिल्पकारों को
दुनियां सलाम करती हैं
पर आज किन लोगों के हाथों में है
ये प्राचीन काल के पत्थर कि
चौराहे पर दनादन बरसाने लगे हैं

साथ ही घर के छतों पर
पत्थरों को सजाने लगे हैं
शहरों में दंगे-फ़साद
कभी भी कराने लगे हैं
पड़ोस का प्यार भी
क्षण में भुलाने लगे हैं
शांति और सौहार्द का प्रतीक
यह वतन, किस ओर जा रहा है !
यह चिंतनीय सवाल है
उत्तर की खोज भी नहीं करते
सब रोटियां सेंकते हैं
भाषण में खूब फेंकते हैं
तब हृदय को कर स्वच्छ
राजनीति से रहकर दूर
भाईचारा के बंधन में बंधकर
एक दूसरे को गले लगाते हैं
आइये ऐसे ही मिलजुलकर
अपनी संस्कृति को बचाते हैं ।।

डॉ राजीव गुप्ता जी की ग़ज़लें

(1)

मुश्किल में है जान फकीरा
मत दे मुझको ज्ञान फकीरा।

क्या जग का रोना रोता है,
सो जा लंबी तान फकीरा।

पंछी को मत रोको आखिर,
कितना खाए धान फकीरा।

दौलत सभी यहीं रह जानी,
क्यों करता है मान फकीरा।

सुनता है तो सुन ले मेरी,
झूठा है अभिमान फकीरा।

गुरुओं के पैरों में रख सिर,
होता है कल्यान फकीरा।

कर्म और मन दोनों शुभ हो
उसका फलता दान फकीरा।

बड़े-बुजुर्गों का सादर कर,
नित दिन तू सम्मान फकीरा।

(2)

मेरी उससे दूरी लिख दी,
माथे पर मजबूरी लिख दी।

ख़त तो उसने बहुत लिखे थे,
सब में बात अधूरी लिख दी।

हलक हमारा सूख रहा है,
उसको क्यों अँगूरी लिख दी।

भूखे पेट रहा मैं दिन भर,
लाला को तंदूरी लिख दी।

आमंत्रण कैसे ठुकराते,
दिल पर बात जरूरी लिख दी।

जीवन में वे क्षण भी आए,
रातें जब सिंदूरी लिख दीं।

(3)

है कहीं धुँआ कहीं चिंगारियाँ हैं,
बढ़ रहीं यूँ शहर में दुश्वारियाँ हैं।

भीड़ भी है शोरगुल भी है यहाँ,
पर शहर में बहुत ही तन्हाइयाँ हैं।

किस तरह वे रूठ कर हमसे गए थे,
आज मिल कर सच बहुत हैरानियाँ हैं।

रात भर मुझको सताया प्यार से फिर,
और अब भी आँख में शैतानियाँ हैं।

प्यार कर बैठे ख़ता यह हो गई थी,
क्या करें ये उम्र की नादानियाँ हैं।

दिल लगाना भी सरल है क्या किसी से,
इश्क़ में भी तो यहाँ नाक़ामियाँ हैं।

(4)

सबसे मशविरा कर लिया,
ज़ख्म फिर हरा कर लिया।

यार कुछ खफ़ा हो गए,
काम जो खरा कर लिया।

होश कब उसे कुछ रहा,
प्यार क्या जरा कर लिया।

जिंदगी है यह जिंदगी,
इस पे आसरा कर लिया।

बात यूँ चुभी आपकी
आज मन मरा कर लिया।

(5)

सोच-समझ कर कोई फैसला लेना है,
दिल ही दिल में और नहीं अब सहना है।

वो जो दिल में तेरे दस्तक देता है,
उसके दिल में तुझको भी अब रहना है।

तैराकी का हुनर हमें भी आता है,
मझधारों के बीच हमें पर रहना है।

दुनिया का दस्तूर निराला है थोड़ा,
दिल में कुछ है पर हमको कुछ कहना है।

हर मुश्किल में साथ निभाओ तो जाने,
या यारी का केवल चोला पहना है।

(फर्रुखाबाद ,उ. प्र .)

सोनिया सैनी

मोहभंग

हर्षित नहीं करती ,
अब यह पुष्प ,पल्लवित बेल,
सुबह की सुनहरी धूप भी,
आनंद नहीं देती,
ठंडी हवाओं की सरसराहट
अब वो सुकून नहीं देती,

पत्तों पर पड़ी, ओस की बूंदों सा जीवन ,
अब विलीनता चाहने लगा है
कि अब मोहभंग होने लगा है ।

संसार रूपी सागर की,
ये लहरे ,जीवन रूपी
कड़ी धूप में खड़ा कर
प्रेम ,प्रीत के गीत सुनना चाहती है ।
पर अब तो
धीरज रूपी बांध, टूट सागर में ही,
विलीनता चाहने लगा है, कि
अब मोहभंग होने लगा है ।

अब मखमली बातें ,
थोड़ी सी कसमें ,थोड़े वादे,
उत्साहित नहीं करते,
राग , ईर्ष्या, द्वेष , उद्वेलित नहीं करते
अब हृदय सच्ची तल्लीनता चाहता है।

संपूर्ण विलीनता चाहता है
अपनी जमीन, अपना आसमान चाहता है।
की मोहभंग होने लगा हैं।

डॉ उमेश चंद्र शुक्ल
अध्यक्ष,हिंदी-विभाग
महर्षि दयानंद कॉलेज
परेल मुंबई-12

ग़ज़ल

1

यादें अपनी दिला गया कोई
जामें महफ़िल पिला गया कोई।।
जली थी रात भर ठंडी हुई
बुझी थी राख जगा गया कोई।।
हारकर जिंदा रहना ठीक नहीं
खोया विश्वास जगा गया कोई ।।
सर झुकाए खड़े हो महफ़िल में
जीत की राह सिखा गया कोई।।
वक्त बुरा है कोई बात नहीं
नया अंदाज़ सिखा गया कोई ।।
हार जिंदगी नहीं हुआ करती
हौसला जीत बढ़ा गया कोई ।।
ग़म में ज़माना फना हो जाता
आशा दीपक जला गया कोई।।
तिरछी नजरों ने चुरा लिया दिल
दिल कि धड़कने बढ़ा गया कोई ।।
खुद को भूला था कब से उमेश
मुझको मुझसे मिला गया कोई।।

2.

रंगते दुनिया की आए देखकर
धरती पर आए सितारे देखकर।।
अपनों कि गलियों में गैरों सा रहा
गैरों कि गलियों में अपने देखकर ।।
दर्द आंखों से टपक कर चू पड़ा
ज़ख्मों से रिसते पिटारे देखकर ।।
मौत हैं दोनों तरफ दिलचस्प है
कहकशां लगता नज़ारे देखकर।।
अब हारकर जिंदा है सांसें चल रही
मौत लौटी ग़म हमारे देखकर।।
धुआं धुआं सी हो गई है जिंदगी
वक्त के शातिर नजारे देखकर।।
आ गया है लौटकर मंजर नया
ग़मजदा मौसम में सूरज देखकर।।
चलो सभी उमेश के संग देख लें
वक्त के मारे सितारे देखकर।।

3

हंसते हुए ग़म जिएं जा रहा हूं
गरल जिंदगी का पिएं जा रहा हूं।।
मोहब्बत के रस्ते पर कांटे बिछे
फूलों की बारिश किएं जा रहा हूं।।
घायल है दिल तेरे तीखे नजर से
अश्कों के जल बस पिएं जा रहा हूं।।
तेरी भूलने की आदत से वाक़िफ
तुम्हें याद हरदम किए जा रहा हूं ।।
छांव दूंगा तुम्हें प्रेम की राह पर
वादों को हरदम जिएं जा रहा हूं ।।
संजोएं दर्द ग़ज़ल कही है उमेश
रिश्तों की गर्मी लिए जा रहा हूं।।

4

गलत बात पर चुप रहना ठीक नहीं
रिश्तों में सवाल करना ठीक नहीं।।
सहता नहीं किसी का बेबाक बोल,
छुप छुप के रोते रहना ठीक नहीं ।।
दिल्लगी नहीं है, हमारी जिंदगी
महफ़िल में झूठा कहना ठीक नहीं ।।3
गर गल्ती हुई है तो सुधार कर ले
आइने पर दोष मढ़ना ठीक नहीं ।।
शब्दों का सफर सत्य शिव सुंदर है
लफ़्ज़ों में ज़हर बुझाना ठीक नहीं ।।
फायदे के लिए किसी के दिल में
संदेह का बीजारोपण ठीक नहीं ।।
मोहब्बत के रंग से रंगा उमेश
अब जादू टोना कहना ठीक नहीं।।

5

बद् से बद्तर शहर के हालात हैं
मर रहे किस्तों में हम सौगात है ।।
सज्जाद ने चहुंओर घेरा डालें
भाषणों में आदमी दिन रात है।।
आज बातें मुद्दे पर होती नहीं
शोर शराबा भीड़ है संहात है ॥
बारुदी विषधर रास्तों पर घूमते
होड़ में है आदमी खरी बात है ।।
राहू केतु ग्रसने लगें फिर धरा
रसातल में गिरती आदम जात है।।
ज़लज़ला फैला हुआ चारों तरफ
समंदर की लहरों से उत्पात है।।
बस सोच समझकर बढ़ना है उमेश
प्रश्नों का उत्तर मिलेगा रात है।।

6.

दुआ बद्दुआ का असर देख लेना
पलट करके बीता कल देख लेना ।।
पैसा प्रतिष्ठा पद पहचान मांगते
धोखे से उगती फसल देख लेना ।।
नये रुप में छलना हमको छले हैं
तड़पते हुए तुम छली देख लेना ।।
खून के प्यासे बहुत धनी मिलेंगे
तुम गहरी नज़र से गली देख लेना।।
नफ़रत की दीवार बढ़ती रही तो
झुलसती हुईं तुम ज़मीं देख लेना।।
मिलजुल कर कंधे से कंधा मिलें तो
फतह एवरेस्ट का शिखर देख लेना ।।
हंस खेल खुलकर जी लो उमेश अब
मौसम के हर रंग अनंत देख लेना।।

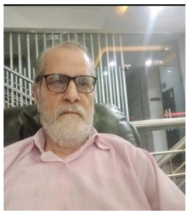

विजय कुमार तिवारी
(कवि,लेखक,कहानीकार,उपन्यासकार,समीक्षक)
भुवनेश्वर,उडीसा,भारत

'लाकडाउन' के दौर में संबल देती रचनाएं

'**ला**कडाउन' पुस्तक के आवरण के अंदरूनी हिस्से में भाई रणजीत प्रसाद जी के प्रासंगिक कथन से ही शुरुआत करना चाहता हूँ। उन्होंने लिखा है,"जब एक अप्रत्याशित,अकल्पनीय संकट ने देश में दस्तक देनी शुरु की,तो सरकार ने इससे पार पाने के लिए हर मकान के द्वार पर एक लक्ष्मण रेखा खींच दी,सारी गतिविधियाँ थम गयीं, सड़कें सुनसान हो गयीं,बाजार वीरान हो गये,शहरों में सन्नाटा छा गया। इसी माहौल में मनोज जी कृत 'लाॅकडाउन' हमारे मोबाइल स्क्रीन पर क्रमिक रुप से उभरने लगा। बिना कोई आवाज किये उसने उस सन्नाटे को तोड़ा। स्तब्धता भंग की।"

मनोज जी ने किसी दिन इस पुस्तक के बारे में, सामाजिक मंच पर लिखा,"लाॅकडाउन के दिनों में आप सबके आग्रह,प्रेम,और दबाव में लिखना शुरु किया। इस पुस्तक में लाॅकडाउन की 48 कड़ियाँ तो आपको पढ़ने के लिए मिलेंगी ही,इसके अतिरिक्त कुछ और बातें भी हैं जो फेसबुक पर पोस्ट नहीं हुई थीं। अखबारों की सुर्खियाँ ली गयी हैं,मेरी डायरी के अप्रकाशित अंश हैं और हैं आपके चुनिन्दा कमेंट। कुल मिलाकर यह एक उपन्यास की तरह रोचक और पठनीय है।"

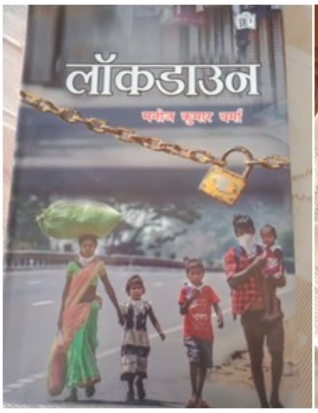

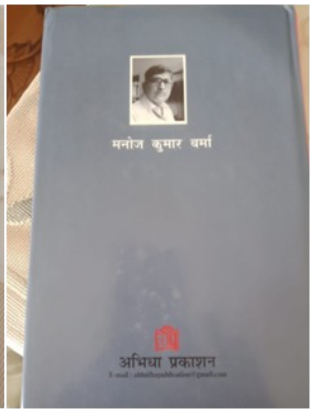

मनोज कुमार वर्मा जी,मेरी ही तरह भारतीय स्टेट बैंक की सेवा से निवृत्त हुए हैं और अपने उत्कृष्ट लेखन के माध्यम से हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में लगे हैं। सामाजिक मंच यानी फेसबुक पर जुड़ने के बाद हमने एक-दूसरे को पढ़ना,समझना शुरु किया। मेरे लिए सुखद है कि वर्मा जी की अनेक रुचियों-अभिरुचियों में हमारा साम्य है। विशेष तौर से उनकी धार्मिक-आध्यात्मिक भावनाओं के प्रति मेरी श्रद्धा द्विगुणित होती गयी है। उनकी आध्यात्मिक समझ और स्थापनाएं स्पष्ट और प्रभावित करने वाली हैं। अपने प्राक्कथन में उन्होंने साहस पूर्वक स्वयं लिखा है,"यह जो भी है,कथा,आत्मकथा,डायरी,संस्मरण इसका सूत्रधार और मुख्य पात्र मैं ही हूँ।" उन्होंने प्राक्कथन के अंत में लिखा है,"लाॅकडाउन के बारे में सबसे अहम है उसका प्रस्तावना। न यह कथा है,न आत्मकथा। न डायरी है, न संस्मरण। न लेख है,न रिपोर्ताज। यह बस यूँ ही है। लाँक डाउन में बैठे ठाले।"

कुछ अपनी व्यस्तता,कुछ उनकी अनुपस्थिति,शुरु-शुरु में ठीक से न जान पाने के कारण लाॅकडाउन की कड़ियों से सही मायने में सम्बद्ध हो नहीं पाया। शायद मेरी अन्तरात्मा ने सांकेतिक भाषा में समझा दिया था,चिन्ता मत करो,एक दिन सम्पूर्ण सामग्री पुस्तकाकार सामने होगी और मैं अपनी श्रद्धा से पठन-पाठन,अनुशीलन व विवेचना करूँगा। मित्र,सहकर्मी मनोज कुमार वर्मा जी को पुस्तक सुलभ करवाने के लिए हृदय से आभार व बधाई देता हूँ।

यह कोरोना काल का अनुभव और उसका दस्तावेज है। देश ही नहीं पूरी दुनिया बड़ी भयावह,दुःसह दौर से गुजरी है और आज भी हम उसके दबाव में हैं। कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी,एक बार फिर मनुष्य विजेता बना है और मानवता जीत गयी है। हमारे देश में इस दौरान बहुत सी विसंगतियाँ देखी गयीं,समाज में अन्तर्विरोध उभरे और एक बड़ा वर्ग चिन्हित हुआ जो प्रश्न खड़ा करने,असहयोग करने और सुलझ रही परिस्थितियों को पटरी से उतारने में लगा रहा।

मेरी मान्यता है कि संसार में बुरे लोग हैं, परन्तु अच्छे लोगों की संख्या बुरे लोगों से कई गुनी ज्यादा है। यह भी लगता है कि हर व्यक्ति में दुर्गुणों के बजाय सद्गुण अधिक हैं। ऐसे में दुनिया से निराश होने की जरूरत नहीं है। हजारों बार दुनिया के समाप्त हो जाने की घोषणायें हुईं हैं, परन्तु वे ही लोग चले गये जो दुनिया को खत्म हो जाने की घोषणा कर रहे थे। दुनिया आज भी है और ऐसे ही बनी रहेगी। एक रहस्यमय तथ्य निवेदन करता हूँ,वैज्ञानिक लोग भी मानते हैं। आत्मा हमारा साथ तभी छोड़ती है जब यह घटक शरीर उसके रहने लायक नहीं रह जाता। सामान्य परिस्थितियों में हम वृद्ध होते हैं तो आत्मा को सम्हालने वाले हमारे शारीरिक तत्व धीरे-धीरे कमजोर होते जाते हैं और उनका आपसी तालमेल भी नहीं रहता,ऐसे में आत्मा को यह शरीर छोड़ना पड़ता है। कभी-कभी दुर्घटनाओं में कुछ विशेष टूट-फुट हो जाती है और आत्मा को जाना पड़ता है। यदि हम अपने शरीर की उचित देखभाल रखें तो लम्बी आयु तक जी सकते हैं।

मनोज जी ने 'लाॅकडाउन' का लेखन शुरु किया,

बुधवार 25 मार्च 2020 के हिन्दुस्तान अखबार की सुर्खियों से। 24 मार्च 2020 को ही प्रधानमंत्री मोदी जी के देश के नाम संदेश के बाद मैंने अपने ब्लाग में लिखा-"आज रात 8 बजे मोदी जी ने देश को सम्बोधित किया और विश्वव्यापी महामारी कोरोना की भयावहता की बहुत भावुक चर्चा की। उन्होंने देशवासियों को आगाह करते हुए कहा कि साधन सम्पन्न विकसित देश भी इसका मुकाबला नहीं कर पा रहे हैं। इसका कोई इलाज नहीं है। परहेज,घर में रहना और बाहर न निकलना ही इससे बचाव का उपाय है। उन्होंने पूरे देश में आज मध्यरात्रि 12 बजे से सम्पूर्ण बन्दी जैसी घोषणा की है जिसे अंग्रेजी में "लाॅकडाउन" कहा जा रहा है।"

मनोज जी की तरह मैं भी कुछ अधिक ही चिन्तित और उत्साहित था। मेरे ब्लाग की पंक्तियाँ देखिए-"मैं भी आप सभी से आग्रह करता हूँ कि प्रशासनिक सभी आदेशों का पालन करें और किसी भी परिस्थिति में घर से बाहर न जाये। विश्वास कीजिए-हम इस महामारी को हरायेंगे और सम्पूर्ण विश्व इससे बाहर निकल आयेगा।"

"मैं अपने फेसबुक और अन्य माध्यमों पर नित्य कुछ न कुछ लिखा करूँगा ताकि आप सभी अपने खाली समय में पढ़ा करेंगे। यदि आप लोग कुछ पूछना चाहें या किसी मनपसन्द विषय पर चर्चा करना चाहें तो आप सभी का स्वागत है। मुझे खुशी होगी और निश्चित ही इस मन्थन से कुछ अमृत निकलेगा। खुश रहें, प्रसन्न रहें, अपने-अपने घरों में रहें और स्वस्थ रहें।"

2019 के नवम्बर से 03 जनवरी 2020 तक हम दोनों पति -पत्नी सिंगापुर के प्रवास में थे, उन्हीं दिनों इसकी बावत चर्चा शुरु हो गयी थी और मार्च आते-आते इसकी विकरालता का आभास सम्पूर्ण विश्व को हो चुका था। 20 मार्च 2020 को "कोरोना और हमारा अध्यात्म" तथा 22 मार्च 2020 को "जनता कर्फ्यू और हमारा देश" मैंने दो लेख लिखे। अप्रैल महीने में मैंने 6 कड़ियों में "खूबसूरत आँखों वाली लड़की" कहानी लिखी। इसके अलावा लगभग नित्य ही कविता,कहानी या कोई धार्मिक/सामाजिक/आध्यात्मिक लेख लिखता रहता था। रामचरितमानस पढना शुरु किया और नित्य ही "श्रीरामचरितमानस और भगवत्प्रेम" का एक खण्ड फेसबुक के हवाले करता था। अन्य नियमित लेखन के साथ ही मैंने 11 जून 2020 से अपने उपन्यास "देहरी से द्वार तक" का लेखन प्रारम्भ किया और कुल 100 कड़ियों में इसका अंतिम भाग 29 अगस्त 2020 को पूर्ण हुआ। तदन्तर अपने आध्यात्मिक गुरुदेव की जीवनी का लेखन चल रहा है, जिसे नित्य ही मनोज जी ध्यान पूर्वक पढ़ते हैं और अपनी राय देते हैं।

लाॅकडाउन के दौरान अपनी व्यस्तता का उपरोक्त संक्षिप्त विवरण देने का आशय मात्र इतना ही है कि हर जागरूक प्राणी अपने तरह से परिस्थितियों से जूझता है,संघर्ष करता है और अपनी जिम्मेदारी निभाता है।

लॉकडाउन के समय मनोज जी की चिन्ता वाजिब है हर सहृदय आदमी ऐसे ही सोचता है। लोग शहरों से पलायन कर अपने गाँव के लिए निकल पड़े हैं। यह मार्मिक दृश्य है और राजनीतिक विफलता भी। देश का दुर्भाग्य है कि ऐसे हालात में बहुत लोग सहयोग करने के बजाय वितंडावाद खड़ा करते हैं। इस सन्दर्भ में मनोज जी के भाई दीपू जी की बातें विचारणीय है। वैसे ही देवेन्द्र जी की बातों में दम है और सर्वेश जी ने बिल्कुल सही आकलन किया है।

मनोज जी लिख रहे है,"आम आदमी की मुश्किलें बढ़ रही हैं।" मनोज जी के पड़ोसी पाण्डे जी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहते हैं,"सोचिए,अगर मोदी के पहले वाले लोग होते तो क्या होता? मैं सोचकर ही सिहर जाता हूँ।"

अपनी डायरी के दूसरे भाग में मनोज जी विचार व्यक्त करते हैं कि फेसबुक का पोस्ट दो से तीन पैराग्राफ का ही होना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा चार पैराग्राफ का। इससे ज्यादा होने पर लोग नहीं पढ़ते। मैं ऐसा नहीं करता और इस विचार से पूर्णतः असहमत हूँ। विषय-वस्तु सामयिक हो,रोचक हो,सार्थक हो तो बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़े जाते हैं। यह खुला और विस्तृत सामाजिक मंच है। अच्छी रचनायें हैं तो निश्चित पढ़ी जायेंगी। सच्चे पाठक अच्छी चीजों को खोज-खोज कर पढ़ते हैं,आपसे सम्पर्क करते हैं और आपको सम्मान भी देते हैं।

लॉकडाउन-4 में मनोज जी बताते हैं,संदेश प्रसारित हो रहा है कि 3 माह का राशन,3 माह का सिलेंडर,रामायण,महाभारत,कुल 90 दिनों की तैयारी है। लोग सहमत/असहमत हो सकते हैं,यह उनका व्यंग्य है। अमेरिका में लाॅकडाउन नहीं है। मनोज जी की बात स्वीकार करनी चाहिए,"अंध विरोध और अंध समर्थन दोनों गलत है।" वे कुछ लोगों की पीड़ा, हानि का उल्लेख कर रहे हैं और आम आदमी की चिन्ता भी। यह आम आदमी खास लोगों का हथियार बनकर खुश होता है। आम आदमी ने कभी अपनी अस्मिता,आत्म-गौरव की चिन्ता नहीं की। चाहे इधर से हो या उधर से,वह सारे छल,छद्म, प्रपंच में सहभागी क्यों बनता है? पिछले पृष्ठों पर लिखित सर्वेश जी की बात पर गौर करना चाहिए। मनोज जी अपनी डायरी में लिखते हैं,"आज राम नवमी है। भक्ति संगीत में डूबे रहने वाले शहर में सन्नाटा है।" वे कुमार विश्वास की कविता 'अपने-अपने राम' सुन रहे हैं।

लाॅकडाउन -5 में मनोज जी को दिल्ली से कोई मित्र सूचित करते हैं,यहाँ किसी मस्जिद से कोरोना संक्रमित चार-पाँच सौ लोग पकड़े गये हैं। बवाल मचा हुआ है। मनोज जी लिखते हैं,"यह एक नयी परिपाटी चल पड़ी है। कोई अपनी गलती नहीं मानता। आरोप का उत्तर प्रत्यारोप। अटैक इज द बेस्ट डिफेंस की नीति पर अमल हो रहा है। देश जाए भाड़ में।"

लेखन के क्रम में मनोज जी रिश्ते-नातों के बीच हो रही बीमारियों का कारुणिक जीवन्त चित्रण करते हैं। मोदी जी का अपना तरीका है,ताली-थाली बजवाने के बाद 5 अप्रैल को रात में नौ बजे नौ मिनट के लिए दीप प्रज्वलित करना

है। कमल किशोर जी का व्यंग्य पढ़कर मनोज जी गदगद हैं। लोगों ने पूरी दीपावली मना ली क्योंकि हम उत्सवधर्मी देश के नागरिक हैं। मनोज जी कविता में लगे हुए है। उनका पूजा-पाठ बंद नहीं हुआ है। बाजार की स्थिति देखकर मनोज जी लिखते है,"मोदी जी क्या करेंगे? लोगों में जरा भी समझ नहीं है।" मुम्बई के सब्जी मंडी में लोग एक-दूसरे पर चढ़े जा रहे हैं। जमात की हरकतों पर लोग स्तब्ध हैं, प्रशासन सक्रिय है परन्तु स्थिति भयावह होती जा रही है। लाॅकडाउन-12 पर प्रतिक्रिया में सुरेन्द्र प्रसाद जी लिखते हैं,"बहुत दुखद स्थिति है। अपनी ओछी हरकतों से न सिर्फ पूरे समाज को मुसीबत में डाल रहे हैं बल्कि अपने समाज को ध्रुवीकरण से इतर अब बहिष्कार की ओर धकेल रहे हैं। साथ ही गंगा नाथ झा ,अंकुर,आलोक रंजन,दया शंकर शरण और ऋचा वर्मा की प्रतिक्रियाएं हैं। सबके अपने -अपने विचार हैं। कुल मिलाकर स्थिति यही है कि मुसलमान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहे हैं।

मनोज जी लिखते हैं,"लाकडाउन में संयुक्त परिवार की संस्कृति लौट रही है।"

मनोज जी का सीवान,चीन का वुहान हो गया है। छत पर कुछ हँसी के क्षण भी होते हैं। रामायण में सुग्रीव के किरदार की मृत्यु हुई है। मनोज जी अपनी कविता की पंक्ति याद कर रहे हैं-भय ने हमें जकड़ रखा है/और बहुत मुश्किल है/उससे उबर पाना। कोरोना के भय से सर्वाधिक परेशानी हो रही है। रवीश कुमार अपनी छुद्र हरकतों से बाज नहीं आ रहे है। मीडिया का बड़ा वर्ग ऐसे ही छल-छद्म के प्रचार में लगा है।

मनोज के इस लॉकडाउन में वे सारे सन्दर्भ आये हैं जो शान्तिप्रिय वर्ग को कटघरे में खडा करते हैं। उनके प्रबुद्ध लोगों को बहुत कुछ समझने और अपने विचारों में बदलाव की जरूरत है। सब लोग लाॅकडाउन का पालन कर रहे हैं,उनकी महिलाओं को कौन प्रोत्साहित कर रहा है? प्राचीन काल से ये उकसाने वाले लोग खेल खेलते हैं और देश की तबाही होती है।

ममता जी हर स्थिति में सकारात्मक सोच दर्शाती हैं,निश्चित ही उनका व्यक्तित्व पूरे घर को,आसपास के समाज को जोड़े रहने में सहायक होगा। उनकी उदार भावना रिश्तों के लिए अहम है।

रामायण और महाभारत में दिखाये जा रहे प्रसंगों को वर्तमान परिस्थितियों से जोड़कर मनोज जी अद्भुत विवरण प्रस्तुत करते हैं। मेडिकल पेशे से सम्बन्धित रहस्योद्घाटन से मन दुखी और आतंकित है। कहने में कोई संकोच नहीं है,हमारा मेडिकल पेशा,सारे सरकारी तंत्र,पुलिस-प्रशासन, न्यायालय सर्वत्र गिरावट है। जो अच्छे लोग हैं,वे भी संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार के चलते शिकार होते हैं और बदनाम होते हैं। बड़े लोग बच जाते हैं और आम लोग मारे जाते हैं। हमारी व्यवस्था ही कमजोर है और उसको चलाने वाले आकंठ डूबे हुए हैं। ज्योंही कोई बड़ा पकड़ा जाता है,यही व्यवस्था बचाने में लग जाती है और लीपा पोती का खेल चलता रहता है।

मनोज जी को एक वाम पंथी से मोहभंग हुआ है,ये सारे के सारे वैसे ही हैं। इन लोगों ने सत्ता से मिलकर सालों से देश को गलत इतिहास दिया और हमारी संस्कृति को प्रभावित करने की कोशिश की। आज मनोज को क्रोध आ रहा है। इसके लिए अफसोस करने की जरूरत नहीं है बल्कि सत्य को उजागर करने की जरूरत है। आम नागरिक अपनी परिस्थितियों की सच्चाई जाने और सचेत हो जायें। सरकारें अपना काम करती हैं,आम जनता को अपना काम करना चाहिए। आम जनता या तो चुप रहती है या उन लोगों के बहकावे में आ जाती है और अंततः अपनी ही हानि कर बैठती है।

मनोज जी हिन्दू लड़के और मुस्लिम लड़की की प्रेम कहानी सुनाते हैं। ऐसे बहुत हैं। यही मामला दूसरे पक्ष के सामने होता तो शायद वहीं सब निपट जाता।

लंका युद्ध में सब की जीत है,सबका सहयोग है। आज के इस संकट में सब को साथ देना चाहिए। योगी जो कर रहे हैं,अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री क्यों नहीं कर रहे हैं? बहुतायत लोग विरोध में खड़े हैं। हमारी जनता पुरुषार्थहीन, मुफ्तखोर मुँह बाये खड़ी है, समस्यायें खड़ी करती है और जनसंख्या बढ़ाने में लगी है।

चीन में प्रेमचंद के समकालीन लूशुन नामक बड़ा लेखक हुआ,पिता को उचित इलाज के बिना मरते देखा। मेडिकल की पढ़ाई के लिए जापान गया। छात्रावास में एक फिल्म दिखाई गयी, जिसमें मोटे-ताजे चीनियों को दुबले-पतले जापानी मार रहे थे। लूशुन के मस्तिष्क की बत्ती जल उठी,ओह,इन्हीं शरीरों का इलाज करूँगा। उसने मेडिकल की पढ़ाई छोड़ दी,वापस अपने देश आ गया। चीन की क्रान्ति के बाद तत्कालीन नेतृत्व के साथ चीन के नव-निर्माण के कार्यों में लग गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे यहाँ जो हुआ,वह पर्याप्त नहीं था और तब से चली आ रही बुराइयाँ आज भी देश को प्रभावित कर रही हैं। देश चलाने का जो एजेण्डा सेट हुआ,उसने बहुत बंटाधार किया है। कर्मठ और मेहनती जनता आज भी दिग्भ्रमित है और यथार्थ नहीं समझ रही है।

मनोज जी ने स्थानीय स्तर पर आपसी रिश्तों के प्रचलित शब्दों को स्थान दिया है जैसे दुलहिन। पालघर में दो साधुओं सहित तीन व्यक्तियों की हत्या ने मनोज का ध्यान आकृष्ट किया है,लिखते हैं,ये साधु थे-इनका कोई ह्यूमन राइट नहीं,कोई संवैधानिक संरक्षण नहीं। महाभारत में द्रोपदी-चीरहरण प्रसंग चल रहा है। सभी युद्ध की सम्भावना देख रहे हैं। लाॅकडाउन में मन 'औंजिया' गया है। दुनिया के किसी शब्दकोश में इसका समानार्थी खोजकर दिखा दीजिए। 22 अप्रैल को पुरी के भगवान जगन्नाथ मन्दिर में ममता-मनोज का जयमाल कार्यक्रम हुआ। मनोज के एक तरफ भगवान जगन्नाथ की बड़ी-बड़ी आँखें थीं तो सामने ममता की। बड़ी-बड़ी आँखों वाली ममता को वह पहली बार देख रहा था। मुझे रामायण का वह प्रसंग जोड़ने दीजिए जिसमें जनक नंदिनी सीता सखियों सहित पुष्पवाटिका में राम के सामने खड़ी

हैं। लेख को सहज बनाने के लिए जरा 25 अप्रैल 2020 का मनोज जी लेखनी के साथ आप भी आनंदित होइये--वह (ममता) आकर मोबाइल बंद कर देती है। कुछ देर मोबाइल बंद रखिए। गाना सुनिए।
वह कारवां का बटन दबाती है। एक गाना बज उठता है।
---चलो एक बार फिर से अजनबी बन जाएँ हम दोनों----
मनोज अर्थपूर्ण नजरों से ममता को देखता है। घर में दो ही प्राणी हैं। ????
ममता खिल-खिलाकर हँसती है।
सुरेश जी कमेंट करते हैं-इस हँसी को मामूली मत समझिए। ये बहुत ही अर्थपूर्ण है। मैं भी कहना चाहता हूँ,यह हँसी कोरोना-काल में किसी संजीवनी की तरह है।
लाॅकडाउन-28 शायद इस पुस्तक का बेहतरीन प्रसंगों से भरा लेखन है। बदलाव हर किसी के जीवन में होता है,मनोज जी में वह बदलाव घटित हुआ। पटना गये थे पत्रकार संपादक गुलाम सरवर के साथ और लौटे अपने प्रभु के साथ। मनोज जी के भीतर ईश्वरीय चेतना प्राणवान हो चुकी थी और तब से प्रभु-सेवा,ईश्वर-प्रेम चल रहा है। शेरों-शायरी को मनोज जी ने ऐसे याद किया है जैसे आज भी वह किसी कोने में कुलबुला रही है। अधिकांश लोगों के जीवन में कुछ ऐसे पल होते ही हैं,कुछ खास निगाहें गड़ी होती हैं, जिनके सहारे जिन्दगी कटती रहती है।

मनोज जी भरत के चरित्र में खोये हुए हैं और उन सम्पूर्ण परिस्थितियों पर विचार करते हैं,कहते हैं,"भरत का चरित्र मुझे रुला देता है। रामायण में राम का चरित्र दूध की तरह निर्मल,स्वच्छ और उज्ज्वल है तो भरत उस दूध से निकाले गये मक्खन की तरह हैं।"

भरत मूर्तिमान प्रेम हैं। भरत का चरित्र निभाने वाले संजय जोग को कोटिशः नमन। 40 वर्ष की आयु में 27 नवम्बर 1995 को उस कलाकार का निधन हो गया। मनोज जी बद्रीनाथ की यात्रा में बहुत कुछ बता रहे हैं और बहुत कुछ गोपन भी है। कुछ संकेत करता हूँ,शायद अच्छा लगे,स्वीकार कर लें। हमारा जन्म,मिलना-जुलना और सारे सम्बन्ध उन्हीं लोगों के साथ होता है जिनके माध्यम से ईश्वर हमारा लेन-देन समाप्त करता है। जिससे जो लेन-देन शेष है,मिलते ही वह देना-लेना शुरु हो जाता है। मिट्टी का ऋण चुकाने के लिए ही हमारी सारी यात्राएं,निवास,प्रवास होता है। ऐसे हर सुखद संयोगों में कुछ हमें मिलता है और हम भी दूसरों को देते हैं। सब ईश्वरीय माया के अधीन है, इसलिए कोई रहस्य समझ नहीं पाता। ईश्वर या जन्म-जन्म से जुड़ा हुआ हमारा गुरु समय आने पर मिलकर संबल देता है,मार्ग-दर्शन करता है और उपयुक्त लोगों से मिला देता है। हमारे कर्म ही हमें ईश्वर और गुरु के समीप ले आते हैं और दूर करते हैं। ईश्वर और गुरु साथ हैं,समीप हैं तो हम सुखी शान्त,सहज और आनन्द में होते हैं। वृद्ध सन्यासी,भगवती माई,आनंद स्वामी या ऐसी अनेक सद्-आत्माएं मिलती हैं और आवश्यक सहायता करती हैं। ईश्वर अपने देवदूतों को भेजता है और वे मार्ग सुझाते हैं परन्तु चलना आपको ही है। भगवती माई के साथ मिलन और संवाद मनोज को हमेशा याद रहता है। यह इसलिए सम्भव हुआ कि उसने स्वयं को बहुत हद तक रिक्त कर लिया था। जितना खाली था,उतना ज्ञान और कृपा मिली। अहंकार और अन्य भावनाएं जितनी भरी थीं,उतना उसने सुअवसर खो दिया। भगवती माई का उत्तर समझने योग्य है,"आग तो आग है,कहीं से उठाओ,अपना गुण धर्म निभायेगी। मनोज जी लिखते हैं,"गुरु वह नहीं होता जो पूरे आडम्बर के साथ आपको दीक्षित करे। गुरु तो अपनी दृष्टि मात्र से दीक्षित कर दे।" हमें याद रखना चाहिए कि वह दृष्टि पात्रता के आधार पर ही पड़ती है और संयोग बार-बार नहीं बनते।
शादी की अपनी इकतीसवीं सालगिरह पर मनोज के सामने प्रश्न है,उसे तो पत्नी उसके मनोवृतानुसारिणी मिल गयी पर क्या ममता को वैसा पति मिला?हर पति को ऐसा सोचना चाहिए और दोनों को एक-दूसरे के लिए ऐसा ही होना चाहिए। शादी की सालगिरह पर खूब बधाइयाँ मिलीं।
एस,पी,सिन्हा मुकुल जी की हाँ में हाँ मिलाना चाहता हूँ,"एक तो आपका वृतान्त और उपर से आपका लेखन या कहें चित्रण का तरीका अद्भुत है।"
भगवती माई ने मनोज को अद्भुत गुरु 'मन गुरु' दे दिया। गुरु शक्तियाँ पात्रता के आधार पर सहयोग करती हैं और आगे बढ़ाती हैं। केदारनाथ की सफल यात्रा हुई और उसने मांगी हुई मन्नत के अनुसार भैरव नाथ के चरणों में एक रुपया चढ़ाया। मनोज जी ने केदारनाथ यात्रा का अद्भुत जीवन्त वर्णन किया है। मुझे उनका वह सम्पूर्ण स्वरुप भाषित हो रहा है। उनके जीवन में भगवान शंकर का आगमन शुभ ही है।

यात्रा से लौटे हुए मनोज जी का मन वहीं है,ऐसा ही होता है। उन्होंने अनेक छोटे-छोटे प्रसंग लिखे हैं जिन्हें पढ़कर बहुत कुछ अनुभव किया जा सकता है। ब्रह्मकपाल पर मनोज ने आनंद स्वामी के कहने पर पिता के लिए पिंडदान किया।
मनोज जी ने डॉ नंद किशोर नवल जी को अपनी पुस्तक में याद किया है। इस कोरोना-काल में उनका निधन 12 मई 2020 को हुआ। मुझे कहानी विधा में सक्रिय होने का सुझाव उन्होंने ही दिया था। उनके प्रयास से पटना में मेरी कहानियों पर दो बार बड़ी-बड़ी गोष्ठियाँ हुईं, उन्होंने मेरी कहानी 'काउण्टर क्लर्क' को बिहार प्रगतिशील लेखक संघ की पत्रिका उत्तरशती में प्रकाशित किया। मेरा लिखा नवल जी पर संस्मरण सिंगापुर की पत्रिका 'सिंगापुर संगम' में उन्हीं दिनों छपा। नवल जी से अपने 10 वर्षों के पटना प्रवास में खूब मिलना-जुलना हुआ।
मनोज जी लिखते हैं कि करोना का कहर इसी तरह जारी रहा तो एक दिन पूरी दुनिया आॅनलाइन हो जायेगी। साथ ही कुछ वीभत्स और भयावह समाचार,उसके विडियोज दहशत फैला रहे हैं। लोग सड़कों पर हैं,पैदल सैकड़ों मील दूरी तय करने निकल पड़े हैं। समस्या वही है,सरकारें जो कहती हैं,लोग नहीं मान रहें । कुछ भ्रमित

करने में लगे हैं। मनोज जी कविता लिख रहे हैं।
मनोज जी की पुस्तक 'लाॅकडाउन' पढ़ते हुए अद्भुत अनुभूतियों से भरा हुआ हूँ। उनकी देशज भाषा,बोली और सहज संवाद बहुत मधुर लगे। उनके भीतर का मानवीय पक्ष,संवेदनाएं और स्वजनों के साथ सहज,स्वाभाविक सम्पर्क बहुत ही रोचक बन पड़े हैं। उन्होंने अपनी कथा में किसी तरह से छिपाने की कोशिश नहीं की है,जो जैसा पात्र है उसका वैसा ही चित्रण किया है। यह लेखक का साहस दर्शाता है। मनोज जी से निवेदन है कि मेरा स्नेह,आशीर्वाद सब को पहुँचा दें। पुनश्च बधाई।

पुस्तक का नाम : लाकडाउन
लेखक : मनोज कुमार वर्मा
मूल्य : रु 250/-
प्रकाशक अभिधा काशन,मुजफ्फरपुर

सुनीता मिश्रा
भोपाल

लघुकथा

भोग

पूस का महीना ,ठंड की मार ,तिस पर रात भर पानी पानी बरसता रहा।सुबह घना कोहरा ।पूरा घर रजाई मे दुबका पड़ा।दरवाजे की घंटी बजी।दरवाजा सतीश ने खोला।"कौन है"मैने बिस्तर पर से ही सतीश से पूछा ।जवाब मिला---" रम्या है"इस ठंड मे जब अधिकांश काम वाली बाइयाँ बहाना बना छुट्टी किये है,रम्या शाल मे दुबकी हुई सामने आकर खड़ी हो गई । शाल को एक तरफ रख काम पर लग गई ।किचिन साफ कर ,सबके लिये अदरक की कड़क चाय और गरम गरम पराठे सेंक कर सबको नाश्ता कराया।फिर मुझसे पूछा --"आँटी खाना क्या बनेगा।""बेटा तुमने सबको नाश्ता करा दिया,अब जा तुझे और जगह भी जाना होगा काम पर ।मै धीरे धीरे कर लूंगी।" "मै इतनी जल्दी इसीलिये तो आई।आप बुखार मे काम करोगे? बता दो मेरे को,नई तो जो मेरे समझ आयेगा मै पका दूँगी" उसकी ज़िद से हार कर मैने उसे क्या पकाना है बता दिया। सारा काम निपटा कर वो ,

सरसो का तेल एक कटोरी मे गरम कर ,ले के मेरे पास आई"आँटी जी,बुखार अभी भी हैआपको?लाओ मै आपके पैरो मे तेल मल देती हूं "मेरे तमाम इन्कार के बावजूद वो मेरे पैरो मे तेल मलती रही। सतीश मेरे पति ,अस्थमा के मरीज,ठंड मे उन्हे अधिक परेशानी होती है,बिटिया बी कॉम फाइनल मे।बेटा इन्जीनियरिंग मे।घर के काम मे मेरी सहयोगी एकमात्र रम्या। करीब चौबीस पच्चीस साल की दो छोटे बच्चो की माँ ।झाड़ू कट्का,बरतन,सब्जी काट छांट करना ये काम बड़ी मुस्तैदी से करती ।अब चाहे आप उसे मेरी सहयोगी समझे,या कामवाली बाई ,या मेरी सहेली।हंसमुख,अपनी सास की हमेशा तारीफ करती,बताती "मेरे बच्चे तो अपनी दादी के पास ही रहते।वो उनको बहुत प्यार करती।तभी मै बाहर काम कर पाती" ।पति किसी गाड़ी मे क्लीनर का काम करता है।हमेशा उसके लिये कोई न कोई गिफ्ट लाता है।कुल मिलाकर अपने परिवार के प्रति उसका सकारात्मक भाव रहता।
पिछले पांच साल से मेरे घर मे वो काम कर रही है।सुबह जब मै घर मे सब लोगो के लिये नाश्ता तैयार करती ,रम्या के लिये भी चाय नाश्ता निकाल कर रखती।बच्चे तो मेरा अक्सर मज़ाक बनाते "मम्मी तो रम्या का नाश्ता चाय पहिले से अलग निकाल कर रखती जैसे भगवान का भोग निकाल कर रख रही हों।

हर सर्दी मे उसे अपना कोई पुराना स्वेटर,एक शाल उसे देती,सर्दियों मे एक जोड़ स्लीपर भी उसे देती ताकि फर्श पर नंगे पैर काम न करे।उसकी बड़ी लड़की जो किसी प्राईवेट स्कूल मे के जी मे पढ़ रही थी।उसकी फीस ,कॉपी किताब का खर्च मै देती,अपनी घर खर्च की,की हुई बचत से।
मेरे पैर मे तेल लगा कर बोली"आँटी आराम करना आप। बुखार ने तो तोड़ कर रख दिया आपको।मै शाम का खाना भी बना दिया करुँगी,जब तक आप अच्छी नही होती,घर के काम मे हाथ मत डालना।मै हूँ न।" "तुझे इतनी चिंता है मेरी"स्नेह से भीग गई मै। आप भी तो मेरा -------"कहकर जाने क्यों चुप हो गई ।फिर मेरा हाथ अपने हाथ मे ले बोली---आप मेरे को केवल काम वाली बाई समझते क्या?"

अथाह ममता उमड़ पड़ी उसपर,मैने कहा--नही रम्या,तू तो मेरी माँ,बहिन ,बेटी ,सहेली सबकुछ है"
अचानक झटके से वो उठ खड़ी हुई,शायद पराये से मिला इतना अपनत्व संभाल नही पायी ।बोली"शाम को आऊंगी,और रोज सुबह इतनीजल्दी आया करुँगी,जब तक आप अच्छी नहीं हो जाती"

राजेश सिंह
(समीक्षक)
अहमदाबाद

लालटेनगंज – हूबहू सच का बयान करती कहानियाँ

देखा जाय तो कहानी वही होती है जिसमें लेखक सिर्फ किरदार का चुनाव करते है, उसके बाद किरदार खुद ही कहानी को आगे बढ़ाते है। लेखक का काम सिर्फ किरदार चुनना होता है बाकी क्या बोलना है कैसे कहना है सब किरदार के ऊपर है ,असली लेखक वही है जो किरदारों के मामले में बहुत कम हस्तक्षेप करता है ,उनको बोलने की आजादी देता है,किरदारों की आजादी को नहीं छीनता है। अब जब किरदार खुद बोलते है तो जाहिर है ,वही बोलेगें जो सच है ,जो समाज में चल रहा है ,अपने दुख-दर्द अपनी खुशी अपना आक्रोश अपने मन जी भड़ास सब ज्यों का त्यों बिना किसी आवरण या फिर लाग-लपेट के कह डालते है। फिर यही लालटेनगंज की कहानियाँ बन जातीं है।स्वयं लेखक अखलाक अहमद ज़ई साहब भी यही फरमाते है -मेरी कहानियाँ समाज की तमाम विद्रूपताओं अथवा मानवीय पक्ष को ज्यों का त्यों बयां कर देती है।पाठक अपने ठंग से उसका निष्कर्ष निकलते रहते है।

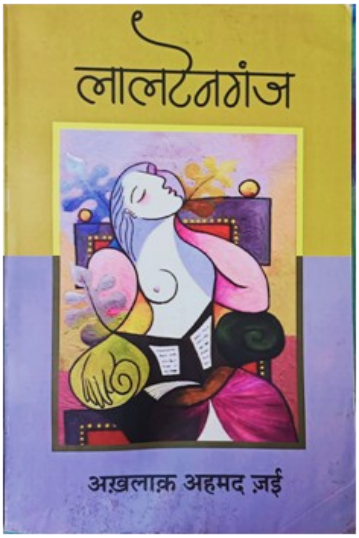

लालटेनगंज की कहानियाँ समाज के उस तबके की कहानियाँ है ,जो कल की नहीं सोचता है ,जो मुँहफट है ,गालियां उनके रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा है, कभी आक्रोश में,कभी बेख्याली में गालियां निकाल ही जाती है । तबके के लोगों को गालियां बोलने और सुनने की आदत है यह उनके दैनिक जीवन में समाई हुई है ,अतः किसी को इन गालियों से फरक नहीं पड़ता है। इन लोगों की चिंता सिर्फ आज को लेकर है ,इन कहानिओं के किरदार बड़े बड़े सपने नहीं पालते,रोजमर्रा के जीवन में ही उलझें रहते है। उनकी अपनी भाषा है जो कहीं कहीं पढ़ने में अश्लील लग सकती है ,पर सच तो यही है कि अगर लेखक उनकी भाषा पर मर्यादा का आवरण डालता तो यह कहानी के पात्रों के साथ अन्याय होता ,बकौल लेखक फिर लेखक पात्रों पर हावी हो जाता, फिर कहानिया अपने तासीर से भटक जाती ।लेखक की खूबसूरती पात्रों के चुनाव में ही नहीं बल्कि कहानी की पृष्ठभूमि में भी साफ साफ झलकती है।

लेखक ने बड़ी ही समझदारी से विशेष तबके कि छोटी छोटी घटनाओं को उनकी रोजमर्रा के जीवन से चुनकर अपनी कहानियों की पृष्ठभूमि बना दिया है । फिर किरदार स्वयं बोलते है और कहानियाँ आगे बढ़ती जाती है । ऐसा लगता है कि सब कुछ सामने घट रहाँ हो,और पाठक उनको घटते हुए सामने देख रहाँ हो । यकीनन पाठक कहानी को दर्शक की भांति अपने सामने घटता हुआ देखता हैं। में लेखक को इस बात की बधाई दूंगा की कहानियों के अंत में हमेशा एक प्रश्नचिन्ह छोड़ देता है ,जो किरदार की मजबूरियों को दर्शातें है ,पाठक के मन को सोचने पर मजबूर करते है ,और सबसे बड़ी बात कहानियों की सार्थकता को सिद्ध करते है।

लालटेनगंज में कुल पंद्रह कहानियाँ है ,बकौल लेखक जो पहले भी प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में छप चुकी है, ज़ई साहब ने उन प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं का नाम सिर्फ इसलिए उजागर नहीं कियाँ है, कि पाठक इन कहानियों को बिना किसी चशमें के पढ़कर उनपर अपनी बेबाक प्रतिक्रियाँ दें । यह ज़ई साहब की साफ़गोई और ईमानदारी को दर्शाता है।

कहानी संग्रह की पहली कहानी **"दरवाजा"** एक ऐसे युवक इदरीस की कहानी है ,जो पुरुष होते हुए भी स्त्रियोचित गुण से बंधा हुआ है । घर, समाज के ताने उसकी पत्नी के सीने में तीर की तरह चुभते है। -"ब्याह कर आने के दूसरे दिन मुंह दिखाई रस्म के बीच में किसी ने ठिठोली की थी – "भाभी ,भैय्या की चाल तुमसे भी अच्छी है।" फिर सभी हंस पड़ी थी । कभी भैय्या के साथ बाजार जाना और पीछे से सीटी की आवाजें आयें तो यह नहीं समझना कि सीटी तुम्हारे लिए बज रहीं हैं। वह सिर्फ भैय्या के लिए बजती है। वह झेंप गई थी। लोगों के मुंह पर ताले कौन लगा सकता था ।"लड़की वाले जानबूझ कर लड़की को कुएँ में धकेल दिए हैं, इस महरमटके के साथ ब्याह कर! मालूम नहीं , इस छक्के में कौन स लाल लगा था

जो भड़ाम से गिर पड़ें।" आगे देखिए- "तुम मर्द हो मर्दों की तरह रहो। औरतों का शौक पालना अच्छा नहीं। " मुझे बचपन से यह सब अच्छा लगता है। लाल साडी ,लाल ब्लाउज ,लिपस्टिक,पावडर ....। ठीक है ,आज हम दोनों समझौता करते है । तुम्हारा जब भी नाचने का मन हो ,तुम मेरी साडी पहनों ,लिपस्टिक लगाओं और खूब नाचो । जी भरकर लेकिन सिर्फ मेरे सामने । बंद कमरें में ।

कहानी संग्रह की दूसरी कहानी **"धारावी"** मुंबई के धारावी इलाके के रहवासियों में से एक परिवार की कहानी बयां करती है। उनकी बोलचाल उनके रोजमर्रा की हंसी ठिठोली(आओ दहिजरिक पुतऊ, अब्बै देइत है पैंट- शर्ट) , झोंपड़पट्टी की रोजमर्रा की किचकिच , की झलक दिखती है इस कहानी में । कहानी अपने अंत में सवाल छोड़ जाती है। - वह लड़कों की चाहत में बच्चे पर बच्चे पैदा करती रहीं पर ऐसे बेटों का क्या फायदा , जिनसे तीन वक्त की रोटी क्या तीन मुट्ठी मिट्टी की भी उम्मीद न रहें। वह अभी से ही अंदर तक टूट गई । अब उसे अपने बेटों से भी कोई उम्मीद न रहीं।

"शिक्षा मंडी में ग्राहक देवता के प्रवेश" कहानी में लेखक ने शिक्षा माफिया द्वारा पैसे कमाने के लिए दिनोंदिन बढ़ते जा रहें स्कूल का एक बेबाक चित्र खीचा है, जहां बच्चों के भविष्य से ज्यादा पैसे कमाने पर जोर है। शिक्षा के व्यवसायीकरण पर करार तंज कसा गया है कहानी में – कैसे अनधिकृत जमीन पर एक स्कूल खोलते है, कैसे बच्चों और उनके माँ बाप को जाल में फसातें है।इस पूरे प्रकरण में शिक्षा को छोड़कर सभी कुछ हो रहा है ,कहीं कहीं मीठा हास्य है इस कहानी में,और अंत में पाटील कहता है-एक बात समझ में नहीं आई भगवान ! इस विद्या के मंदिर में ग्राहक को किधर से घुसा दिया ।

"मेंढकी को जुकाम हो गया" कहानी में लेखक के सामने दृश्य उभरते जाते है और लेखक एक मंजे हुए कमेन्टरेटर की तरह कमेंटरी करता है । बानगी देखिए-और अब मैँ देख रहा हूँ कि बुढ़ियां के हाथ में एक बांस की गोल छड़ी हैं ....और ऐ....हें , एक...दो...तीन! बुढ़ियां ने बगैर पूछे गाछे तीन छड़ी सड़ाक -सड़ाक लड़के को जमा दी हैं। लड़क इस अप्रत्याशित आक्रमण से भौचक्का गया है और खडा भटर-भटर बुढ़ियां का मुंह ताक रहा है। और देखिए— और मैँ देख रहा हूँ लड़के के घिघियाकर रोने का पूरा असर आँगन में बैठी लड़की पर हुआ हैं और वह बर्तन छोड़ कमरे में आ गई है। लड़की अब आगे बढ़ी है और बुढ़िया के करीब पहुँच गई है , बुढ़िया लड़की से कह रही है कि वह यहाँ से हट जाए नहीं तो अभी मारूँगीं ,तुम्हारा भी कपार फट जाएगा । एक और कमेंटरी --और अब मैँ देख रहा हूँ कि एकाएक बुढ़िया का दसपने वाला हाथ वहीं रुक गया है और वह एकटक डोमल के सिसकते चेहरे को ताकने लागी है। और अब बुढ़िया के लड़के का मन हो रहा है कि इस विद्रोह के पहले चरण पर डोमल को शाबाशी से या फिर जोर से ठठाकर हंस पड़े....पर खडा खडा सिर्फ मुस्करा ही रहा है।

"एक सफर" एक ऐसी प्रेम कहानी है ,जो सिर्फ कागजों पर चलती रहती है ,कहानी के किरदार अपनी भावनाएँ दिन के हिसाब से कागजों पर उतारते रहते है। दिसम्बर-8 – समीर कितना तेज और बोल्ड है । सर ने उससे साहित्य में अश्लीलता की परिभाषा पुछकर सोचा था ,उसे बोर कर ले जाएंगें पर उसने भी किताबी भाषा से अलग हटकर जबाब दिया था कि जिस शब्द या वाक्य का इस्तेमाल गैर जिम्मेदाराना ठंग से किया गया हो , वह अश्लील है। दिसम्बर-10 -यह मात्र संयोग है या दुर्भाग्य कि जिस दिन मैंने सोचा कि फलां चीज अर्चना पर अच्छी लगती है, उसी के दूसरे दिन उसने उस चीज को छोड़ दिया । कितनी बार सोचकर गया हूँ कि आज अर्चना से कहूँगा कि अर्चना गुलाबी कुर्ता – पैजामा पहना करो ,तुम पर बहुत अच्छा लगता है! कि अर्चना काजल लगाने पर बहुत अच्छी लगती हो...

"सत्तवर" इस कहानी संग्रह की छठी कहानी है ,जो मेरे हिसाब से लेखक की बेहतरीन कहानी है और पाठक इसे पढ़कर रोमांच महसूस करता है । बकौल लेखक 'इस कहानी ने मुझे कहानीकार के रूप में पहचान दिलाई'। नल पर अच्छी खासी भीड़ थी । उसने नीम पेड़ के तने के पास बाल्टियाँ रख दी ,फिर इधर उधर नजर दौड़ाई । एक..तीन.. सात..दस..बारह! आध-पौन घंटे में उसका नंबर आएगा । उसने सोचा और पास ही बने ताजिया वाले चौक पर बैठ गया। एक काली कलूटी लड़की दो घड़े टाँगे सामने से आते दिखी । चेहरा ऐसा चेहरा नहीं, पर मेकअप तो देखो! उसकी हसीं निकलते निकलते रुक गई! एक नंबर की लडाका है..उस दिन झारझार किसी को गाली दे रही थी।.... "अबे दउड़, तोरे बाल्टियप कूकुर मूत दिहिस"। "अबे लेइजा,घरे मंजवाय ले"। .."हियाँ खडा इस्टोरी सुनिहैं सरऊ ,तौ बाल्टिप कूकुर न मूती , कहूँ मनई मूतिहैं । किसी ने कहा तो फिर सब हंसने लगे । ..भउजी आज तौ बड़ा लंबा बिलाउज पहिर के आई हौ "। .. "का देखैके मन रहा"? आदमी ने बढ़कर उसके कान में कुछ कहा फिर हँसता हुआ छटककर दूर खड़ा हो गया।.... बुढ़िया ने लड़की को खींचकर भरी बाल्टी पर पटक दिया। लड़की जमीन पर गिरकर चमगादड़ की तरह लटक गई । "हरामिन , आवारा ,रंडी । फलवनक के साथे भागी जात रही तब पकड़ी गई .."। "छुतहेर, पहिले आपन देख आपन ..लड़की चिल्लाई।

"कोंडीबा का सच" कहानी सच में सच बयान करती है कि गरीबों को सपने देखने का हक नहीं है । और लाटरी से जगी उमींद कैसे धरासाई होकर दारू की बोतल में घुल जाती है। ....उसे रह-रहकर हरणा पर गुस्सा आ रहा था । उसी की वजह से वह लखपति बनते-बनते रह गया। आज वह घर में था तो समझो दस हजार का इनाम मिल गया । ....कोंडीबा मुस्कराया – साले लिंबाजी को अब बताऊँगा । उस दिन अड्डे पे भोत अकड़ रहा था । अढ़ाई रुपये मांगा तो गाँ..कित्ता बोलबचन सुनाया,.. मेरे अड्डे पे आएगा उधारी मांगने फिर बताता हूँ! उसकी पिछाडी पर

जोर से लात मारूँगा। .... उसने तय किया की वह अपनी बेटी की शादी में धमाल मचा डालेगा । बरातियों और बिरादरी वालों को दारू से नहला देगा।..... साखरा बाई ने ढक्कन के अंदर देखा । उसमें नौ सौ चौरासी लिखा था । "क्या रे नंबर बरोबर याद है"? " हाँ बाई बरोबर, फोर ट्वंटी...उसने फिर कोंडीबा को देखा – 'इस दस हजार को लेकर दस हजार तो सपने देख डाले होंगें इसने'। ..... साखरा बाई ने ढक्कन गिलास में डाल दिया। "ले दारू के साथ दस हजार भी घोलकर पी और मूतकर भूल जा "।

"दहलीज" कहानी एक औरत मंतशा के मानसिक जद्दोजहद की कहानी है ,खुद के लिए जीने और खुद को तलाशने की कहानी है । मंतशा अजमल से शादी करके खुश तो है पर उसका वजूद कहीं गुम हो गया है। अपने आपको खोजने अपने तरीके से जीने की ख्वाहिस में मंतशा जमाल के दोस्त आसिफ से निकाह करती है । इसके लिए अजमल ही दोनों पर जोर डालता है उसका कहना है जब मंतशा आसिफ से मुहब्बत करती है उससे नहीं , तो उसे दोराहे पर क्यूँ खड़ा रखें ।अजमल अपनी बीबी मंतशा की मुहब्बत की खातिर अपनी हसरतों को कुर्बान कर देता है। ..... "आसिफ तुम मंतशा से शादी करोगे "?अजमल ने किसी को कुछ कहने या सोचने की भी मोहलत न दी।..... "मंतशा तुम तो जानती हो कि अपनी फर्ज अदायगी में मैंने कभी कोई कोताही या कटौती नहीं की ,इसके बावजूद तुम्हारी खुदगरजी की खातिर इन दिनों मैँ दल्ले की हैसियत से जिया हूँ । कोई भी गैरतमंद शौहर अपनी बीबी के साथ गैर मर्द को हमबिस्तर होने नहीं देगा लेकिन मैंने अपनी जमीन के बरखेलाफ़ तुम्हारी खुशी की खातिर यह मौका भी फरहम कराया ।

"तीसरा रास्ता" कहानी में लेखक ने कोर्ट कचहरी का एक चित्र खींचा है । आँखों के सामने कचहरी चलचित्र की तरह चलने लगती है। वो टाइपराइटेर की खटर पटर वो मुंशी जी और चाय पीने के लिए दुकान पर आते जाते लोग ,काले कोट और सफेद शर्ट वालों की आवाजाही सबकुछ आँखों के सामने नुमायाँ होने लगता है। ..... इंसानियत एक ऐसी चीज है जिसके सामने नाते-रिश्ते ,समाज कानून,कुछ भी नहीं टिक पाते । सब बौने हो जाते है। लेकिन जिसमें इंसानियत की मात्र कम होती है ,वह न सच के साथ रहते हैं न झूठ के । वह अपना एक तीसरा रास्ता चुनते हैं । ..... जहां तक लड़की का सवाल है तो तुम अभी बेटी के बाप नहीं बने हो। लेकिन मुझसे पूछो लड़की का बाप होना क्या होता है । लड़कियों का बढ़ना सरकारी आदेश या माँ-बाप की हैसियत पर निर्भर नहीं करता हैं। ..... "इसमें तुम्हारी बेटी कहाँ से आ गई "? दीनू ने आश्चर्य से पूछा । राजेश दीनू की तरफ देखकर धीरे से मुस्कराया । "पीछे घूमकर देखो ,क्या तुम्हें नहीं लगता कि यह मेरा तीसरा रास्ता था?"

"लालटेनगंज" कहानी एक ऐसे घर की कहानी है ,जहां पहले मुँदारा नामक लड़की रहा करती थी अब तो नहीं रहती पर उससे मिलने उसके आशिक लोग आते रहते है और इस चक्कर में बुग्गन से मार खाते रहते है। लेकिन इस बार तो बाहर वालों के चक्कर में घर के खालू की ही पिटाई हो गई है । ..... "भइया हम बिल्कुल नाई पहिचान पाएन । तूहार आवजियय मालूम नाई कउन मेर रहा।".....सुअरचों... फसाएँ के चली गई । " बुग्गन बोली तो नरगिस मुहँ में पल्लू लगाकर हंस पड़ी भाभी-भाभी ,अम्मा काहे रोवत हीं ?"... कल रतियम दुसरेक धोखेम तूहरे खालू कहियाँ चैइलै-चइला मारिन है। यहिस रोवत होईहैं । "...

एक दिन एक लंबा – तगड़ा आदमी सिर पर गमछा लपेटे , कंधे पर अपने ही साइज़ की लाठी रखें ,लाठी में एक पोटली टांगें ऊपर चढ आया। सफ्फू ने बुग्गन को आवाज दी – "अम्मा देखव यह आए हैं।"..."कइसै?"... "मिलय आए हन ।" उसने बड़ी मुलायमियत से कहाँ । "दहिजरिक पुतऊ। हियाँ तुहार अम्मा रहत हीं जऊन मिलय आए हौ ?" झाड़ूँ फिरै अइसन घर पा । " दुई साल घर बंद रख कै केरावा भरे हन तब्भौ ऊ छुतहेर के परछाहीं से अभी तक पीछा नाई छूटा।"..... अब्बा के दोस्त ने टोका था। "एहका कहाँ लिहे जात हौ।अब्बा ने उसकी तरफ देखा था फिर वापस आकर मेले में दुकान पर उसे बिठाकर चाले गए थे।..... अम्मा-अम्मा ,वही लालटेनगंज जहां.....?..... "नासपीटे ....!तूहरेन कारन ई सब भवा है। का जरूरत रहीं जलऊनी लकड़ी सीढ़ी के पास रखैक?..... तुहरे अब्बा नामव ना जानत होईहैं अऊर तू आए हौ लालटेनगंज कै पता पूछै ।"

"न जमीं मेरी, न आसमां मेरा" कहानी पैसे कमाने की लालच में खड़ी देशों में गए लोगों की वास्तविकता को कहती है। अमान यहाँ खाड़ी देश में परेशान है ,वहाँ उसके अब्बा हिंदुस्तान में अपने बेटे की जानिब तमाम सपने पाल रखें है । ..... "क्या सोचा तुमने ?" बाबूभाई ने पूछा ..... "सोचना क्या है ?" वीजा खत्म होने का इंतजार करेंगे ।"... वैसे दो रास्ते है यहाँ से निकलने के।".... "भाई ,आप लोग हिंदुस्तान के हो ?"... पास में एक 35-40 साल की औरत खड़ी ,उन दोनों से मुखातिब थी । .... हाँ .. ,भाई मेरी कुछ मदद करो ,"मै यहाँ आकर बहुत बुरे फंस गई हूँ। मैँ हिंदुस्तान वापस जाना चाहती हूँ। "आप मुझसे क्या चाहती हैं?"बाबू भाई ने पूछा। सिर्फ मेरा पासपोर्ट मिल जाए तो मैँ कैसे भी चली जाऊँगी । "कितने साल से है आप इधर ?" तीन साल हो रहा है । काम क्या कर रहीं हैं?" घर का सारा काम करती हूँ। "कफील छुट्टी नहीं दे रहा है?" "आप इंडियन एम्बेसी जाकर बोलेंगी तो वह आपको हिंदुस्तान भिजवा देंगें। .... कफील पैसा नहीं दे रहा है?' अमान ने पूछा । "पैसा वगैरह की कोई तकलीफ नहीं है ।" "फिर ... ?दोनों आँखों में सवालियाँ निशान लिए उसको देखने लगे।..... "मैँ जिस कफील के पास हूँ .... वे बाप-बेटे .... जब दिल होता है,बिस्तर पर खींच लेते हैं ।

"पंजों के निशान" कहानी भीड़ की हकीकत को बयान करती है । भीड़ में फसी लड़की पर कैसे भीड़ के हाथ

फिसलकर लड़की का जुगराफिया नापते है। लड़की के बदन को कैसे जकड़कर अपने गंदे निशान छोड़ते है। यही जब हम करते है तो चटकारे लेकर सुनाते है , जब हमारे घर के ऊपर आती है तब समझ आता है कि यह कितना तकलीफदेह और गंदा है । ..... ऊ हरामी हमार छाती पकरिस तब हम मारेन।"उसने बड़ी मुस्किल से कहाँ फिर रोने लगी।..... पवन मुझसे शायद कुछ कहने आ रही थी पर बिना कुछ कहे जल्दी जल्दी बगल से होते हुए कमरे में जाने लगी। दिल में आया ,बढ़कर पकड़ लूँ झकझोरूँ .... बता ,कल तेरे साथ क्या हुआ था ? किसी ने ..... ?

"कटीलें तारों का प्रेम आलाप" एक सरहद पार लड़की उन्ना की प्रेम कहानी है, जिसका प्रेम हिंदुस्तान और पाकिस्तान की सियासत में फसकर तबाह हो जाता है । पाकिस्तानी उन्ना और हिन्दुस्तानी फैजान का प्रेम परवान होने से पहले ही सियासत की भेंट चढ जाता है। उन्ना हिंदुस्तान में आकार देखती है यहाँ तो सब कुछ वैसा ही है उसी तरह के लोग ,वैसी ही गलियां सड़कें ,मकान इत्यादि ,कुछ भी फरक नहीं है ,तो फिर फिज़ाओं में जहर कौन घोल रहा है।..... उसके कानों में फैजान के लफ़्ज़ फिर गूँजें – "उन्ना ,मुझसे शादी करोगी ?" उसने पूरे कागज पर एक बड़ा सा 'हाँ' लिख दिया । वह कागज से भी बड़ा हाँ लिखना चाहती थी। ..... बेटा पुलिस आई है कुछ पूछना चाहती है ।" "एक हाँ की इतनी बड़ी सजा अब्बू?"

कहानीकार की पकड़ स्थानीय भाषा पर गहरी है यह लालटेनगंज की कहानियों को पढ़ने से जाहिर हो जाता है। लेखक ने किरदारों से वही शब्द कहलवाए है जो वहाँ की आम जन की भाषा है या यूं कहें बोलचाल की भाषा है । यही बेबाक आम भाषा का प्रयोग कहानी को न सिर्फ जीवंत बनाए रखता है ,बल्कि उन्हीं शब्दों की वजह से कहानी में वजन भी पैदा होता है। यह संग्रह उन्हें अवश्य ही पढ़ना चाहिए जो सच को बिना चांदी के वर्क में लिपटे हुए देखना चाहते है। जो खाटी देशी भाषा को समझते है , और सबसे बड़ी बात जो कहानी के शौकीन है।

पुस्तक का नाम- ललटेनगंज (कहानी संग्रह)
लेखक -अखलाक अहमद ज़ई (9323114334)
प्रकाशक-शुभदा बुक्स ,शाहिबाबाद (8851578398)
मूल्य-290/-

वाई.वेद प्रकाश
द्वारा विद्या रमण फाउंडेशन
121, शंकर नगर, मुराई बाग,डलमऊ, रायबरेली
उत्तर प्रदेश

गज़ल

भीतर-भीतर डर बैठे हैं।
इसीलिए सब घर बैठे हैं

कोई किससे पूछे आखिर,
कितने तो बेघर बैठे हैं।

क्या देखें क्या सुनें कहें क्या
गांधी के बंदर बैठे हैं।

हाहाकार मचा दे जो,
बारूदी सब स्वर बैठे हैं।

सारे जग का खारापन,
पिये समन्दर सब बैठे हैं।

बाहर कितना शोर उठे
चुप होकर अंदर बैठे हैं।

रहीमदास जी के दोहे

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करी सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापे नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

वृक्ष कबहूँ नहीं फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर।।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोइए, टूटे मुक्ता हार।।

खीरा सिर ते काटि के, मलियत लौंन लगाय।
रहिमन करुए मुखन को, चाहिए यही सजाय।।

प्रिया देवांगन "प्रियू"
राजिम
जिला – गरियाबंद
छत्तीसगढ़

इस बार की दीवाली

नरेश कक्षा आठवीं का छात्र था। उसकी दो बहनें थीं- जयंती और नंदनी। वह सबसे छोटा था। माँ-बाप खेती -किसानी करते थे। अल्प वर्षा के कारण इस साल फसल अच्छी नहीं थी। वैसे भी घर की आर्थिक स्थिति पहले से खराब थी। जैसे भी हो, बस गुजर-बसर हो रहा था।

दीपावली का त्यौहार आया। दीपावली की पूरी तैयारी हो गयी थी। नरेश के बाबूजी रघु बच्चों के लिए नये कपड़े नहीं ले पाये थे। नरेश सबसे छोटा था। इसलिए सब के आँखों का तारा था। इस बात का नरेश घर में पूरा - पूरा फायदा उठाता था। दीपावली की तैयारी में ही बहुत से पैसे खर्च हो चुके थे। नये कपड़े के लिए सोचना पड़ रहा था। रघु और उसकी पत्नी गीता मन ही मन सोच रहे थे कि थोड़ा सा घर में धान रखा है; मंडी ले जाते हैं, वो बिक जाये तो बच्चों के लिये कपड़े भी आ जायेंगे। रघु मंडी की तरफ गया और नरेश खेलने के लिए अपने दोस्त विनय के घर चला गया। विनय ने नरेश को अपना नया कपड़ा, फुलझड़ी, और बहुत सारे पटाखे दिखाते हुए पूछा - "तुमने कौन - कौन से पटाखे खरीदे हैं ? नरेश , चलो न तुम्हारे घर , मुझे तुम्हारे भी नये कपड़े और पटाखे देखने है।" नरेश झट से बोला - "आज शाम को मेरे बाबू जी नये कपड़े और पटाखे लायेंगे फिर तुम्हें दिखाऊँगा।" विनय बोला- "ठीक है भाई, इस बार दोनों साथ में मिलकर दीपावली मनायेंगे।"

नरेश को पता था कि घर की हालत अच्छी नहीं है। फिर भी रघु के पास गया और बोला- "बाबू, मुझे नये कपड़े चाहिये, विनय के पापा उसके लिए कपड़े और पटाखे भी ले आये हैं।" रघु नरेश की तरफ टुकुर-टुकुर देखने लगा। उसकी बहनें भी देखने लगीं , क्योंकि नरेश अलबेला भी था। वह मुँह बनाते हुए कह रहा था। जयंती और नंदनी दोनों बहनें घर की हालत समझती थीं। नंदनी को दीपावली के पहले ही खेल प्रतियोगिता में दो हजार रुपये मिले थे। नंदनी अपनी कॉपी में यह सोचकर दबा कर रखी थी कि दीपावली में नये कपड़े खरीदने के काम आएँगे। आज जब कॉपी ढूँढने लगी, तो वह कॉपी ही नहीं मिल रही थी। वह थोड़ी परेशान हो गयी थी। नरेश पूरे गांँव में घूम-घूम कर खेलता था। खेलते - खेलते अचानक देखा कि एक बुढ़िया बाजार में दीये बेचते-बेचते बेहोश हो गयी। नरेश, विनय और कुछ साथी उस बुढ़िया के पास गये और आवाज लगाई - "दाई , ओ दाई। फिर विनय ने बुढ़िया के मुँह पर पानी छिड़का। तब जाकर उसका होश आया। बच्चे खुश हो गये। नरेश दूसरों की मदद के लिए हमेशा आगे आ जाता था। सभी बच्चे बोले कि अब दाई को होश आ गया। चलो घर तरफ चलते हैं। नरेश कुछ समय चुप रहा, फिर बोला- "तुम लोग जाओ, मैं आता हूँ।"

विनय बोला- "क्यों...अब क्या हुआ ?"

नरेश ने कहा - मुझे उस दाई की मदद करनी है। चलो हम सब बैठकर दीये बेचते हैं।" सभी दोस्त हँसने लगे। उसकी खिल्ली उड़ाने लगे- "अरे नरेश, तू पागल हो गया है क्या ऐसे बाजार में बैठ कर हम दीये बेचेंगे। ना बाबा ना। मेरे घर वाले मुझे देखेंगे तो मेरा धनिया बो देंगे। मैं जा रहा हूँ।" कहते हुए विनय वहाँ से चला गया।

नरेश बुढ़िया के पास बैठ गया, और उसकी मदद करने लगा। सारे दीये बहुत ही जल्दी बिक गये। नरेश जा ही रहा था कि बूढ़िया ने नरेश का हाथ पकड़ा। बोली- "बेटा अपनी मेहनत की कमाई ले जा।"

नरेश- "नहीं.....नहीं....माँ जी। मैं नहीं ले जा सकता।" बुढ़िया बोली- "घर में सिर्फ मैं बस रहती हूँ। मुझे इतने पैसे की जरूरत नहीं है बेटा। दीपावली का त्यौहार है। अपनी डोकरी दाई का ही आशीर्वाद समझ कर ले लो।" नरेश के मन में लड्डू फूटा। फिर उसे पाँच सौ रुपये मिल गये। नरेश फूला नहीं समा रहा था। नरेश और रघु दोनों एक साथ ही घर पहुँचे। दोनों के चेहरे में अनोखी मुस्कान थी। नरेश की माँ पूछ बैठी कि क्या बात है भाई, बाप-बेटे के चेहरे में इतनी खुशी है। बाजार में खजाना मिल गया क्या ..?" नरेश ने सभी को आपबीती सुनाई। रघु ने भी धान की बिक्री वाली बात बताई। सब बड़े खुश हुए, लेकिन नंदनी अभी भी परेशान थी। नरेश ने पूछा- "क्या हुआ दीदी, क्यों परेशान हो ?" नंदनी बोली- "मेरी नीले रंग की कॉपी नहीं मिल रही है।" नरेश बोला- "ओ ....! इतनी सी बात में परेशान हो रही हो। वो तो आलमारी में है।" नंदनी झट से बोली- दिखा, दिखा कहाँ है?" नरेश बोला- "इतना क्यों कूद रहे हो? मैं देख रहा हूँ, इसमें क्या है ?" फिर बोला- "दीदी, ये कॉपी में तो कुछ नहीं है। बिल्कुल खाली है।" नरेश की बातें सुनकर नंदनी के पैरों तले जमीन खिसक गयी। लेकिन नरेश मुँडी गड़िया कर दाँत दिखा रहा था, तो सब समझ गए कि नरेश मजाक कर रहा है। रघु ,नरेश और नंदनी तीनों ने अपने-अपने पैसे इकट्ठे किये। रघु के घर बूँद-बूँद में घड़ा भर ही गया। नए कपड़े, पटाखे, मिठाई व अन्य जरूरत के सामान खरीदे गये। खुशी-खुशी दीपावली मनाई गयी।

टीप : *छत्तीसगढ़ी शब्द व मुहावरे का प्रयोग।*

धनिया बोना - भड़क जाना, डाँटना।

दाई - माँ।

डोकरी दाई - दादी।

मुँडी गड़ियाना - सिर नीचे करना।

दाँत दिखाना - जोर-जोर से हँसना।

डॉ० कुसुम रानी नैथानी

बाल-कहानी

नट्टू सुधर गया

नट्टू बंदर बहुत शरारती और बड़बोला था। वह दिन भर इधर-उधर घूम कर वन्यजीवों से अपनी बड़ाई करता फिरता और उन्हें झूठे किस्से सुनाता ।एक दिन शाम के समय बरगद के पेड़ के नीचे बहुत सारे वन्य जीव इकट्ठे थे। कपटू भालू बोला-" आजकल क्या कर रहे हो नट्टू ? "" तुम जानते हो मैंने कभी काम नही किया और भविष्य मे कभी करूंगा भी नही। वनवासी मेरी सलाह लेते हैं। उसी से मेरी अच्छी खासी कमाई हो जाती है। मुझे काम करने की क्या जरूरत है ?" " तुम ठीक कहते हो। तुम बहुत बुद्धिमान हो और अपनी अक्ल की वजह से गुजारा चला लेते हो। हम तो मेहनत के बदौलत ही खाने की व्यवस्था करते हैं।" चंटू हिरन बोला।" मेरे आगे वन के शक्तिशाली जीव भी मुंह खोलने की हिम्मत नहीं करते।" " यह क्या कह रहे हो नट्टू ?"" मैं ठीक कह रहा हूं चंटू। मेरे सामने रियो तेंदुआ , लंपू बाघ भी कुछ नहीं है। वे मेरे मुंह नहीं लगते।""तुम्हें इतनी बड़ी बात नहीं बोलनी चाहिए नट्टू। वे हमारे वन की शान हैं। उनके कारण घुसपैठियों की हिम्मत इस वन की ओर आने की नही हो पाती। हम सबको उनकी इज्जत करनी चाहिए।"

" सच बोलने मे संकोच कैसा ? तुम चाहो तो उनसे पूछ सकते हो। वे मेरी अक्ल के सामने टिक नहीं सकते। मैं किसी को अपने सामने कुछ नहीं समझता।" नट्टू बोला और रियो और लंपू को लेकर बातें बनाते हुए अपनी तारीफ करने लगा ।बंकू लोमड़ी बहुत चुगलखोर थी। उसने यह बात रियो तेंदुए तक पहुंचा दी ।"नट्टू बंदर बहुत घमंडी है। वह तुम्हारे खिलाफ ऊटपटांग बातें बनाता रहता है।"

इतना कहकर उसने नमक मिर्च लगाकर नट्टू की कही बातें उसे बता दी। यह सुनकर रियो का खून खौल गया। उसने सोच लिया था वह वक्त आने पर नट्टू को सबक सिखाकर रहेगा। नट्टू जहां भी जाता अपनी तारीफ करता रहता और रियो , लंपू और अन्य शक्तिशाली जीवों के विषय में दुष्प्रचार करता ।एक दिन सुबह के समय रियो भोजन की तलाश मे वन मे घूम रहा था। तभी अचानक मैदान के बीच में खड़े नीम के पेड़ पर बैठे नट्टू बंदर पर उसकी नजर पड़ी। उसने सोच लिया आज वह इसकी अच्छी खबर लेगा जिससे वह हमेशा के लिए बकवास करना छोड़ देगा।

वह चुपचाप दबे पांव पेड़ पर चढ़ गया। उसके चढ़ने से पेड़ हिला तो नट्टू ने मुड़कर देखा। सामने रियो को देखकर उसकी जान सूख गई। वह कभी सोच भी नहीं सकता था कि रियो उसके पीछे पेड़ पर चढ़ जाएगा। खुली जगह पर उसके लिए भागना संभव नहीं था और अगल-बगल कोई दूसरा पेड़ भी नहीं था जिस पर छलांग लगाकर वह यहां से दूर जा सके। जिस पेड़ की डाल पर वह बैठा था रियो भी उसके पीछे-पीछे वहीं पहुंच गया। वह बोला-" नट्टू यहां अकेले बैठे क्या कर रहे हो ?" "मैं पेड़ पर बैठकर अपने दोस्त का इंतजार कर रहा हूं।"" मैं भी तुम्हारा दोस्त हूं। चलो साथ बैठकर बातें करते हैं।" रियो बोला।

वह धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ रहा था। उसे पास आते देख कर नट्टू सरकते सरकते डाल के अंतिम छोर तक आ गया था। उसने सोचा भारी भरकम तेंदुआ यहां तक नहीं आ पाएगा। रियो ने भी ठान लिया था कि आज आर पार की लड़ाई लड़नी है या तो नट्टू रहेगा या फिर वह रहेगा। नट्टू को कुछ नहीं सूझ रहा था। उसने रियो से पीछा छुड़ाने के लिए मैदान मे छलांग लगा दी। उसके पीछे रियो भी नीचे कूद गया।

अब मैदान में दोनों आमने सामने खड़े थे। नट्टू की उसे देखकर जान सूख रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था अब वह क्या करे ? आगे वह भाग नहीं सकता था और मुड़ने पर रियो कभी भी छलांग लगाकर उसे दबोच सकता था। दोनों एक दूसरे से कुछ कदम दूर आमने सामने खड़े थे। रियो बोला-"कहो नट्टू कैसा लग रहा है ?"" ऐसी हालत में कैसा लग सकता है ? तुम्हें देखकर मेरी जान सूख रही है।""सुना है तुम वनवासियों के सामने मेरे विषय में उल्टी सीधी बातें करते रहते हुए शेखी बघारते हो।""जरूर किसी ने मेरे खिलाफ तुम्हारे कान भरे हैं। ऐसी कोई बात नहीं है। मैं तो सबकी तारीफ करता हूं।"नट्टू डरते डरते बोला। " आज के बाद न तुम रहोगे और न तुम्हारी फालतू बातें।" रियो बोला और उसकी ओर बढ़ने लगा।

नट्टू ने जान बचाने के लिए झट से मैदान में पड़ी मिट्टी मुट्ठी में भरी और रियो के मुंह पर दे मारी। वह सीधे उसकी आंखों मे पड़ी और उसकी आंखें बंद हो गई। इतनी देर में नट्टू वहां से भाग गया। कुछ देर तक उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। आंखों में मिट्टी पड़ जाने से उनमें दर्द हो रहा था। कुछ देर तक वह वही खड़ा होकर आंखें मलता रहा।

थोड़ी देर बाद आंखों की जलन कम होने के बाद वह घर की ओर चल दिया। उस दिन के बाद से नट्टू और भी ज्यादा शेखी बघारने लगा कि उसने रियो को आमने सामने के मुकाबले मे परास्त कर दिया। यह सुनकर रियो का गुस्सा सातवें आसमान पर था। उसे समझ नहीं आ रहा था नट्टू का क्या किया जाए ? वह बहुत परेशान हो गया था। यह देखकर नट्टू को बड़ा मज़ा आता। रियो को परेशान

देखकर विक्की कछुआ बोला-" बुरा न मानो तो एक बात कहूं रियो ?"" कहो काका ।"" कुछ दिन से तुम बहुत परेशान हो । लगता है यह सब नट्टू की हरकतों की वजह से हो रहा है ।"" आपने ठीक पहचाना । वह बहुत धूर्त बंदर है। सबसे मेरे बारे मे दुष्प्रचार करता रहता है । मैं उसे सबक सिखाकर रहूंगा ।""अच्छा होगा तुम उसके बारे में सोचना छोड़ दो । वह कुछ दिन पहले तुम्हारे साथ हुई घटना सबको बढ़ा चढ़ाकर सुना रहा है । मेरा मानना है कि तुमजैसे ताकतवर प्राणी को एक बंदर के मुंह नहीं लगना चाहिए और उसे ज्यादा तवज्जो नहीं देनी चाहिए ।""आप ठीक कहते हैं । मुझसे गलती हो गई । आइंदा मैं इस बात का ध्यान रखूंगा ।"उस दिन से रियो ने नट्टू की बातों पर ध्यान देना छोड़ दिया और मजे से अपने काम करने लगा । रियो चुगली लगाने वालों को डपट देता और उनकी बातें न सुनता । यह बात नट्टू तक भी पहुंच गई थी । उसे बुरा लगा कि वह उसकी बातों पर कोई ध्यान ही नहीं देता । अब वनवासी भी रियो की देखा देखी उसकी बातों को गंभीरता से नहीं लेते । यह देखकर नट्टू बंदर को अपनी असलियत पता लग गई । उसने शेखी बघारना छोड़ दिया और यह जगह छोड़कर वहां से दूर चला गया । अब रियो को उससे कोई शिकायत नहीं थी ।

आस-पास

सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग में शामिल हुआ पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव का ब्लॉग 'डाकिया डाक लाया'

पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव का ब्लॉग वर्ष 2015 से लगातार सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग में शामिल

हिंदी साहित्य और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में अग्रणी नाम है पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव का

देश-विदेश में तमाम सम्मानों से विभूषित हैं पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

देश-विदेश में हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार और इंटरनेट के माध्यम से हिंदी साहित्य व लेखन क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना चुके वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव के ब्लॉग 'डाकिया डाक लाया' को वर्ष 2022 के सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग सूची में शामिल किया गया है। 'इंडियन टॉप ब्लॉग्स' नामक सर्वे एजेंसी द्वारा वर्ष 2011 से प्रतिवर्ष दुनिया भर में हिंदी भाषा में उत्कृष्ट और नियमित लेखन करने वाले सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग की एक सूची बनाई जाती है। श्री कृष्ण कुमार यादव का उक्त ब्लॉग वर्ष 2015 से नियमित रूप से हिंदी के सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग की सूची में शामिल हो रहा है। वर्ष 2022 में विश्व भर के कुल 100 हिंदी ब्लॉगों को सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग के रूप में चयनित किया गया है। सौ से ज्यादा देशों में देखे-पढ़े जाने वाले 'डाकिया डाक लाया' (http://dakbabu.blogspot.com/) पर अब तक 1350 पोस्ट प्रकाशित हैं, जिसे 7 लाख से ज्यादा लोगों ने पढ़ा है। वर्ष 2008 से ब्लॉगिंग में सक्रिय एवम 'दशक के श्रेष्ठ हिंदी ब्लॉगर दम्पति' और सार्क देशों के सर्वोच्च 'परिकल्पना ब्लॉगिंग सार्क शिखर सम्मान' से सम्मानित श्री कृष्ण कुमार यादव हिंदी ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया के क्षेत्र में अग्रणी नाम हैं। 'डाकिया डाक लाया' ब्लॉग अपनी विभिन्न पोस्ट के माध्यम से डाक सेवाओं की व्यापकता, विविधता और आधुनिक दौर में उनमें हो रहे तमाम बदलावों को रेखांकित करता है। इसके माध्यम से डाक सेवाओं से सम्बंधित तमाम छुए-अनछुए पहलुओं को सामने लाने का प्रयास भी किया गया है।

भारतीय डाक सेवा के 2001 बैच के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी होने के साथ-साथ साहित्य और लेखन में भी सक्रिय पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव की अब तक 7 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं- 'अभिलाषा' (काव्य-संग्रह), 'अभिव्यक्तियों के बहाने' व 'अनुभूतियाँ और विमर्श' (निबंध-संग्रह), इण्डिया पोस्ट : 150 ग्लोरियस इयर्ज़, 'क्रांति-यज्ञ : 1857-1947 की गाथा', 'जंगल में क्रिकेट' (बाल-गीत संग्रह) और '16 आने 16 लोग' (निबंध-संग्रह)। विभागीय दायित्वों और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्रम में अब तक आप लंदन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, दक्षिण कोरिया, भूटान, श्रीलंका, नेपाल जैसे देशों की यात्रा कर चुके हैं। 'शब्द सृजन की ओर' और 'डाकिया डाक लाया' आपके चर्चित ब्लॉग हैं। नेपाल, भूटान और श्रीलंका सहित तमाम देशों में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन में आप सम्मानित हो चुके हैं। देश के विभिन्न भागों- सूरत (गुजरात), कानपुर, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, प्रयागराज, जोधपुर, लखनऊ में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य करने के उपरांत सम्प्रति वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल पद पर कार्यरत हैं।

तेजसी सिंह
कक्षा -X
शांतिएसियाटिक स्कूल
अहमदाबाद

एक दिन हुआ यों....

एक दिन हुआ यों
आधी रात को
किसी ने दरवाजा खटखटाया
मैं बिस्तर से ही बड़बड़ाया
कौन है बे !
जो— इतनी रात को नींद खराब कर रहा है
न खुद सो रहा है
न मन्ने सोने दे रहा है ...

दरवाजे पर
साक्षात यमराज खड़े थे
देखा तो मुझसे दस गुना बड़े थे
हमारे पसीने छूटने लगे
एक के बाद एक
हनुमान चालीसा के दोहे
अपनेआप मुंह से फूटने लगे

यमराज बोले—
बधाई हो वत्स!
तेरा समय आ गया— लेट्स गो
पहले मै हड़बड़ाया
फिर डरते-डरते पूछा
प्रभु इतनी जल्दी भी क्या है
ध्यान से देखिए मेरी उम्र ही क्या है
पढ़ लिखकर लाखों करोड़ों कमाऊँगा

जान बख्श दीजिए
यमलोक में आपके लिए भी डुप्लेक्स बनवाऊँगा

श्रीमान यमराज जी!
आपको इतना भी भान है
छह महीने बाद ही मेरा दसवीं के इम्तिहान है
रात रात जागकर
अल्फा-गामा -बीटा याद किया है
दो दिन पहले ही
CBSC रजिस्ट्रेशन का 1800 बर्बाद किया है

सच कहूँ तो गुरू
अभी मरने की भी फुर्सत नहीं है
वर्क से ज्यादा तो होमवर्क है
20-40,80-80 के चक्कर में
अपना तो बेड़ा गर्क है

मेरी माने तो आप भी चलिए
स्कूल में हास्य कवि सम्मेलन का आनंद लीजिए
यमदूतों के साथ ठहाके लगाइये
और मेरी कविता पर वाह वाह लुटाइये

स्कूल का नाम सुनते ही

यमदूत उल्टे पैर दफा हो गये
पता नहीं क्यों
यमराज जी बेबात में खफा हो गए
बोले— स्कूल में इतिहास है भूगोल है
और पढ़ाई में अपना ऊपर वाला माला गोल है

यमराज बोले— बाते मत बनाओ
चलो बेटा
तुम्हारा टेक आफ का समय हो गया
लेट्स गो.....

नहीं जाना...
नहीं जाना हम चिल्ला रहे थे
और यमराजजी
हमारे पैर घसीटे लिये जा रहे थे

आंख खुली तो
पत्ते की तरह कांप रहे थे
सपना था
फिर भी हनुमान चालीसा जाप रहे थे

यमराज के चँगुल से तो बच गया
पर देखो
स्कूल में आकर फँस गया

क्या कहूँ
बस आप ये समझ लीजिए
आसमान से टपके
और खजूर में अटके ...।

चिठी-पत्री

आज 'मानवी त्रैमासिक-ई पत्रिका' का तीसरा अंक मेरे मोबाइल स्क्रीन पर चमक रहा था। और, इसलिए नहीं कि इस पत्रिका में मेरी भी रचना हैं... बल्कि, इसलिए कि जब मन में किसी चीज़ को अमली जामा पहना कर सहेजते है और वो उसके बहुत ही क़रीब प्राप्त हो तो चमकना सहज ही हैं, वो ख़ुद ब ख़ुद आँखों में उतर आती है।

ठीक ऐसा ही मिला मुझे! संपादक और प्रधान संपादक की कलम से तो अधिकांश हम वाकिफ हैं... 'राजेश सिंह' और 'कविता सिंह' जी को धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' का रंग पत्रिका को खोलते ही मिला। और, फ़िर 'हिन्दी का महोत्सव'... 'सुरेखा शर्मा' जी को पढ़ते हुए हिंदीभाषी होने के कारण स्वाभिमान से स्वत: ही जुड़ाव हो जाता है। उसके बाद, अगले ही पृष्ठ पर 'डॉ. अरुण तिवारी गोपाल' जी को पढ़ा... इनका आलेख मुझे बहुत बहुत पसन्द आया। पुरुष और स्त्री के कई परतों में कई साहित्यकारों को आप पढ़ सकेंगे... 'मृदुला गर्ग' की विवाह संस्था से लेकर पश्चिमी मार्क्स के विचार और भी महान विभूतियों के विचार... इसे ज़रूर पढ़ना चाहिए। और, अगर जानना चाहते हैं प्रसिद्ध साहित्यकार 'शैलेंद्र चौहान' जी को तो उनकी 'यायावरी'... घुम्मकड़ी, भटकन, धड़कन और सृजन कमाल के हैं... बोले तो कंप्लीट पैकेज! हां... हां... साथ में, 'रश्मि तिवारी' जी की 'आल्हा ऊदल' भी है। और, सुन्दर- सुन्दर कविताएं, क्षणिका, लघु- कथाएं और कहानियां भी हैं। जितना बटोर सकते हैं, बटोर लेना चाहिए।

मैं भूल नहीं रही... मेरा आलेख 'गाँवों का शहरीकरण' भी है, अच्छा लिखा है... पढ़ा जाना चाहिए... हा हा हा! आगे की कड़ी में हास्य- व्यंग, जो मुझे बहुत पसन्द आता है, इसमें 'आध्या रेणु' जी की 'रायचंद' को ज़रूर पढ़िए। मज़ा न आया तो पैसे वापसी की गारंटी है। एक और हास्य व्यंग 'क्या मैं पागल हूं' , 'प्रोफेसर शामलाल कौशल' जी की... क्या बात है! अगले पन्ने पर, कई विचार उफनते हुए मिलेंगे ... जैसे, 'संजय सिंह चौहान' की 'लड़के व लड़कियां क्यों बराबर हो?' 'सत्यवान सौरभ' जी का आलेख '....बिन पेड़ों के गाँव' , 'दुबई सपनों का शहर'... 'अर्चना श्रीवास्तव आहना जी' की... बेहद शानदार हैं।

कहानियों में 'रामनगीना मौर्य' जी कहानी 'शास्त्रीय -संगीत'... अपने आप में ही बहुत खूबसूरत संगीत हैं। छोटी सी बच्ची के रोने के बाद उत्पन्न हुई स्तिथि से निपटने के लिए मां बाप क्या क्या उपाय नहीं करते। मांगे और, बिना मांगें सलाह, उपायों की भरी टोकरी को जिस तरह से लिखा गया है उसे दृष्टिगोचर चित्रण स्वत: ही हो जाता है। शास्त्रीय संगीत से सुकून के साथ अवसाद से भी निकलना आसान होता हैं, ये किसी स्वास्थ्यवर्धक से कम नहीं! 'आवरण' 'कृष्ण कुमार यादव जी' की कहानी ने झकझोर कर रख दिया। जाने कब समाज स्त्री-पुरुष के साथ बराबरी न देकर दोयम दर्जे का व्यवहार करता रहेगा। सबकुछ ख़त्म हो जाने के बाद भी स्त्री के पास खोने को कितना कुछ होता है और उसे बचाने के लिए झीना आवरण भी आंखों से बहते पानी को समेट लेना और मजबूत... चेहरे पर खिलती हँसी सबकुछ पहन कर जीना पड़ता है। 'अर्चना

त्यागी जी की कहानी 'ईश्वर सत्य है, बहुत ही खूबसूरत मानवीय संवेदना को उजागर करती हुई कहानी है... वहीं दूसरी ओर एक और कहानी जो मानवीय संवेदना के छिछले गुण को दर्शाती हैं, 'नीलू चोपड़ा' की 'एक थी सुशीला' ... कि इस बात को सही साबित करता हुआ 'अति सर्वत्र वर्ज्यते'... एक सीमा के बाद बहुत अधिक अच्छा होना भी आने वाले बूरे दिनों का संकेत हो सकता है और हर किसी की अच्छाई से प्रभावित होकर उसपर आँख बंद कर के विश्वास करना अपनी अच्छाई का किसी को लाभ उठाने देने जैसा है। 'श्यामल बिहारी महतो' की 'विरासत का पंचनामा' यथार्थ को दर्शाती एक शानदार कहानी है, इसमें आंचलिकता को सुन्दर स्थानीय भाषा में बुना गया है। अधिकतर संवाद सोचने को विवश करते हैं, ग्रामीण पृषभूमि में युवकों का नशे के प्रति आसक्त होना किसी महामारी से कम नहीं... ये सच्चाई है जिसे लेखक ने बड़े ही शानदार ढंग से लिखा है और उसकी पत्नी का हर दूसरी बात का ठिकरा सरकार पर थोप देना... लेखक की तरह मैं भी अचंभित हुई कि बच्चे सरकार की देन हैं और आगे पढ़ने पर उनका नजरिया भी समझा। 'बच्चों की बुआ' रिश्तों के पीछे घुटन भरी चीख जैसी लगी। हालांकि, लेखिका ने इसमें सब ठीक कर दिया, वास्तव में ऐसा कम ही दिखता है। बाकी, लघुकथाएं भी बहुत बढ़िया लगी। सबने बहुत ही बेहतरीन लिखा है। पहल, तृप्त, अपना खून... सब एक से बढ़कर एक।

संपादक जी की बात करें तो उनका चुनाव बहुत ही बढ़िया लगा। लेख , संस्मरण और कहानियों के बाद काव्य मंजूषा का भी खूबसूरत इंद्रधनुषी छटा खिली हुई मिली। '21वीं सदी की बेटी', 'औरतें, वजूद , चांद और बालक, प्रणय के देवता सुनो , ओस और दूब का बहनापा... सारे काव्य सुन्दर हैं। पुस्तक समीक्षा वाले खंड उत्कृष्ट हैं। अच्छे अच्छे लेखकों के साथ समीक्षक को भी पढ़ने का अवसर मिला। सच कहूं तो समीक्षकों को पढ़ने के बाद हमेशा से ही लिखना अधिक आसान लगता है।

और अंत में , तेजसी सिंह की चित्रकारी की तारीफ़ तो बनती ही हैं। आपकी चित्रकारी पहले भी कई बार देख चुकी हूँ , आप वाकई कमाल की कलाकारी करती हैं... शुभकामनाएं आपको!

मीनाक्षी शुक्ला
पूर्णिया (बिहार)

आपकी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका में स्थान पाना निश्चित रूप से मेरे लिए बहुत ही सुखद हर्षानुभूति है । बहुत-बहुत सहृदय आभार एवं अभिनंदन आदरणीया संपादक एवं समस्त संपादन समूह*

विजय कनोजिया
अंबेडकरनगर (उ. प्र.)

बहुत ही सुन्दर अंक बन पड़ा है।मानवी परिवार को साधुवाद एवं बधाइयां। पत्रिका में दिनों दिन आता निखार पत्रिका के गुणवत्ता को दर्शाता है।एक सुझाव तीन चार पेज लोक भाषाओं के लिए रखने की गुंजाइश बैठे तो स्थान देने का प्रयास करना है। विस्तृत पाठकीय प्रतिक्रिया शीघ्र भेजूंगा।
सादर आभार।

कनक किशोर ,
राँची (झरखंड)

आदरणीय संपादक मंडल,
मानवी का यह त्रैमासिक अंक सारगर्भित, रोचक, ज्ञानवर्धक और जानकारियों से परिपूर्ण रहा। इस पत्रिका में डिजिटल नवाचार को भी स्थान देंगे तो यह पत्रिका और भी उपयोगी सिद्ध होगी। आपको साधुवाद।

हेमलता शर्मा भोलिबेन
इंदौर

बहुत ही सुंदर आदरणीय जी सुंदर लेख और रचनाओं से सुशोभित जुलाई अंक। हमारे लेख को स्थान देने के लिए संपादक महोदय का दिल की गहराइयों से बहुत-बहुत आभार,

सीमा रंगा इंद्रा
हरियाणा

बहुत बहुत आभार संपादकीय मंडल को और सभी आदरणीय सदस्यों को बधाईयां,

अर्चना श्रीवास्तव"आहना"
मलेशयया

एक सुंदर अंक कर हार्दिक बधाई ,अदारणीय संपादक महोदय । आपका साहित्या नुराग स्तुत्य है ।

राजपाल सिंह गुलिया
झज्जर (हरियाणा)

रचनाकारों से.....

1 -मानवी त्रैमासिक ई पत्रिका सभी लेखकों/ कवियों/ कथाकारों/ व्यंग्यकारों.....से हिंदी साहित्य की सभी विधाओं यथा लेख/ आलेख/ निबंध/ संस्मरण/ कथा/ कहानी/गीत/नवगीत/ग़ज़ल/कविता/समीक्षा इत्यादि पर स्वलिखित, मौलिक, अप्रकाशित एवं अप्रसारित रचनाएं आमंत्रित करती हैं।

2 -कृपया कविता /गीत /ग़ज़ल आदि रचनाएं दो से अधिक न भेजें। भेजने से पहले वर्तनी त्रुटि सुधार कर उत्कृष्ट रचनाएं manvipatrika@gmail.com पर ही भेजें।

3-रचनाऐं वर्ड फाइल /यूनीकोड में भेंजे। पीडीएफ फाइल स्वीकार्य नहीं है।

4-कृपया माह में पड़ने वाले दिवसों /त्योहारों को ध्यान में रखते हुए अपनी रचनाएं भेजें।

5-कृपया रचना के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, पता, कान्टैक्ट नंबर , एवं छाया चित्र भी भेजें।

6-कृपया रचना के साथ साथ , स्वप्रमाणित भी करें कि प्रेषित रचना , मौलिक, स्वलिखित , अप्रकाशित एवं अप्रसारित हैं, अन्यथा रचनाओं पर विचार संभव नहीं है।

7- एक बार में अपनी एक या दो ही उत्कृष्ट रचनाएं भेजे,और पत्रिका के प्रकाशन का इंतजार करें लगातार रचना भेजने का कोई तात्पर्य नहीं है।

8 -यह एक अव्यवसायिक नि: शुल्क ई पत्रिका है, रचनाकारों को पारिश्रमिक देने का कोई प्रावधान नहीं है।

9-समीक्षा के लिए, पुस्तकों की दो प्रतियां सम्पादकीय पते (बी-701,स्वाति फ्लोरेंस, निकट सोबो सेंटर, साउथ बोपल, अहमदाबाद-380058,गुजरात ,मोबाइल-9833775798) पर भेजें। स्वयं समीक्षा भेजने पर पुस्तक की एक ही प्रति भेजें।

10-रचना प्रकाशन और रचना संशोधन का अधिकार संपादक मंडल का होगा ।संपादक मंडल का निर्णय मान्य अन्तिम एवं बाध्यकर होगा।

नामदेव

माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ।।

हम नहीं होते तुम नहीं होते कवनु कहांते आइआ।।

राम कोई न किसही केरा।।

जैसे तरुवर पंखि बसेरा।।

चंदू न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइया।।

न होता बेदु न होता करमु कहाँ ते आइया।।

खेचर भूचर तुलसीमाला गुर परसादी पाइआ।।

नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ।।

मानवी सेवा संस्था : राष्ट्र और राष्ट्र जन की सेवा में समर्पित

274/x ,शक्तिनगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

http://www.manvipatrika.co.in

(पत्रिका यहाँ से भी पढ़ सकते है)